।। श्री शासनपति महावीराय नमः ।।

।। गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरि गुरुभ्यो नमः ।।

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | अप्रैल-2021

दिव्याशीष-लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. का भांडवपुर महातीर्थ पर पदार्पण

गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. तथा
जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरिश्वरजी मसा.
के सानिध्य में आयोजन भव्य दीक्षोत्सव क्रमशः मेंगलवा तथा पांथेडी में महोत्सव

पूज्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. व
जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के सानिध्य में आयोजित

* दिनांक 25 अप्रेल प्रातः आत्मोद्धार-4, के अंतर्गत बीस मुमुक्षुओं को दीक्षा
* दिनांक 25 अप्रेल दोपहर चातुर्मास घोषणा पर्व (आगामी-चातुर्मास की घोषणा)
उपरोक्त कार्यक्रम पेपराल (थराद) जिला बनासकांठा गुजरात में होगा ।

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
11. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला – जालोर (राज.)
12. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, सरसी, जिला – रतलाम (म.प्र.)
13. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा, म.प्र.)
14. श्री अमराईवाड़ी श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक संघ, बलियावास, अहमदाबाद
15. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्र यतीन्द्र जयन्तसेन वाटिका पिपलौदा (रतलाम) म.प्र.)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

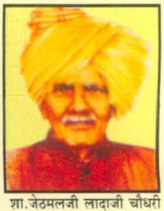

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा
दाधाल

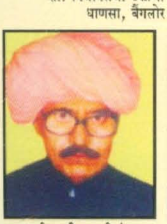

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

हमारे गौरव

3171

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणावाला)

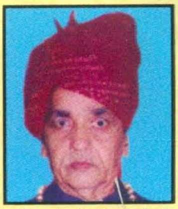
श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

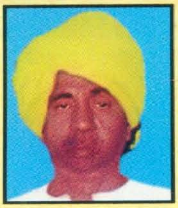
स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

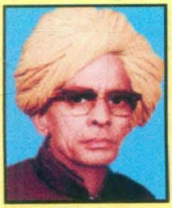
स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

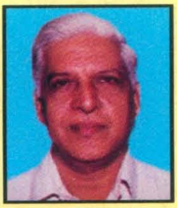
शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

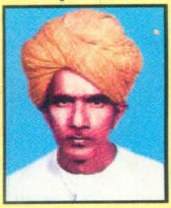
शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

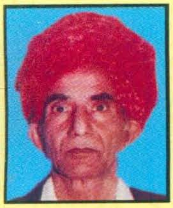
शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

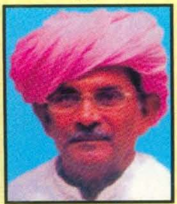
स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा मेंगलवा/मदुराई

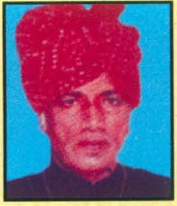
स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी जोधपुर/चैन्नई

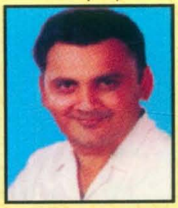
श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

36033

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

स्व.श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा–थलवाड़, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

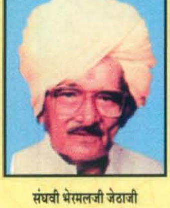
संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

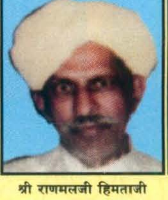
श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

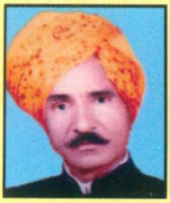
स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

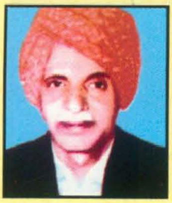
स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाघाल–कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

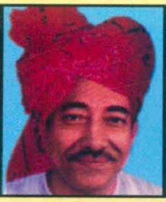
श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

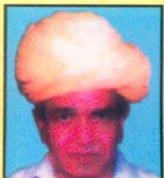
श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

दलाल स्व. श्री बाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेड़ी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

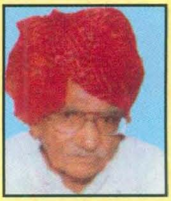
भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

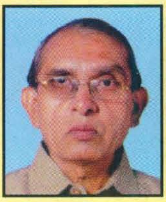
शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी
चैन्नई, मांडवला

शा. निहालचंदजी धुलाजी
कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

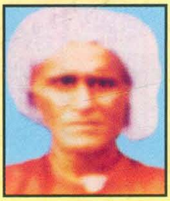
वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

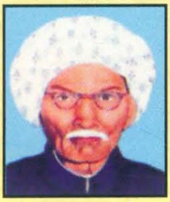
वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

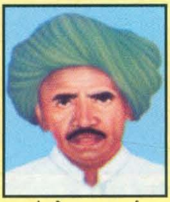
संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

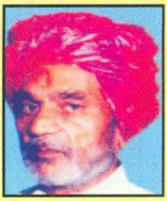
श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई थराद

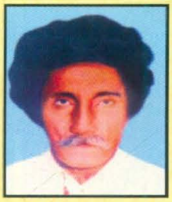
संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

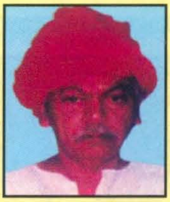
अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी तल्लेरा कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

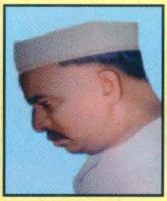
श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

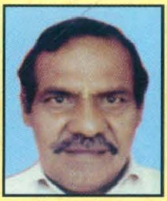
श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लेडगांव

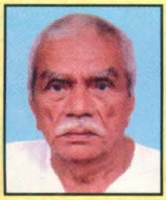
श्री मानसिंहजी राजगढ़

स्व. श्री कालूरामजी औरा टोपीवाले, रतलाम

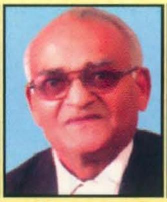
स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय खाचरौद

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी राठौर (बड़नगर)

हमारे गौरव

स्व. श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

स्व.श्री रितेशकुमार
शांतिलालजी डुंगरवाल, इन्दौर

स्व.श्री सागरमल भंडारी
(झाबुआ) इंदौर

स्व.श्रीमती चन्द्रकान्ता
सागरमलजी भंडारी
(झाबुआ) इंदौर

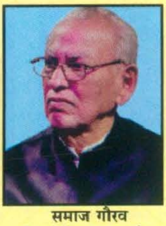

समाज गौरव
श्री शांतिलाल सकलेचा
रानापुर

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी , बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

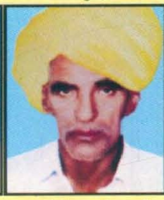

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी , बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

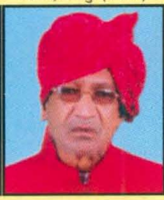

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

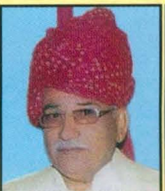

शाह सोहनलाल
मिश्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
शाश्वत धर्म
अप्रेल 2021 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 69 अंक 4
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2077

इस अंक का मूल्य	-	15 रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150 रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600 रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100 रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुधीर लोढ़ा	(महामंत्री)
श्री ओ.सी. जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)
आदि	

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए **सुरेन्द्र लोढ़ा**, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

वासना के आकाश से गिर पड़े

राजकुमार नन्दीषेण तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के शिष्य बनकर संयम मार्ग पर अग्रसर हो गये। उनने साधना कर कई लब्धियां भी प्राप्त कर लीं।

प्रतिदिन भिक्षार्थ राजधानी में भ्रमण करते हुए एक दिन वैश्यालय की ओर चले गये। भूल से एक वैश्या के मकान में जाकर बोले- 'धर्मलाभ !'

वैश्या ने कुटिल हास्य करते हुए उत्तर दिया- 'यहां धर्मलाभ नहीं, धनलाभ को स्थान है। तुम्हारे पास है कुछ या ठनठनपाल ।'

नन्दिषेण मुनि ने वैश्या के व्यंग को चुनौती माना तथा लब्धि का उपयोग कर स्वर्णवर्षा कर दी। वैश्या ने उनका रास्ता रोक लिया तथा कहा- 'अब ! जा नहीं सकते।'

मुनि ने उत्तर दिया- 'मैं ठहर सकता हूं लेकिन एक शर्त- प्रतिदिन दस जीवों को संयम पथ पर अग्रसर कर ही भोजन करूंगा।'

क्रम चला। एक दिन मुनि की प्रेरणा से नौ की संख्या हो गई। दसवां कोई नहीं मिला। मुनि खेद करने लगे। वैश्या ने व्यंग कसा-

'अरे ! नौ हो गये। दसवां नहीं मिला तो आप स्वयं।'

मुनि मानों आकाश से गिर पड़े, नींद से जागृत हो गये। सब कुछ त्याग कर फिर चल दिये संयम मार्ग अपनाने तीर्थंकर श्री महावीर के चरणों में।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रमणिका

1.	आँखों वाला बनता है अंधा अभिमान से (प्रवचन) (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	09
2.	आत्मनिर्भरता और भगवान महावीर (डॉ. दिलीप धींग)	11
3.	मन एवं मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयोः	13
4.	मन पर विजय प्राप्त करें...	16
5.	ध्यान प्रक्रिया से मानसिक व स्वास्थ्य लाभ (मंयक कुमार जैन)	17
6.	चिन्तन का चित्रांकण (गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	20
7.	उत्तम आहार शाकाहार (जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)	21
8.	गणधरवाद (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	22
9.	अध्यक्षी पाती(वाघजीभाई वोरा), अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	24
10.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	25
11.	भारतीय गणतंत्र की धुरी वैशाली (श्री शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)	27
12.	आध्यात्मिक उपलब्धि (अतिथि रचना) (आचार्य श्री विद्यासागरजी म.सा.)	28
13.	प्रश्नोत्तरी	29
14.	सबकी खुशी और सुख चाहते हैं तो ईर्ष्या छोड़िए	30
15.	महाराजा श्रेणिक (मुनिराज डॉ. सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)	31
16.	हम जय जिनेन्द्र क्यों कहते हैं ?	32
17.	श्री नवकार कल्पद्रुम (मुनिराज श्री विद्वद्रत्नविजयजी म.सा.)	33
18.	किस्मत की बात (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	35
19.	मानसिक तनाव से मुक्ति	37
20.	प्रतिक्रमण याद करने के लाभ (डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई)	39
21.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (संशोधक- मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)	40
22.	श्री जयंतसेन जयनाद (मुनि श्री प्रशमसेनविजयजी म.सा.)	41
23.	जिनशासन की वर्णमाला (साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	43
24.	आत्मोद्धार है तो आनन्द है (सुहानी आंचलिया, जावरा)	45
25.	गुजराती संभाग	46
26.	कुमकुम सने पगलिये	62
27.	परिषद प्रांगण से	65
28.	श्री संघ सौरभ	70
29.	जैन विश्व	74
30.	शाश्वत धर्म के संक्षक	75-76

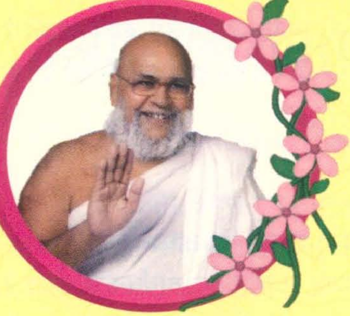

प्रवचन

आंखों वाला बनता है अंधा अभिमान से

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

महानुभावों !

चरम तीर्थंकर महावीर स्वामी अपने अन्तिम उपदेश का प्रारम्भ करते हुए शिष्यों से कह रहे हैं-

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि, आणुव्वि सुणेह मे।।

संयोगों से मुक्त अनगार भिक्षु के लिए मैं विनय का स्वरूप प्रकट करने वाला हूँ। आप क्रमशः मेरी बातें सुनिये।

आत्मा से संयुक्त होने वाली दूसरी कषाय अभिमान के विषय में हम यहाँ चिंतन कर रहे हैं :-

सर्पों का राजा वासुकि नाग अपने दाँत में प्रचुर विष रखने पर भी घमंड नहीं करता, परन्तु बिच्छु के पास एक बूँद विष होता है, फिर भी वह डंक को घमंड से उठाये-उठाये फिरता है।

विषभारसहस्त्रेण, गर्वं नायाति वासुकिः ।
वृश्चिको बिन्दुमात्रेणाप्यूर्ध्वं वहति कण्टकम् ।।

ठाकुर स्वरूपसिंहजी अपने शिष्य राजिया को संबोधित करते हुए एक सोरठे के माध्यम से राजस्थानी भाषा में क्या ही सुंदर ढंग से यही दृष्टांत यों कहते हैंः-

मणिधर विष अणमाव, धारै पण नाणे मगज।
बिच्छु पूँछ बणाव, राखै सिर पर राजिया ।।

पोखर का गँदला जल पीकर भी मेंढक टर्र-टर्र करने लगता है, परन्तु दूसरी ओर मधुर आम के फल खाकर भी तोता घमंड नहीं करता। एक अंगुल गहरे पानी में भी मछली फड़फड़ाती है, परन्तु अथाह असीम जल वाले समुद्र में रहकर भी व्हेल मछली को गर्व नहीं होता। थोथा चना बाजे घना। जो चना थोथा होता है, उसमें से आवाज निकलती है, परन्तु जो चना ठोस होता है, वह आवाज नहीं करता। सोंठ का टुकड़ा भी मिल जाये तो चूहा अपने को पंसारी (जड़ी-बूटी रखने वाला व्यापारी) समझता है, क्योंकि आखिर वह चूहा ही तो है? साधारण व्यक्ति भी इसी प्रकार कहीं से जरा-सी जानकारी प्राप्त हो जाये तो अपने को बड़ा भारी पंडित समझने लगता

है। दूसरी ओर पंडित विनीत हो जाता है, क्योंकि उसकी जानकारी जैसे- जैसे बढ़ने लगती है, वैसे-वैसे वह अपने को अज्ञानी मानने लगता है। एक शायर ने अपनी इस दशा का परिचय देते हुए लिखा है-

हम जानते थे, इल्म से कुछ जानेंगे ।
जाना तो यह जाना कि, न जाना कुछ भी ।।

शास्त्र पढ़कर हम विद्वान बनेंगे- ऐसा मान बैठे थे, परन्तु शास्त्रों का अध्ययन करने के बाद हमने यही समझा कि हम कुछ नहीं जानते, क्योंकि अध्ययन से बुद्धि का तो विकास होता है, परन्तु ज्ञान प्राप्त नहीं होता। ज्ञान तो अपने चिंतन-मनन से प्राप्त होता है, अनुभव से प्राप्त होता है, पुस्तकों से नहीं। पुस्तकों से सहायता मिल सकती है अवश्य, क्योंकि उसमें दूसरे के अनुभव लिखे होते हैं, परन्तु अपना अनुभव ही हमें सच्चा ज्ञानी बना सकता है। सच्चे ज्ञानी में अभिमान नहीं, विनय होता है।

जो व्यक्ति पानी में तैर रहे होते हैं, वे ही बोल सकते हैं, परन्तु जो पानी में डुबकी लगा लेते हैं, वे बोल नहीं सकते। इस प्रकार जो ज्ञान की सतह पर होते हैं, वे ही बड़बड़ाहट करते हैं, बकवास करते हैं, परन्तु गंभीर ज्ञानी मौन रहते हैं। बहुत आवश्यक होने पर ही वे खूब सोच-समझकर बोलते हैं ।

पहले पंडितों में शास्त्रार्थ हुआ करता था। शास्त्रार्थ का मतलब यह होता है कि अमुक शास्त्र वाक्यों का अर्थ मैं ऐसा करता हूँ अथवा अमुक-अमुक शास्त्रीय वाक्य मेरी बात का समर्थन करते हैं, इसीलिए मेरी बात सच्ची है, मानने योग्य है। यही बात विपक्षी पंडित भी कहता था। इस शास्त्रार्थ के मूल में गर्व (अहंकार) होता है-

वादमिच्छन्ति गर्विताः ।

जिसमें गर्व होता है, उसका चिंतन कुछ-कुछ इस प्रकार होता है : जो मेरी तरह सोचता है वही बुद्धिमान है, जिस आदमी के विचार मेरी विचारधारा से मेल नहीं खाते वही मूर्ख है, जिसका आचरण मैं करता हूँ, वही सबके लिए उपादेय कार्य है, आदर्श कर्त्तव्य हैं।

आश्चर्य होता है यह देखकर कि दूसरों के घमंड से नफरत करने वाला स्वयं अपने घमंड को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता। घमंडी दो भूलें एक साथ करता है। अपने को सर्वोत्तम मानना उसकी पहली भूल है और दूसरों को हीन (तुच्छ) समझना उसकी दूसरी भूल है।

अभिमानी कहता है : 'जगत मेरा सेवक है', जबकि विनयवान् यह कहता है : 'मैं जगत का सेवक हूँ।' यही उन दोनों में अंतर है। फटी जेब में धन (रुपये-पैसे) जिस प्रकार सुरक्षित नहीं रहता, उसी प्रकार अभिमानी के मन में विद्या सुरक्षित नहीं रह सकती।

अभिमानी के हृदय में, ज्ञान न करता धाम ।
फटी जेब में क्या कभी, रह सकते हैं दाम ।।

◆◆◆

आत्मनिर्भरता और भगवान महावीर

(डॉ. दिलीप धींग)
निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र

जैन धर्म और श्रमण संस्कृति का गौरवशाली प्रासाद जिन आधारभित्तियों पर खड़ा है, उनमें एक आत्मनिर्भरता भी है। श्रमण का एक अर्थ होता है- श्रमपूर्वक स्वावलम्बी जीवन जीने वाला यानी आत्मनिर्भर। आगम ग्रंथों में श्रमण शब्द की महिमा का पता इससे चलता है कि उसे तीर्थंकरों के साथ भी प्रयुक्त किया गया। जैन श्रमण-श्रमणियों का जीवन आत्मनिर्भरता का जीवन्त रूप होता है। जैन दर्शन का वस्तु स्वातंत्र्य का सिद्धान्त आत्मनिर्भरता की सत्ता व महत्ता का सूक्ष्म विश्लेषण करता है। तीर्थंकरों के जीवन का हर कदम और आगम-साहित्य का हर पृष्ठ आत्मनिर्भरता, आत्म-पुरुषार्थ और स्वावलम्बन की प्रेरणा व सन्देश देता है।

अभिनिष्क्रमण के बाद भगवान महावीर कमारग्राम के समीप वनखण्ड में ध्यान में स्थिर थे, उस समय साधनाकाल का पहला उपसर्ग ग्वाले ने उपस्थित किया। तब देवराज इन्द्र ने प्रभु के समक्ष आकर निवेदन किया- 'प्रभु लोग अज्ञानी और मूढ़ हैं, आपको साधनाकाल में अनेक कष्टों का सामना करना पड़ेगा, मुझे आज्ञा प्रदान कीजिये कि साधनाकाल में मैं आपके कष्ट-निवारण किया करूँ।'

महाश्रमण महावीर ने इन्द्र की प्रार्थना का उत्तर देते हुए कहा- 'देवराज ! आत्मसाधक के जीवन में आज तक न कभी ऐसा हुआ, न होता है और न भविष्य में होगा कि आत्मसिद्धि किसी दूसरे के बल पर या परनिर्भरता से प्राप्त की जा सके।'

भगवान महावीर के इस उत्तर में सम्पूर्ण जैन धर्म, दर्शन व संस्कृति का सार समाया हुआ है। साधक का आदर्श है, वह अकेला पुरुषार्थ से चलता रहे- एगोचरे खगविसाकप्पे । **'महावीर चरियं'** में नेमिचन्द्र लिखते हैं। **करिसंगट्ठे सीहो, अहिलसइ किमन्न साहेज्जं ?** अर्थात् विराट्काय हाथियों से घिर जाने पर भी सिंह कभी दूसरों के सहयोग की अपेक्षा नहीं करता है।

साधनाकाल में भगवान महावीर को क्षणभर के लिए निंद्रा आ गई थी। उस दौरान उन्होंने जो दस स्वप्न देखें, उनमें चार स्वप्न पुरुषार्थ और आत्मनिर्भरता की प्रबल प्रेरणा देते हैं-

1. मैं एक भयंकर ताड़-सदृश पिशाच को परास्त कर रहा हूँ। (स्वप्न संख्या-1)

2. मैं तरंगाकुल महासमुद्र को अपने हाथों से तैरकर पार कर रहा हूँ। (स्वप्न संख्या-7)

3. मैं अपनी वैडूर्य वर्ण आँतों से मानुषोत्तर पर्वत को आवेष्टित कर रहा हूँ। (स्वप्न संख्या-9)

4. मैं मेरू पर्वत पर चढ़ रहा हूँ। (स्वप्न संख्या-10)

भाग्यवाद और नियतिवाद के अतिशय प्रचार से जब भारतीय चेतना में एक जड़ता-सी आ गई थी, ऐसे समय में जैन धर्म के पुरुषार्थवाद ने मानव के बाह्य और आन्तरिक जीवन में खुशियाँ लौटाई। आज बेरोजगारी के भयावह संकट के दौर में पुरुषार्थवाद समाधान देता है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान ऋषभदेव ने असि, मसि, कृषि तथा विद्या, वाणिज्य और शिल्प का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया था। जैन जीवन शैली में आत्मनिर्भरता के सूत्र भरे पड़े हैं। सार रूप में चार सूत्रों की यहाँ चर्चा की जा रही है-

1. पुरुषार्थ : यह आत्मनिर्भरता का प्रधान सूत्र है। पुरुषार्थ हमें निष्ठावान और कर्तव्यपरायण बनाता है। कार्य कोई छोटा या बड़ा नहीं होता , वह अच्छा या बुरा हो सकता है। छोटे से छोटा अच्छा कार्य करने में भी हमें संकोच नहीं करना चाहिये। पुरुषार्थ के क्षितिज पर ही सिद्धि का सूरज उगता है। जो पुरुषार्थ नहीं करता उसका भाग्य भी सो जाता है।

2. अयाचक भाव : आत्मनिर्भरता के लिए आवश्यक है कि मानव अपने मन में दीनता और हीनता नहीं पैदा होने दे। वह अपनी शक्तियों व क्षमताओं को पहचाने और आत्मविश्वास से आगे बढ़े। जैन धर्म के मुख्य श्रद्धा-सूत्र णमोकार महामंत्र में भी पंच परमेष्ठी को वन्दन-नमस्कार है, कहीं कोई याचना नहीं है।

3. व्यसन – मुक्ति : व्यसन व्यक्ति को शक्तिहीन कर देते हैं। वे व्यक्ति की स्वतन्त्रता छीन कर उसे पराधीन बना देते हैं। जैनों की सम्पन्नता की एक वजह उनका व्यसन-मुक्त होना है। आत्मनिर्भरता की दिशा में व्यसन-मुक्ति एक ऐसा स्वर्ण-सूत्र है कि इससे केवल व्यक्ति ही नहीं, वरन् समुदाय और राष्ट्र भी आत्मनिर्भर बनते हैं।

4. संयमित जीवन : संयमः खलु जीवनम्(संयम ही जीवन है), इस सूत्र के अनुसार आज इस चेतना को जगाना महत्वपूर्ण है कि हम कम से कम में कितना काम चला सकते हैं। संयमित जीवन जीने वाला परिस्थितियों के पराधीन नहीं होता है। वह धन, स्वास्थ्य और जीवन की प्राण-ऊर्जा की बचत करता है। संयम और अपरिग्रह सहसम्बन्धित है और अपरिग्रह आत्मनिर्भरता का ही एक सूत्र है।

ये आत्मनिर्भरता के ऐसे प्रभावी सूत्र हैं, जो मानव को भीतर और बाहर दोनों स्तरों पर स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। श्रम, संयम और अहिंसा की यह जीवनशैली व्यक्ति एवं समाज को अधिक समर्थ, स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम हैं।

7, Ayya Mudali Street,
Sowcarpet, Chennai-600001

◆◆◆

मन एवं मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयोः

मन सर्वशक्तिमान, सर्वगत और परमात्मा का एक कल्पनात्मक स्वरूप है। मन का परमात्मा के साथ घनिष्ठ संबंध है। मन और ब्रह्म दो भिन्न वस्तुएं नहीं हैं। ब्रह्म ही मन का आकार, धारण करता है। अतः मन अनंत और अपार शक्तियों का स्वामी है। मन स्वयं पुरुष एवं जगत का रचयिता है। मन के अंदर का संकल्प ही बाह्य जगत में नवीन आकार ग्रहण करता है, जो कल्पना चित्र अंदर उदय होता है, वही बाहर स्थूल रूप में प्रकट होता है।

मन का स्वभाव संकल्प है। मन के संकल्प के अनुरूप ही जगत का निर्माण होता है। वह जैसा सोचता है, वैसा ही होता है। मन जगत का सुप्त बीज है। संकल्प द्वारा उसे जाग्रत किया जाता है। यही बीज पहाड़ समुद्र, पृथ्वी और नदियों से युक्त संसाररूपी वृक्ष को उत्पन्न करता है। मन ही जगत का उत्पादक है। सत्, असत् एवं सदसत् आदि मन के संकल्प हैं। जाग्रत, स्वप्न और भ्रम आदि सभी अवस्थाएँ मन के रूपांतर हैं। देश और काल का विस्तार व क्रम भी मन के नियंत्रण में है। मन ही लघु को विभु और विभु को लघु में परिवर्तित करता रहता है।

मन में सृजन की अपार संभावनाएं सन्निहित हैं। मन स्वयं ही स्वतंत्रतापूर्वक शरीर की रचना करता है। देहभाव को धारण करके वह जगत रूपी इंद्रजाल बुनता है। प्रत्येक मन का संसार भिन्न एवं अद्भुत होता है। मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। इस निर्माण प्रक्रिया में मन का महत्वपूर्ण योगदान है। मन का चिंतन ही उसका परिणाम है। यह जैसा सोचता है और प्रयत्न करता है वैसा ही उसका फल मिलता है।

मन के चिंतन पर ही संसार के सभी पदार्थों का स्वरूप निर्भर करता है। जिस वस्तु का जिस भाव से चिंतन किया जाता है, वह वस्तु उसी प्रकार से अनुभव में आने लगती है। सतत चिंतन से असत्य पदार्थ भी सत्य प्रतीत होने लगता है एवं विष भी अमृत बन जाता है। शत्रु एवं मित्र का भाव चिंतन पर आधारित है। मित्र-बुद्धि से शत्रु मित्र बन जाता है एवं शत्रु-बुद्धि से मित्र शत्रु हो जाता है । दुःख - सुख और खट्टा-मीठा सभी मन की कल्पनाएं हैं। जैसा हमारा होता है वैसा ही हमारा जगत् ।

मन दृढ़ भावना के साथ जैसी कल्पना करता है, उसको उसी रूप में उतने ही समय तक और उसी प्रकार का फल अनुभव होता है। अतः इस जगत की वस्तु न

सत्य है और न असत्य। जिसने जिसको जैसा समझा, उसे वह वैसा ही दिखाई पड़ता है। मन में उपजे विचार ही वासनाओं और क्रियाओं के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। इस तरह व्यक्ति अपने विचारों के संसार में निमग्न हो जाता है, क्योंकि उसी के अनुरूप उसको आस्वादन मिलता है। प्रत्येक वस्तु को वह अपने मन के अनुसार देखता है।

दृढ़ निश्चयी मन का संकल्प बड़ा बलवान होता है। वह जिस विचार में स्थिर हो जाता है, परिस्थितियां वैसी ही विनिर्मित होने लगती हैं। स्वयं में न तो नीम कडुआ है और न गुड़ मीठा, न अग्नि गरम और न चन्द्रमा शीतल। मन जिसमें रमा वही उसका गुण प्रतीत होता है। बुरी-से-बुरी चीज एवं परिस्थितियों में भी वह आनंद उठा सकता है और अच्छी-से-अच्छी परिस्थिति में भी कष्ट एवं बेचैनी का अनुभव कर सकता है। शुद्ध एवं पवित्र मन की परिणति तत्काल एवं तत्क्षण होती है।

शुद्ध मन का आकार एवं स्वरूप प्रखर एवं प्रभावपूर्ण होता है। सतत् अभ्यास द्वारा मन को शक्तिशाली बनाना संभव है। उसके लिये कुछ भी असंभव नहीं है। अपने संकल्प बल द्वारा असंभव को संभव कर दिखाता है। ऐसा मन शरीर के नष्ट होने पर भी अपना अस्तित्व बनाए रखता है। इसका निश्चय हिमालय के समान अटल एवं समुद्र जैसा गंभीर होता है। सफलता इसकी दासी के समान है। निश्चित रूप से समस्त जड़ और चेतन मन के अधीन है। मन ही बंधन और मोक्ष का कारण है।

मन के होने के कारण ही हम मनुष्य कहलाते हैं। यही सुख और दुःख की रचना करता है। यही सुख एवं ऐश्वर्य के साधन जुटाता है और यही भीषण दुःखों को आमंत्रण देता है। मन के अनुरूप ही मनुष्य होता है। शुभ-अशुभ कर्मों का कारण भी यही है। मन को साध लेने पर सभी सध जाता है। साधना का मूल यह मन ही है।

दृश्य जगत इसकी इच्छाओं का मात्र छायाचित्र है। इच्छाओं के अवसान होते ही यह तिरोहित हो जाता है। मन द्वारा रचा हुआ यह एक महान स्वप्न है। यह विभिन्न प्रकार के अगणित पदार्थों वाला, तत्वरहित संसार संकल्पनात्मक मन के कर्म द्वारा सृजित सृजन है। रेशम के कीड़े के समान मन अपनी वासना पूर्ति हेतु देह का निर्माण करता है। कुम्हार के घड़े के समान इसे गढ़ता है। हाड़मांस की यह देह कुछ नहीं है, बल्कि मन की कल्पना द्वारा खड़ी की गई एक संरचना है। देह क्या है? यह पूर्वकाल की, अभ्यास द्वारा विनिर्मित वासनाओं की एक आवृत्ति है। देहभाव से मन को देहत्व का बोध होता है। इससे परे हो जाने पर मन देहभाव से मुक्त हो जाता है। फिर न तो

कष्ट-कठिनाइयों का अनुभव होता है और न इसकी समस्या ही होती है। योगी अपने संकल्प बल द्वारा मन को परिपक्व कर लेते हैं। उनका सूक्ष्म शरीर विकसित हो जाता है। वे असाधारण शक्तियों एवं चमत्कारों के स्वामी बन जाते हैं। शारीरिक रोगों का कारण भी मन ही है। मन को शुद्ध एवं पवित्र कर शरीर को निरोग एवं स्वस्थ किया जा सकता है। मन की पवित्रता से वासना भी उच्च कोटि की बन जाती है। दुःख के दो कारण हैं, आधि और व्याधि। शारीरिक दुःखों का नाम व्याधि है और मानसिक दुःखों को आधि कहते हैं। अज्ञानजनित मन अपने वश में नहीं होता। इससे मन में वासनाएं उठती हैं। इनकी पूर्ति हेतु मानव बुरे कर्म में लिप्त हो जाता है। वह अनुचित कर्म करता है, अखाद्य भक्षण करता है, कुसंग में पड़ जाता है और अपने मन में कुविचारों का पोषण देने लगता है। इस प्रकार शारीरिक नस-नाड़ियां ठीक-ठीक काम करना बंद कर देती हैं। इनमें व्यक्तिक्रम आने लगता है। प्राण का संचार अस्त-व्यस्त हो जाता है और मनुष्य कमजोर एवं अशक्त पड़ने लगता है। पाचन श्वसन, परिसंचरण आदि तंत्र बुरी तरह से प्रभावित होने लगते हैं। परिणाम स्वरूप मनुष्य आधि-व्याधि से जर्जर हो जाता है।

मनः संस्थान को स्वस्थ एवं पुष्ट करके ही इसका निराकरण संभव है। श्रेष्ठ चिंतन से मन निर्मल होने लगता है। इसके लिये मन को सदा स्वाध्याय एवं सद्‌चिंतन में लगाए रखना चाहिये। मन को साध लेने पर वह वरदान बन जाता है। मन एक देहरी पर खड़ा नीचे दृश्य जगत की ओर झांक सकता है और ऊपर चेतना के उच्चस्तरीय आयामों की गति कर सकता है। अच्छा यही है कि सतत साधना से हम इसे उच्चस्तरीय आयामों की ओर प्रेरित करें। ◆◆◆

सुदर्शन सेठ

सुदर्शन सेठ के पिता का नाम अर्हदास था और माता का नाम अर्हदासी था। सुदर्शन सेठ बारव्रतधारी श्रावक था। एक दिन वो पौषधव्रत लेकर ध्यान में खड़े थे। तब राजरानी अभया की आज्ञा से दासी उन्हें राजमहल में बुलाती है। उनका ध्यान भंग करने का अनेक प्रयत्न करती है अभया हर तरह से कोशिश करके भी निष्फल होती है तब अभया अपने शीलभंग का आरोप लगाती है। उन्हें राजा सूली पर चढ़ाने का आदेश देते हैं, परन्तु उनके शील के प्रभाव से सूली का सिंहासन बनता है। तब उनकी जय जयकार होती है। बाद में वैराग्य पाकर उन्होंने दीक्ष ग्रहन की।

मन पर विजय प्राप्त करें...

आज कुछ धर्मगुरु मन को खुला छोड़ने की वकालत करते दिखाई देते हैं। किन्तु मन को खुला छोड़ना, मन की चंचलता मिटाने का समाधान कभी नहीं बन सकता है। यद्यपि मन को दबाना भी सही नहीं है, किन्तु मन को खुला छोड़ना भी उचित नहीं कहा जा सकता। न दुःखदायी वह तब होता है जब उस पर निग्रह होता है, जब हम उसके मालिक होते हैं, तब मन हमारा गुलाम होता है।

अभी यह मन समस्या इसलिए बना हुआ है कि वह हमारा मालिक बना हुआ है। होना चाहिए था हमें उसका मालिक, किन्तु बना हुआ है वह हमारा मालिक। सारी समस्याओं का उपादान यही है। समझना यह है कि हमारी जीवन संरचना में बुद्धि, मन, इन्द्रियां ये मालिक नहीं हैं। मालिक है चेतन। मालिक है आत्मा। बुद्धि, मन, इन्द्रियां ये उस चेतन के दास हैं, नौकर हैं। किन्तु आज जिस भूमिका पर हम खड़े हैं, उसमें सबकुछ उल्टा चल रहा है। नौकर मालिक बने हुए हैं और मालिक नौकर। चेतन के अनुशासन में मन, बुद्धि, इन्द्रियां नहीं हैं। बल्कि बुद्धि, मन, इन्द्रियों के अनुशासन में चेतन है। मालिक पर नौकर जब हावी हो जाए, उस मालिक का क्या हाल हो जाता है। उस स्थिति में मालिक को अगर मकान में रहना है तो नौकरों का नौकर बनकर ही रहना होगा। आज हमारा चेतन भी, बुद्धि, मन और इन्द्रियां जो मूलतः उसके नौकर हैं, उनका नौकर बनकर रह रहा है। जो आत्मा चाहती है, बुद्धि, मन और इन्द्रियां वैसा नहीं करते। जैसा ये चाहते हैं, आत्मा को वैसा करना पड़ता है। इसी का नाम है मन और इन्द्रियों की गुलामी और गुलाम को सुख होता ही कहा है- पराधीन सपनेहु सुख नांही।

मन चेतन का गुलाम कैसे हो, मन पर विजय प्राप्त कैसे हो, इसी प्रश्न का उत्तर है, अभ्यास और वैराग्य, धर्म-शिक्षा-ज्ञान और विवेक । जब भी मन का घोड़ा बेलगाम हो के दौड़े, हम उस पर ज्ञान की लगाम लगाएं, विवेक का चाबुक लगाएं। इस निरंतर अभ्यास से मन का निग्रह हो सकेगा।

◆◆◆

ध्यान प्रक्रिया से मानसिक व स्वास्थ लाभ

(श्री मयंक कुमार जैन)

आदिकाल से आध्यात्मिक मार्ग के अनुसरण के लिए ध्यान प्रक्रिया के द्वारा ही मनुष्य को अपार शक्ति ऊर्जा प्राप्त होती रही साथ ही भौतिक जगत से मुक्ति का साधन भी मिलता रहा! भारतीय संस्कृति में वेद और पुराणों में ऋषियों के द्वारा आसन प्राणायाम और ध्यान की प्रक्रिया के द्वारा स्वस्थ जीवन प्राप्त होता था यह असाधारण क्रियाएं जो आज भी वही परंपरा गुरु शिष्य के माध्यम द्वारा चली आ रही है ध्यान की तरफ लोगों का रुझान काफी बढ़ गया है योग के 8 स्तरों यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि में से भी ध्यान को सबसे ज्यादा लोकप्रिय माननीय और तुरंत फायदा पहुंचाने वाला माना जाता है।

लोग सदियों से ध्यान अभ्यास को अपने जीवन में डालते रहे हैं आज जबकि लोगों को इसके नए और विविध लाभ पता चलते जा रहे हैं तो इसकी प्रसिद्धि में भी बढ़ोतरी हो रही है यह तो सिद्ध हो चुका है कि ध्यान अभ्यास हमारे शरीर और मन दोनों को लाभ पहुंचाता है। परन्तु आज लोग इसके 1 अतिरिक्त लाभ के बारे में जान रहे हैं- हमारी आत्मा को ध्यान अभ्यास से मिलने वाला अवर्णनीय लाभ !

ध्यान के विविध लाभ है- **1.** समस्त शारीरिक व्याधियों का पूर्णतया उपचार संभव हो जाता है। **2.** स्मरण शक्ति का विकास होता है। **3.** अनुपयोगी आदतें स्वयंमेव समाप्त हो जाती हैं। **4.** मन सदैव शांत व प्रसन्न रहता है। **5.** हम सभी कार्य अधिक कुशलतापूर्वक कर पाते हैं।

जीवन का बेहतर समझ में आने लगता है और स्वास्थ्य हानियां समस्त शारीरिक व्याधियों, मानसिक चिंताओं के फलस्वरूप जन्म लेती हैं सभी मानसिक चिंताएं बौद्धिक पतन के कारण होती है यह बौद्धिक आध्यात्मिक ऊर्जा व समझदारी की कमी के कारण पैदा होती हैं। रोग मूल्य तो हमारे पूर्व जन्मों के ऋणआत्मक अथवा नकारात्मक कर्मों के कारण पैदा होते हैं। जब तक नकारात्मक कर्म निष्प्रभाव नहीं हो जाते यह भी हमें छोड़कर नहीं जाते इन कर्मों के निराकरण के लिए कोई भी दवा काम नहीं करती। ध्यान के द्वारा हम प्रचुर मात्रा में आध्यात्मिक ऊर्जा व समझदारी प्राप्त कर लेते हैं तब हमारी बुद्धि भी परिपक्व होने लगती है धीरे-धीरे सभी

मानसिक चिंताएं समाप्त हो जाती हैं और सभी व्याधियां भी अदृश्य होने लगती हैं ध्यान ही सभी रोगों के उपचार का एकमात्र उपाय ध्यान है। सभी रोगों का निराकरण करने में लाभदायक है। स्मरण शक्ति में बढ़ोतरी-ध्यान द्वारा प्राप्त प्रचुर मात्रा में आध्यात्मिक ऊर्जा हमारे मस्तिष्क को अधिक कुशलतापूर्वक काम करने में मदद करती है। हमारा मस्तिष्क अपनी अधिकतम क्षमता के साथ काम कर पाता है ध्यान द्वारा स्मरण शक्ति में अतिशय वृद्धि होती है, विद्यार्थियों के लिए तो ध्यान बहुत ही जरूरी है चाहे वे स्कूल के विद्यार्थी हों या विश्वविद्यालय के अनुपयोगी आदतों का अंत- हम सभी में कोई ना कोई बेकार आदत होती ही है जैसे आवश्यकता से अधिक खाना, सोना अथवा बातें करना, मदिरापान आदि ध्यान द्वारा प्राप्त आध्यात्मिक ऊर्जा व समझदारी के कारण यह सभी बेकार आदतें स्वाभाविक रूप से खुद ही मरण को प्राप्त हो जाती हैं आनंद आयुक्त मन-जीवन में सभी को कभी ना कभी पराजय अपमान व पीड़ा का अनुभव होता ही है। आध्यात्मिक ऊर्जा व ज्ञान से समृद्ध व्यक्ति का जीवन हमेशा शांति में और आनंद में रहता है।

कार्यकुशलता में बढ़ोतरी, आध्यात्मिक ऊर्जा व भरपुर आध्यात्मिक ज्ञान होने के कारण व्यक्ति अपने सभी काम चाहे वे शारीरिक अथवा मानसिक हों कुशलता पूर्वक दक्षता के साथ कर पाता है ! नींद के लिए कम समय की आवश्यकता-ध्यान के द्वारा प्रचुर मात्रा में आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त होती है जबकि नींद द्वारा हमें उसका एक छोटा सा अंश ही मिल पाता है आधा घंटा यदि गहन ध्यान किया जाए तो उससे मिलने वाली ऊर्जा 6 घंटे की गहरी नींद से प्राप्त होने वाली ऊर्जा के बराबर होती है।

इससे शरीर को उतना ही विश्राम व मन को उतनी ही शक्ति मिल पाती है,

गुणात्मक संबंध-आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का अभाव ही ऐसा एकमात्र कारण है जिसके फल स्वरूप हमारे परस्परिक संबंध इतने अधिक या गुणात्मक रहित हो जाते हैं विचार शक्ति विचारों को अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है अशांत मन में उठे विचारों में शक्ति होती ही नहीं, इसलिए वे लक्ष्य तक पहुंच नहीं पाते। जिस समय मन शांत अवस्था में होता है विचार भी शक्ति पा लेते हैं और हमारे सभी संकल्प तुरंत साकार हो जाते हैं !

ध्यान तब करने वाले साधक को कैसे आश्चर्यजनक लाभ मिल सकते हैं -

1. दिल से संबंधी बीमारियों से जूझ रहे लोगों के लिए नियमित ध्यान बेहद

मददगार साबित होता है!

2. ध्यान से मानसिक चंचलता और अस्थिरता पर नियंत्रण आता है !

3. मानसिक तनाव चिंता, भय, हीन-भावना से छुटकारा मिलता है !

4. कमजोर दिमाग और भूलने की समस्या से मुक्ति मिलती है !

5. गुस्सा करने की आदत धीरे-धीरे काबू में आ जाती है। पूरे दिन अच्छा और सकारात्मक माहौल मन में बना रहता है।

6. लगातार लंबे समय तक ध्यान साधना करने से व्यक्ति में कुछ असामान्य शक्तियां, क्षमताएं आने लगती हैं जैसे भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का पूर्व ज्ञान, किसी के मन की बात जान लेना इत्यादि !

डॉक्टर हमें बताते हैं कि तनाव हमारे शारीरिक स्वास्थ्य पर बहुत हानिकारक प्रभाव डालता है। ध्यान अभ्यास करने से हमारा शरीर पूरी तरह से शांत हो जाता है और हमारा समस्त तनाव दूर हो जाता है। परीक्षण बताते हैं कि ध्यान अभ्यास के द्वारा हमारी दिमागी तरंगे धीमी होकर 4 से 10 हर्टज पर कार्य करने लगती हैं, इस प्रकार हमें पूरी तरह से शांत होने का एहसास मिलता है। इससे हमारे शरीर को भी अनेक लाभ मिलते हैं जैसे कि बेहतर नींद का आना, रक्तचाप में कमी आना, रोग प्रतिरोधक क्षमता और पाचन प्रणाली में सुधार आना तथा दर्द के अहसास में कमी आना, ज्योति ध्यान, अभ्यास और सब ध्यान अभ्यास करने से यह सभी लाभ हमें अपने आप ही प्राप्त हो जाते हैं !

दिनभर हमारे मन में विचार चलते रहते हैं जब हम ध्यान अभ्यास करने के लिए बैठते हैं और अपने ध्यान को आत्मा की बैठक या तीसरे बिन्दु पर एकाग्र करते हैं तो हमारा मन शांत होने लगता है। हमारा ध्यान बाहरी दुनिया की समस्याओं से हट जाता है और हम पूर्ण रूप से शांत हो जाते हैं नियमित रूप से ध्यान अभ्यास करने से हमारी एकाग्रता बढ़ती चली जाती है, एकाग्र होने की क्षमता में बढ़ोत्तरी तथा साथ ही तनाव में कमी, ऊर्जा में वृद्धि और रिश्तों में सुधार आने से हम सांसारिक कार्यों में भी सफलता प्राप्त कर लेते हैं। हम पहले से अधिक कार्य कुशल और उत्पादक हो जाते हैं तथा जीवन की चुनौतियों का सामना पहले से बेहतर ढंग से कर पाते हैं, इसीलिए हमारे जीवन में ध्यान अत्यंत उपयोगी ही है और हमें अपने जीवन में एक क्षण ध्यान के लिए अवश्य निकालना ही परम आवश्यक है।

- मयंक कुमार जैन, प्रवक्ता
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,
मंगलायतन विश्वविद्याल, अलीगढ़

चिन्तन का चित्रांकण

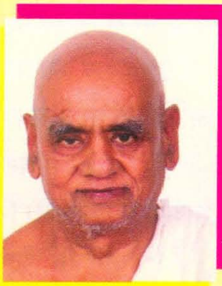

गच्छाधिपति धर्म दिवाकर
श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.
की डायरी के पृष्ठ

दिनांक 18.04.2016

हर क्षण संवेग भाग का आविष्कार होना चाहिए। जिससे असार संसार से विरक्ति भाव जागृत होंगे। तब संसार राग का त्याग भाव आयेगा। वैराग्य प्रगटेगा वैराग्य प्रिय संवेगप्रिय आत्म तत्व की राह संयम पदगामी आत्मश्रेय में नित्य गति करेगा। हमें चाहिये कि हम सभी जीवन में हर पल में संवेग प्रिय बनकर जीयें।

दिनांक 19.04.2016

आसक्ति में अन्ध बना जीव अनन्त संसार यात्रा को बढ़ाता है। आसक्ति भी है और छल, कपट करके निजस्वार्थ पूर्त्ति की प्रवृत्ति का प्रवाह शुरू रखे और मुँह से बोले मैं तो कुछ नहीं करता ये ही सबसे बड़ा छल है, कपट है। ऐसी वृत्ति वाले जीव की मुक्ति कभी नहीं होती। अनासक्त भाव रखकर जीव को आसक्ति से मुक्त रहना चाहिए।

दिनांक 20.04.2016

तीर्थंकर प्रभु का जन्म, गुरुदेव का जन्म महापुरुषों का जन्मदिन शुभ माना गया है। जन्मदिन में शुभ कार्य करने के लिये किसी मुहूर्त्त की आवश्यकता नहीं होती है। बिना मुहूर्त्त के भी यह दिन शुभ मुहूर्त्त माने जाते हैं। कल्याणक दिन कल्याणकारी कहे गये हैं। गुरु के प्रति सच्ची आस्था है तो गुरु आज्ञा के अनुसार काली अमावस्या भी आज्ञापालक के लिये श्रेष्ठ दिवस होता है।

दिनांक 21.04.2016

सड़क, पगदण्डी, गिट्टी रोड, कच्चा रेतीला ये सभी मार्ग चलने के लिये हैं, साथ ही सभी मार्गों में अन्तर भी है। संसार मार्ग कर्म मार्ग है, त्याग मार्ग राज मार्ग है। राज मार्ग शत प्रतिशत धर्म मार्ग है जो जीव को अनन्त संसार से छुड़ाकर सीधा मोक्ष तक ले जाता है। कर्म मार्ग संसार राग का जो गिट्टी, कंकर, कांटे, रेत से भरे हुए उतार-चढ़ाव ये मार्ग जीव को घुमाते रहते हैं और सही मार्ग से भ्रमित कर देते हैं। सोचे हमें किस मार्ग पर चलना है।

◆◆◆

उत्तम आहार - शाकाहार-38

मांसाहार - घातक बीमारी का घर

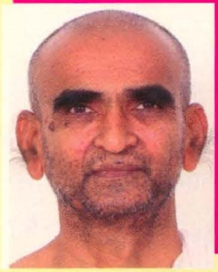

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

भारत एक कृषि प्रधान देश। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में गाय, बैल, भारत के सर्वोपरी रहे हैं तथा किसानों के सहारे रहे हैं। इसी व्यवस्था के चलते भारत सोने की चिड़िया बन सका था। किसान खेत में हल चलाकर बड़ी मेहनत से अन्न उगाते हैं तथा हरी सब्जियाँ और फल की पैदावार करते हैं।

हरी सब्जियों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इसलिए प्रत्येक नागरिक को मांसाहारी की बजाय शाकाहारी चीजों का सेवन करना चाहिए। पहले आदिमानव हुआ करते थे जो अपना भोजन कंदमूल, फल और जानवरों को मारकर खाते थे। लेकिन मांसाहारी की बजाय लोगों को शाकाहारी रहना चाहिए। जिससे कि किसी भी बिमारी का खतरा बढ़ न सके।

आज के युग में बहुत सी चीजे ऐसी हैं जो खाने के लिए अनुचित हैं फिर भी लोग खा रहे हैं। मांसाहारी के लिए जीवों को मारना पड़ता है जो मारकर पाप के भागीदार बन रहे हैं। वैज्ञानिकों के रिचर्स के अनुसार जो लोग मांस खाते हैं या मांसाहारी हैं उनके शरीर में लगभग 80 प्रतिशत केंसर होने का खतरा बढ़ जाता है और उनमें अटैक आने की संभावना भी रहती है। बहुत से लोग गुटखा, पान का सेवन करते हैं। पूरे दिन मुँह में चीजें रहने से मुँह में सड़न की स्थिति बन जाती है। मुँह से लेकर आंत तक बिमारी उत्पन्न हो जाती है इसलिए लोगों को शाकाहारी रहना चाहिए।

भारत ऋषि मुनि का भी देश रहा है। ऋषि मुनि दिन में एक बार खाना खाते हैं इंसान दो दफा तथा जानवर पूरा दिन चरते रहते हैं। इंसानों को दिन में दो बार खाना खाना चाहिए तथा रात्रि भोजन सुर्यास्त से सुर्योदय तक नहीं करना चाहिए।

◆◆◆

प्रवचनकार

गणधरवाद

(स्व. मनीषी लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

मंडित– देह में परिस्पन्द है, अतः देह को सक्रिय मानना चाहिए, आत्मा को नहीं।

महावीर– देह परिस्पन्द में आत्मा का प्रयत्न कारण है, इसलिए आत्मा को सक्रिय माना गया है।

मंडित– किन्तु प्रयत्न यह तो क्रिया नहीं है, अतः प्रयत्न के कारण आत्मा को सक्रिय नहीं कहा जा सकता।

महावीर– भले ही प्रयत्न क्रिया न हो, लेकिन जो आकाश की तरह निष्क्रिय हो, उसमें प्रयत्न भी संभव नहीं। इसलिए आत्मा को सक्रिय मानना चाहिए तथा वस्तुतः प्रयत्न भी क्रिया ही है और मान लो, वह क्रिया नहीं है, तो फिर अमूर्त ऐसा प्रयत्न देह के परिस्पन्द में किस हेतु से बनता है? यह बताना चाहिए।

मंडित– प्रयत्न को दूसरे किसी हेतु की अपेक्षा नहीं है, वह स्वतः ही देह परिस्पन्द में निमित्त बनता है।

महावीर– तो फिर स्वतः आत्मा से ही देह परिस्पन्द होता है, ऐसा मानो। व्यर्थ ऐसे प्रयत्न को किसलिए मानना ?

मंडित– देह परिस्पन्द में किसी अदृष्ट को ही कारण मानना चाहिए। आत्मा तो निष्क्रिय होने से कारण बन नहीं सकती।

महावीर– वह अदृष्ट कारण मूर्त है या अमूर्त ? यदि अमूर्त हो, तो फिर आत्मा स्वयं ही किसलिए देह परिस्पन्द का कारण हो? आत्मा भी अमूर्त और यदि अदृष्ट कारण मूर्त हो, तो फिर वह कार्मण देह ही संभव है, अन्य नहीं। किन्तु कार्मण शरीर में भी यदि परिस्पन्द

हो, तो वह बाह्य शरीर के परिस्पन्द में कारण बन सकता है, अन्यथा नहीं। इसलिए पुनः प्रश्न होता है कि उस कार्मण शरीर के परिस्पन्द में क्या कारण है और जो इसका कारण हो, उसमें भी परिस्पन्द का कारण अन्य होना चाहिए। इस प्रकार अनवस्था दोष आता है तथा यदि कार्मण शरीर में स्वभाव से ही परिस्पन्द माना जाये, तो बाह्य शरीर में भी स्वभाव से परिस्पन्द मानना चाहिए। अदृष्ट ऐसे मूर्त कार्मण शरीर को क्यों परिस्पन्द का कारण मानना चाहिए।

मंडित– हाँ, यही ठीक है। बाह्य शरीर में परिस्पन्द स्वभाव से ही होता है। इसलिए आत्मा को सक्रिय मानने की आवश्यकता नहीं है।

महावीर– किन्तु शरीर में जिस प्रकार का प्रतिनियत विशिष्ट परिस्पन्द परिलक्षित होता है, उसे स्वाभाविक नहीं माना जा सकता, क्योंकि शरीर जड़ है। जो वस्तु स्वाभाविक होती है अर्थात् अन्य किसी कारण की अपेक्षा नहीं रखती, वह वस्तु सदैव होती है अथवा कभी नहीं होती। इस न्याय से शरीर में यदि परिस्पन्द स्वाभाविक हो, तो वह सदा एक जैसा ही होना चाहिए। किन्तु वस्तुतः शरीर की चेष्टा नाना प्रकार की होने पर भी अमुक प्रकार से नियत ही दिखती है। अतः उसे स्वाभाविक नहीं माना जा सकता। इसलिए कर्म सहित आत्मा का शरीर की प्रतिनियत विशिष्ट क्रिया में व्यापार मानना चाहिए। अतएव आत्मा सक्रिय ही है।

मंडित– संसारी जीव सकर्मा होने के कारण सक्रिय सिद्ध हुआ, किन्तु मुक्तात्मा में तो कर्म नहीं है, इसलिए वह तो निष्क्रिय ही होनी चाहिए। फिर भी आप उसे सक्रिय मानते हैं, तो उसमें क्या कारण है?

महावीर– आयुष्मन् ! मैंने तुम्हें बताया ही है कि मुक्तात्मा की गति क्रिया स्वाभाविक एवं गति परिणाम के कारण होती है और यह भी बताया है कि कर्मक्षय से जैसे सिद्धत्व रूप धर्म को जीव प्राप्त करता है, वैसे ही तथाविध गति परिणाम को भी प्राप्त करता है।

अलोक में गति न होने का कारण :-

मंडित– आपका यह कहना युक्तियुक्त है कि मुक्तात्मा में गति है। किन्तु अब प्रश्न होता है कि सिद्धालय से आगे भी उसकी गति क्यों नहीं होती ?

महावीर– कारण यह है कि उसके बाद गति सहायक द्रव्य धर्मास्तिकाय का अभाव है।

मंडित– आगे धर्मास्तिकाय क्यों नहीं है?

महावीर– गति सहायक धर्मास्तिकाय लोक में ही है, अलोक में नहीं। सिद्धालय से आगे अलोक है। इसलिए उसमें धर्मास्तिकाय नहीं है। अतः जीव की गति उससे आगे कैसे हो सकती है?

◆◆◆

अध्यक्षीय पाती

अभी सतर्कता की आवश्यकता

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ

कोविड-19 के अंतर्गत कोराना महामारी का पूर्णतः सफाया नहीं हुआ है। कई राज्यों में गंभीर स्थिति के कारण कुछ दिनों का लॉकडाउन या रात्रि का कर्फ्यू चल रहा है। यों कोरोना को 'देश निकाला' देने के लिए टीकाकरण निरंतर संचालित है लेकिन अभी सतर्कता की कुछ दिनों तक आवश्यकता है। यह संक्रमित महामारी है तथा यह संक्रमण के माध्यम से फैलती रही है।

इसका कोई अचूक निदान नहीं होने के कारण मौत की गोद में शयन के अतिरिक्त चारा नहीं है, टीकाकरण भी शरीर में आंतिरक रूप से ऐसी इम्युनिटी उत्पन्न करता है कि संक्रमण शरीर को विकृत करने से विफल हो जाता है। शासन द्वारा तत्सम्बन्ध निर्देश दिये जाते रहे हैं वर्तमान में भी ऐसी वर्जनाएँ प्रभावशील हैं। इस कारण किसी भी आयोजनों में भीड़ एकत्र करना, सामूहिक भोजन करना, मेला लगाना, सभा आदि करना वर्जित है। ऐसी स्थिति में तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी जन्म कल्याणक समारोह मुख्य कार्यक्रमों के साथ आयोजित नहीं हो पायेगा।

हम सभी का जीवन सबसे मूल्यवान वस्तु है, अतः प्रत्येक संघ व संस्था इकाई को इस सम्बन्ध में शासकीय निर्देशों तथा नीति का परिपालन करना चाहिए।

◆◆◆

अध्यक्षीय संदेश

समय का उपयोग आराधना में करें

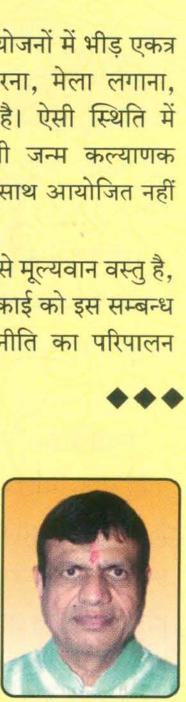

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष

देशभर में कोविड-19 के कारण कोरोना महामारी फेज-2 का फैलाव हो रहा है। यह फेज अधिक खतरनाक है एवं प्राणों के लिए गंभीर संकट उत्पन्न कर सकता है। वैसे इसकी वेक्सिन आ गई है जो लगाई जा रही हैं लेकिन इससे सबसे श्रेष्ठ बचाव सावधानी ही है।

अतएव समस्त शाखाओं से निवेदन है कि वे भीड़ भरे कार्यक्रम आयोजित नहीं करे, बड़ी बैठके या सम्मेलनों को भी टालें, व्यक्तिगत स्तर पर मास्क लगाएँ तथा सोश्यल डिस्टेसिंग का पालन करें। हाथ बार-बार साबुन से धोयें, इन बातों का समाज व परिचितों में प्रचार भी करें।

व्यक्तिगत स्तर पर घरों पर सूत्र याद करें, धार्मिक क्रियाएँ सम्पन्न करें एवं श्रावक जीवन के मार्गदर्शक तत्वों का पालन करें।

यह समय जीवन को आराधनामयी बनाने में प्रयुक्त कर ज्ञान-दर्शन चारित्र का पालन करें।

◆◆◆

सम्पादकीय

मेरे वर्तमान जीवन का शिलालेख

(सुरेन्द्र लोढ़ा)

मैं आज क्या हूँ ? कैसे जीवन में सुखी हूँ? आत्मा के प्रति मेरी दृष्टि तथा व्यवहार क्या है? मैंने जो अपने चारों ओर माया जाल रच रखा है, वह कब तक मेरे साथ है? वह कितना मेरी आत्मा का भला कर पायेगा? संतुलित मस्तिष्क से विचार करें कि वर्तमान में मेरा स्वरूप क्या है? स्पष्टतः मैं इच्छाओं का पुतला हूँ। मुझमें निरंतर इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं, मैं उनकी तृप्ति का प्रयत्न करता हूँ, लेकिन मैं कभी भी तृप्त नहीं होता। इस अवसर्पिणी काल में सभ्यता का सूत्रपात प्रभु ऋषभदेव ने किया। लाखों वर्ष प्रयत्न तक संस्कृति मानव सभ्यता में प्रयोग करती रही। पाषाण युग उपरांत वैदिक काल अथवा श्रमण काल के राजा-महाराजाओं के पास जितनी सुख-सुविधाएँ थीं, उनसे कई गुना वर्तमान में चारों ओर फैली हुई हैं। लेकिन क्या मैं सन्तुष्ट हूँ? क्या ये सभी मुझे वास्तविक सुख की अनुभूति करवा रहीं हैं? नहीं, क्योंकि मेरी इच्छाएँ आकाश की भांति अनन्त हैं, उनकी पूर्ति के लिए मैं निरंतर दौड़ रहा हूँ, लेकिन मुझे प्राप्त कुछ नहीं हो रहा है, जो प्राप्त होता है, वो मुझे तृप्त नहीं कर पाता है। आकाश में इन्द्रधनुष कई मीलों के क्षेत्र में अपनी छटा छोड़ता, मुझे आकर्षित करता है। मैं उसके सभी रंग की शोभा को अपनी अंगुली में एकत्र करने के लिए भागता हूँ, लेकिन जब उसके निकट पहुँचकर उसे मेरे हाथों में भरने का प्रयत्न करता हूँ, तो कुछ भी प्राप्त नहीं होता, केवल हवा मिलती है। मेरी इच्छाएं भी मुझे इन्द्रधनुष छटा की भाँति भ्रमित करती हैं। प्रबल पुण्य के कारण मुझे सभी कुछ प्राप्त हुए। माता-पिता की छाया मेरे आधे से अधिक जीवन में संरक्षता देती रही है। परिवार मेरी सेवाचाकरी पूर्ण तन्मयता के साथ करने में संलग्न है। सुखदायक सुविधाएँ कभी मुझसे दूर नहीं हुईं, यश की कमी नहीं रहीं, धन मेरे भाग्य के साथ चस्पा है। लेकिन इन सभी में मैं किन वस्तुओं का मेरे से शाश्वत जुड़ाव मान के चलूँ ? ये सभी मुझे गर्व के शिखर पर ले जाकर भुला देने वाले साधन यहीं रहने वाले हैं। वे यहीं के हैं, यहीं छूट जायेंगे कोई मेरा साथ देने वाला नहीं है। मैं यह जानता हूँ, समझता हूँ, लेकिन इनसे पृथक नहीं हो पा रहा हूँ। मैं इनके प्रपंचों में ही फंसा हुआ हूँ। इन्द्रियों ने मेरे विवेक पर आधिपत्य कर रखा है। मेरी इच्छाओं ने मुझे घेर रखा है। मेरे हृदय में/ मन में कितनी इच्छाएँ हैं, इसका मुझे ज्ञान या गणना नहीं

है। एक इच्छा पूर्ण होने पर तत्काल पच्चीस इच्छाएँ नई अंगड़ाई ले उठती हैं। तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी से किसी ने प्रार्थना की कि हे ! प्रभु ! मेरी इच्छा पूर्ण कर दीजिए ! भगवान ने उत्तर दिया- 'तुझे सुखी होना हो तो इच्छाएँ अपने मन से बाहर निकाल दे। तू क्षुद्र एवं तुच्छ इच्छाओं से दूर हो जा।'

मैं मानव हूँ। चौरासी लाख जीव योनियों में मानव भव को अलभ्य, अलौकिक प्रथा प्रकृष्ट पुण्य के कारण प्राप्त होने वाला दुर्लभ भव मान्य किया गया है। शास्त्रकारों ने स्पष्ट उपदेश दिया है कि मानव जीवन काल को भव्य आराधना काल में परिणित किया जाना ही इसकी सार्थकता है।

हम मानव कहलाते हुए भी मानव बन पाने में सफल नहीं हो पाते है। यूनान का प्रसिद्ध दार्शनिक तथा तत्वचिंतक सुकरात मौन रहकर अपने समक्ष बैठे चार युवाओं का वार्तालाप पूरे ध्यान से सुन रहे थे। पहले युवक ने कहा 'मेरा विचार विज्ञान का गहन अभ्यास कर कोई महान वैज्ञानिक बनने का हैं।' दूसरे ने इच्छा व्यक्त की- 'मुझे तो बड़ा साहित्यकार बनना है।' तीसरे ने कहा- 'मैं महान तत्व चिंतक बनना चाहता हूँ।' चौथे ने उत्तर दिया-'मुझे विज्ञानी बनने की इच्छा नहीं, साहित्यकार नहीं बनना, मुझे तत्वचिंतक बनने की महत्वकांक्षा नहीं हैं। मैं तो बस मानव याने सच्चा मानव बनना चाहता हूँ।' इतना सुनते ही सुकरात ने चौथे युवक की पीठ थपथपाई तथा उसे गले लगाते हुए कहा- 'तेने एक महान सत्य का उच्चारण व्यक्त किया है। वैज्ञानिक, लेखक, तत्वचिंतक व साहित्यकार बनना आसान है, लेकिन मानव बन पाना सबसे कठिन है। जो व्यक्ति सच्चा इंसान बनता है। उसने मानव जीवन सफल किया ऐसा माना जाता है।' इसके बावजूद मेरी दृष्टि 'मानव' शब्द या विशेषण या सर्वनाम पर नहीं टिक सकती। मानव शरीर का विकास मेरा सर्वोच्च उद्देश्य कदापि नहीं हो सकता। तीर्थंकर श्री महावीर देव भव्यात्माओं के लिए मोक्ष का मार्ग आलोकित कर गये हैं।

'जे एगं जाणइ, ते सव्वे जाणई' जिसने एक को जान लिया उसने सभी को जान लिया। यह एक शरीर नहीं शरीर से भिन्न आत्मा है। वही अपना मित्र हैं, उसे ही हमें मित्र बनाना हैं। 'पुरिसा तुममेव तुमं मित्रं, किं बहिया मित्रं मिच्छासि' हे आत्मा ! तू ही तेरा मित्र है, क्यों बाहर के मित्र की इच्छा करता हैं। 'मैं' से भी तात्पर्य आत्मा है। चाहे मुझे मानव शरीर का पर्याय प्राप्त है, लेकिन मुझे आत्मा की सिद्धि के लिए प्रयत्नशील होना है।

यह सिद्धि सम्यग्दर्शन, सम्यकज्ञान तथा सम्यकचरित्र की आराधना से ही संभव है। आराधना मुक्ति की प्राप्ति के लिए है। मेरा जो वर्तमान है वह आत्म आराधना की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मुझे उसी हेतु पुरूषार्थ करना है।

(क्रमशः)

◆◆◆

भारतीय गणतंत्र की धुरी वैशाली

(श्री शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)

निरभ्र आकाश में ओस के कण झरते हैं। शरद का चन्द्रमा अपनी पूरी आभा को द्विगुणित करता है। ऐसे में दुनिया को धर्म और ज्ञान की रोशनी देने वाली नगरी वैशाली अपने में सदियों पुराने वैभव को संजोए भारतीय गणतंत्र की धुरी बनी है।

पूरी दुनिया को लोकतंत्र का ज्ञान देने वाली इस भूमि का इतिहास 2725 वर्ष पुराना है, तब यहाँ लिच्छवी गणतंत्र था, जिसे वज्जि संघ कहा जाता था। इसमें केन्द्रीय कार्यपालिका में एक गणपति याने राजा, उपराजा, सेनापति तथा भण्डागारिक थे। ये ही शासन देखते थे। पूरी व्यवस्था आज के संसद के तरह थी। वास्तव में सारी दुनिया ने लोकतंत्र की परम्परा का ज्ञान यहीं से प्राप्त किया था।

जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर वर्धमान महावीर की यह जन्मभूमि थी। श्रद्धालुओं के ठहरने के लिये मन्दिर प्रांगण में समुचित व्यवस्था है। वैशाली और इसके समीप के पोर-पोर धार्मिक, नैसर्गिक, आध्यात्मिक धरोहर समेटे हैं। वैशाली के नजदीक ही एक गाँव कुण्डलपुर स्थित है जो भगवान महावीर का जन्म स्थान होने से सर्वाधिक लोकप्रिय होकर प्रसिद्धि प्राप्त है। वैशाली से 5 किलोमीटर दूरी पर भगवान महावीर का विशाल जिनालय है, इसी से लगे परिसर में एक संग्रहालय भी है। यहाँ संस्कृत, जैन दर्शन और अहिंसा आदि महाव्रतों पर शोध कार्य किया जाता है। भगवान संन्यास से पूर्व 30 वर्ष तक तथा संन्यास ग्रहण करने के 12 वर्ष बाद तक यहीं रहे। वैशाली जैन श्रमण निग्रंथों का विशाल केन्द्र होने की बात बौद्ध ग्रंथों में भी उल्लेखित होती है।

धर्म और संस्कृति के बड़ी संख्यावाले आख्यानों में वैशाली स्तूप के ठीक पास में स्थित मंगल अभिषेक पुष्करिणी तालाब भगवान महावीर कालीन परम्परा का स्मृति शेष है। कई ख्यातनाम विद्वानों ने इसकी महत्ता की पुष्टि की है। भगवान महावीर स्वामी की जयंती पर 'वैशाली महोत्सव' के अवसर पर महावीर वर्द्धमान स्वामी की मूर्ति नाव में रखकर तालाब के उत्तर से दक्षिण तक लाई जाती है और फिर इसी पुष्करिणी का जल कलश में भरकर भगवान का अभिषेक किया जाता है।

◆◆◆

अतिथि रचना

आध्यात्मिक उपलब्धि

(आचार्य श्री विद्यासागरजी म.सा.)

मैं अकेला हूँ। शुद्ध हूँ। आतम रूप हूँ। मैं ज्ञानवान और दर्शनवान हूँ। मैं रूप, रस, गन्ध और स्पर्शरूप नहीं हूँ। सदा अरूपी हूँ। कोई भी अन्य परद्रव्य परमाणु मात्र भी मेरा नहीं है। इस प्रकार की भावना जिसके हृदय घर में हमेशा भरी रहती है, ध्यान रखना उसका संसार का तट बिल्कुल निकट आ चुका है। इसमें कोई संदेह नहीं है। इस भावना को निरन्तर भाते रहने से ही हमें वैराग्य आ सकता है। इस भावना के द्वारा ही हमारे भीतर के कर्म के बन्धन छूट सकते हैं। संसार में कर्त्तव्य, बुद्धि और भोक्तृत्वबुद्धि, स्वामित्व बुद्धि इन तीन प्रकार की बुद्धियों के द्वारा ही संसारी प्राणी की बुद्धि समाप्त हो गयी है। वह बुद्धिमान होकर भी बुद्धू जैसा व्यवहार कर रहा है। अनन्तबार जन्म-मरण की घटना घट चुकी है और अनन्त बार जन्म-मरण के समय एकाकी ही इस जीव ने अपनी संसार की यात्रा की है। आज अपने को समझकर मानने वाला भी मझदार में ही है।

थोड़ा विचार करें तो ज्ञात होगा कि कितनी पर्यायें कितनी बार हमने धारण की और कितनों का संयोग-वियोग हमारे जीवन में हुआ है। जिसके वियोग में यहाँ पर हम रोते हैं, वह मरण के उपरान्त एक समय में ही अन्यत्र कहीं पहुँचकर जन्म ले लेता है और वहीं रम जाता है। विष्ठा का कीड़ा विष्ठा में राजी वाली बात है। उसके वियोग में हमारा रोना अज्ञानता ही है। आचार्य कहते हैं कि यह सब पराए को अपना मानने का तथा पर-पदार्थों में एकत्वबुद्धि रखने का ही परिणाम है। 'पर' के साथ एकत्व बुद्धि छोड़ना ही एक मात्र पुरुषार्थ है। छोड़ते समय जिसे ज्ञान और विवेक जागृत हो जाता है उसकी आँख खुल गई है, ऐसा समझना चाहिए।

दुनिया के सारे सम्बन्धों के बीच भी मैं अकेला हूँ, यही भाव बना रहना आकिन्चन्य धर्म का सूचक है। 'सागर' में एक बार बोली लग रही थी तब एक बोली तेरा सौ एक रुपए में गई। हमने तो वही विचार किया अच्छा रहस्य खुल गया 'तेरा सो एक' अर्थात् हमारा यदि कुछ है तो वह हमारा यही एकाकी भाव है। इस संसार में किसी का कोई साथी-सगा नहीं है।

बन्धुओं ! समझ लो एवं सोच लो। यह जो ऊपर पर्याय दिख रही है यह वास्तव में हमारी नहीं है। हम इसी के लिए निरन्तर अपना मानकर परिश्रम कर रहे हैं और दुख उठा रहे हैं। विवेक के माध्यम से इस पर्याय को अपने से पृथक् मानकर के यदि इस जीवन को चलाया जाए, जो जीवन आज दुःखमय बना है वही आनंदमय हो जाएगा। जिसकी तत्त्व पर दृष्टि चली जाती है वह फिर पर्याय को अपना आत्मतत्त्व नहीं मानता और न ही पर्याय में होने वाले सुख-दुःख को भी अपना मानता है। यही आध्यात्मिक उपलब्धि है। इसके अभाव में ही जीव संसार में कहाँ-कहाँ भटकता रहता है और निरन्तर दुःखी होता है।

◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

उत्तरदाता
स्व. जैनाचार्य श्रीमद् विजय
जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

नय वाक्य किसे कहते हैं ?

प्रश्नकर्ता
जैनाचार्य श्रीमद् विजय
नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्र. प्रमाण वाक्य किसे कहते हैं ?

उ. सप्तभंगी को प्रमाण वाक्य कहते हैं, अर्थात् अनन्त धर्मात्मक वस्तु को प्रधानता से कहने वाला वाक्य प्रमाण वाक्य कहा जाता है, इसी को सकलादेश कहते हैं।

प्र. नय वाक्य किसे कहते हैं ?

उ. अनन्त धर्मात्मक वस्तु के इतर अंशों से उदासीनता रखते हुए एक अंश को प्रधानता से कहने वाले वाक्य को नय वाक्य कहते हैं। इसको विकलोदेश कहते हैं।

प्र. निश्चय और व्यवहार किसे कहते हैं ?

उ. निश्चय मूल शुद्ध को ही ग्रहण करता है। व्यवहार कारण को भी साथ में ग्रहण करता है। जैसे निश्चय नय से सत्ता का ज्ञान मोक्ष का कारण है और व्यवहार से क्रियाओं का करना पुण्य हेतु है। इससे निश्चय नय संवर का कारण है और व्यवहार नय आस्त्रव का कारण है। क्योंकि शुभ व्यवहार पुण्यकर्म का आस्रव है और अशुभ व्यवहार पाप कर्म का आस्रव है। यद्यपि निश्चय नय अतिउत्तम है तो भी व्यवहार नय को छोड़कर सिर्फ निश्चय को स्वीकार करने से धर्म का सर्वथा लोप हो जाता है और जिनशासन का उच्छेद हो जाता है क्योंकि गुरु वंदन, प्रतिक्रमण, तप, जाप, जिन भक्ति, प्रत्याख्यान वगैरह आचरण छोड़ देने से निश्चय का कारण ही छोड़ दिया जाता है और निमित्त कारण छोड़ देने से केवल उपादान कारण से ही साध्य सिद्ध नहीं होता है और केवल व्यवहार को ही मानेंगे तो वस्तु स्वरूप का यथार्थ ज्ञान ही न हो सकेगा। इसी कारण जैन शासन में ज्ञान और क्रिया दोनों को मोक्ष का कारण कहा है। ज्ञानांश निश्चयांश और क्रियांश व्यवहार है।

प्र. उपादान कारण किसे कहते हैं ?

उ. जिस कारण की कार्य में अनुवृत्ति हो घट का उपादान कारण मृतिका (मिट्टी)।

◆◆◆

सबकी खुशी और सुख चाहते हैं तो ईर्ष्या छोड़िए

ईर्ष्या का मूल स्रोत है तुलना। जब यह तुलना अस्वस्थ हो जाए तो ईर्ष्या में तब्दील हो जाती है। सही मायनों में ईर्ष्या वह कीड़ा है, जो स्वस्थ इंसान को भी बीमार बना सकता है।

मनुष्य जीवन कितना दुर्लभ है। इस जीवन के महत्व को हम जानते हुए भी समझ नहीं पाते। सेवा, सद्भाव, सहयोग और समन्वय की मंगल-भावनाएँ मनुष्य को आंतरिक दृष्टि से समृद्ध बनाती हैं। इसके विपरीत ईर्ष्या ऐसा अवगुण है, जिससे मनुष्य कुंठित होने लगता है। हमें अपने से बेहतर अपने मित्र अथवा पड़ोसी की खुशियाँ बर्दाश्त करना भी आना चाहिए। उनकी बेहतरी की कामना के साथ उनकी प्रसन्नता में शामिल होना चाहिए, ना कि ईर्ष्या करनी चाहिए।

ईर्ष्या वो कीड़ा है जो इंसान को अंदर ही अंदर खाता रहता है। हर व्यक्ति के जीवन में खुशियों के अवसर सीमित ही होते हैं। ऐसे अवसरों पर व्यक्ति और उसके परिजन खुश होते हैं व मिठाइयाँ बांटते हैं। पड़ोसी, रिश्तेदार, सहकर्मी व जीवन के अन्य सहयात्री की जिंदगी में भी ऐसे मौके आते हैं तो हम उनको बधाई देकर अपनी खुशियों को दोगुना कर सकते हैं।

विस्तार ही जीवन है और संकोच ही मृत्यु है – एक विचारक ने कहा था, 'विस्तार ही जीवन है और संकोच ही मृत्यु है।' ईर्ष्या से भरा व्यक्ति कभी दूसरों की खुशियों में शामिल नहीं हो सकता। मारे जलन के वह अपने आपको एक अदृश्य आग में जलाता रहता है, जबकि उदारमना व्यक्ति दूसरों की उपलब्धियों की मुक्त कंठ से सराहना करता है और उनके मन में अपना स्थान बना लेता है। दरअसल ईर्ष्या एक मनोरोग है। यदि यह रोग किसी को लग जाए तो इसे जड़मूल से समाप्त करने के लिए समय रहते समुचित उपाय कर लेने चाहिए। इस अवगुण की बदौलत उसमें कई दुर्गुण पैदा हो जाते हैं। वह किसी को सुखी देखकर सुखी नहीं हो सकता।

स्वस्थ प्रतिस्पर्धा जीवन का आधार – आज गलाकाट प्रतिस्पर्धा के युग में स्वस्थ प्रतियोगिता और प्रतिसमर्पण की भावना संजीवनी का काम करती है।

स्वस्थ प्रतियोगिता सही मायने में दूसरे व्यक्ति या अन्य संस्थान से नहीं बल्कि खुद से होनी चाहिए। कल शाम हम जिस जगह थे, वहाँ से तुलना करें और अपनी स्थिति को आज बेहतर बनाएं।

इसी प्रकार 'सबका साथ, सबका विकास' की भावना सहअस्तित्व के आधार पर सृष्टि में मंगल का संचार करेगी। काश ! हम जय शंकर प्रसाद की इन पंक्तियों का अनुसरण कर समाज में सबको सुखी बनाने के लिए कदम बढ़ा लें तो कितना अच्छा हो –

औरों को हंसते देखो तुम, हंसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो, सबको सुखी बनाओ।।

◆◆◆

महाराजा श्रेणिक

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

महाराजा श्रेणिक के जीवन का क्रम था कि जब भी तीर्थंकर श्री महावीर देव उनकी राजधानी में या राजधानी के निकट स्थल पर होते, वे वन्दना करने अवश्य जाते थे। इसके अनुसार वे लावलश्कर के साथ गुणशीलक उद्यान जा रहे थे जहाँ तीर्थंकर देव की स्थिरता थी। रास्ते में एक बालिका के रोने की जोरों से आवाज सुनी। महाराजा श्रेणिक ने अंगरक्षक से पूछा कि- 'यह रुदन स्वर कैसा है ?' सैनिक ने तलाश कर लौटने के बाद महाराजा को बताया कि यह कोई 'अवैध नवजात बालिका है जो किसी के द्वारा पाप छिपाने के लिए फेंकी गई है। श्रेणिक को संस्कार तीर्थंकर देवों से प्राप्त थे। वे अंगरक्षकों को समझाकर अपनी यात्रा की ओर बढ़ गये। समवसरण में तीर्थंकर महावीर देव से इस बालिका का पूर्वकाल सम्बन्धि प्रश्न किया। तीर्थंकर महावीर ने बताया कि - यह मगध के ही शालीग्राम के धनमित्र सेठ की कन्या धनश्री थी। धनश्री के उपार्जित कर्मों ने उसे इस भव में यह स्थिति दी। अब यह बड़ी होकर तुम्हारी पटरानी बनेगी। भगवान ने भविष्य तक की कथा बता दी। श्रेणिक आश्चर्यचकित रह गया किन्तु तीर्थंकर देव के वचनों पर उसे पूरा भरोसा था।

उस कन्या को एक वंध्या अमीर के यहाँ राजा की आज्ञा से पहुंचा दिया गया। वह बड़ी हो गई तथा उसका यौवन निखर गया। उसकी स्थिति ऐसी आकर्षक बन गई थीं कि जो भी उसे देखता उसके सौन्दर्य पर मोहित हो जाता। उस वर्ष राजगढ़ में कौमुदी महोत्सव का आयोजन हुआ इसमें नगर के हजारों युवक-युवतियां शामिल हुए। वह कन्या भी इसमें भाग लेने के लिए गई। संयोग से वह श्रेणिक के पास जाकर ही खड़ी हो गई। श्रेणिक उसे देखते ही उसके लावण्य का दीवाना बन गया। उसने तिकड़म लगाकर उसे प्राप्त करने के लिये राजमहल पहुँचा दिया। राजा ने उसके साथ भोग किया तथा वह उसे पहचान गया। इस पर वह जोरों से हंसा। रानी ने हंसने का कारण पूछ और हठ कर बैठी। राजा ने वह पूरी कहानी सुनाई जो समवसरण में विराजमान देवादिदेव महावीर स्वामी ने सुनाई थी। सुनते ही रात्रि को अपने पूर्व भव से बड़ी ग्लानि हुई। उसका नाम अपतगंधा था। अपतगंधा ने राजा की आज्ञा लेकर भगवान महावीर के पास साध्वी दीक्षा ली तथा वह आत्म कल्याण की ओर बढ़ गई।

◆◆◆

हम जय जिनेन्द्र क्यों कहते हैं ?

जैन भाई एक-दूसरे का अभिवादन जय जिनेन्द्र से करते हैं। जय जिनेन्द्र बोलते समय दोनों हथेलियों को जोड़कर हृदयस्थल के आगे लाते हैं और नतमस्तक होते हैं यह अभिवादन अपने छोटे, समान आयु के, बड़े, मित्र और अपरिचित सभी को किया जाता है। शास्त्रों में औपचारिक परम्परागत अभिवादन की पाँच विधाएँ बताई गई हैं।

नमस्ते केवल औपचारिक या अनौपचारिक भी हो सकता है, यह सांस्कृतिक परम्परा और एक पूजा विधि भी है। वास्तव में, इसके और बहुत से अर्थ भी निकलते हैं। संस्कृत में नमस्ते अर्थात मैं नमन करता हूँ, या आपको प्रणाम करता हूँ। नमः का शाब्दिक अर्थ न अंह भी हो सकता है अर्थात् मैं नहीं। इसका अध्यात्मिक आशय दूसरों के सामने अपने अंह को मिटाना अथवा कम करना भी है।

लोगों के आपस में मिलने का सही अर्थ होता है, उनके मन का मिलन जब हम जुड़ी हथेलियों को हृदय स्थल के आगे लाकर नमस्ते कहकर एक-दूसरे का अभिवादन करते हैं, तो कहना चाहते हैं कि हमारे हृदयों का मिलन हो जाये। नतमस्तक होना प्रेम और नम्रता से मित्रता का हाथ बढ़ाने का अतिशालीन ढंग है।

नमस्ते का आध्यात्मिक अर्थ और भी गहरा है। चैतन्य शक्ति, देवत्व आत्मा अथवा ब्रह्म जो मुझे में है, वही सब में व्याप्त है। इस अभिन्नता को स्वीकार करके हम नत मस्तक होकर और हाथ जोड़ कर जहाँ अभिवादन करते हैं तो वास्तव में देवत्व को प्रणाम करते हैं। इसीलिए कई बार जब हम किसी श्रद्धेय व्यक्ति अथवा ईश्वर को नमस्ते कर रहे होते हैं, तो अपनी आँखें बंद कर लेते हैं- मानो अपने अंदर झाँक रहे हों। इस भाव के साथ-साथ हम कभी-कभी, जयजिनेन्द्र, नमोनारायण, जय सिया राम, ओम शान्ति आदि शब्द भी बोलते हैं- जो देवत्व स्वीकार करने का ही सूचक है। यदि हम महत्व को समझें तो हमारा अभिवादन ऊपरी चेष्टा मात्र अथवा शाब्दिक नहीं रह जायेगा, बल्कि दूसरे व्यक्ति के साथ प्रेम और आदर के वातावरण में और भी गहरे आदान प्रदान का रास्ता आसान कर देगा।

जय जिनेन्द्र से जैन दर्शन में नौ प्रकार के जो पुण्य बताए गए हैं, वे अर्जित होते हैं। नमस्कार वही व्यक्ति करेगा, जिसके मन में विनय का गुण विद्यमान है। विनय जीवन के विकास का मूल आधार है। विनय से जीवन खिलता है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र की अभिवृद्धि तभी संभव है जब हमारे मन में विनय हो। विनय की ज्योति मन मंदिर में सतत् प्रज्ज्वलित रहनी चाहिए।

◆◆◆

श्री नवकार कल्पद्रुम

(मुनिराज श्री विद्वद्रत्नविजयजी म.सा.)

सम्पूर्ण

जिनशासन नवकार भज, नहीं कार्य अवशेष।
जैसे पावस काल में, प्यासा कौन विशेष ॥70॥

शुभगति

जिनशासन नवकार भज, सद्गति तेरे हाथ।
कर मत इनसे याचना, भूत प्रेतादि भ्रात ॥71॥

तरंग

पराधीन अति हो गया, मन की लहर अपार।
वह कैसे स्मरण करे, जिनशासन नवकार ॥72॥

मोक्ष-बीज

मुक्ति बीज का वपन कर, ज्ञानी उर उद्गार।
मन तन वचन सहित भज, जिनशासन नवकार ॥73॥

दृढ़ आस्था

जिनशासन नवकार में, हो श्रद्धा अति अन्त।
विकट समय चाहे उदय, फिर भी समतावन्त ॥74॥

निश्चयात्मक

रे नर ! निश्चय अब करो, हरो विषय अधिकार।
तरो सहज भव सिन्धु से, भज करके नवकार ॥75॥

श्वास- मूल्य

जिनशासन नवकार भज, संत कहे समझाय।
चाहे सम्पत्ति व्यय कर, गये सांस कब पाय ॥76॥

लोभानल

अनल सभी को खा रहा, जितना इंधन डाल।
वैसे लालच त्याग कर, रह-रह शरण कृपाल ॥77॥

चरम मृत्यु

भाव भरे भव जल तिरे, मरे एक ही बार।
जिसने मन से जप लिया, जिनशासन नवकार ॥78॥

अयोग्य पुरुष

बांझ वृक्ष सिंचन करो, नहीं पुष्प प्रकटाय।
त्यों अभव्य भजे न अर्हं, करे न कोई उपाय।।79।।

दृढ़ व्रत

जिनशासन नवकार भज, करो न अन्य विचार।
जैसे प्रति व्रत नियम से, एक अधिप स्वीकार ।।80।।

रहस्य

जिनशासन नवकार बिन, कहा धर्म भूलोक।
ढूंढ रहे बाजार में, हा ! हा ! दुर्जन लोक ।।81।।

गूढ़ार्थ

जिनशासन नवकार पद, अतुलित अर्थ अनन्त।
कहो! भुजा से तिर सका, हा ! हा ! गहर सम्बन्ध ।।82।।

दुराग्रह निषेध

रे नर ! कभी न धार तू, मिथ्यामत्त का भार ।
एक भाव स्मरण करे, मंत्रराज नवकार ।।83।।

विद्या- विवेक

अति विद्या अभ्यास रत, नाना ग्रन्थ जबान ।
भजे नहीं नवकार तू, सब निष्फल अनजान ।।84।।

मूढ़ात्मा

हा ! हा ! नश्वर विषय में, मस्त मूढ़ संसार ।
जपा न पलभर एक भी, जिनशासन नवकार ।।85।।

विलोम-मनन

चिन्तित रहता अहर्निश, किंचित कुछ नुकसान।
लेकिन निष्फल जन्म तब, बिना अर्हं गुणगान ।।86।।

मूर्च्छा

आ जा मानव होश में, अल्प समय अवशेष।
जिनशासन नवकार भज, कैसे कहे विशेष ।।87।।

◆◆◆

(लेखांक-3)

धारावाहिक उपन्यास

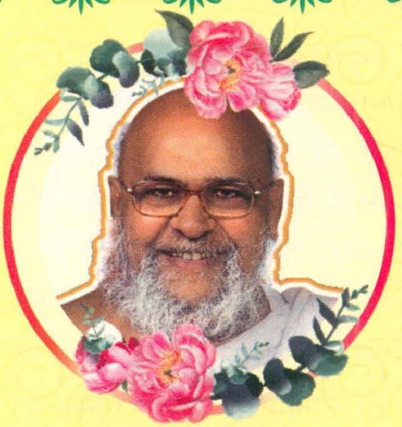

किस्मत की बात

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

राजा वीरधवल मुखिया के प्रस्ताव पर थोड़ी देर तक विचार करता रहा। राजा ने सभी पक्ष को ध्यान में रखते हुए सोचा। उसके मानस पटल पर यह बात भी उभर कर आई कि यदि आज इस गाँव के प्रस्ताव को स्वीकार किया तो बाद में अन्य गाँव भी ऐसा प्रस्ताव कर सकते हैं। यदि इस गाँव को छूट दी तो अन्य गाँवों को भी ऐसी ही सुविधा उनके द्वारा मांगने पर देनी होगी। अन्त में राजा ने मन ही मन निर्णय कर लिया की प्रस्ताव अच्छा है। इसमें जनता और राज्य दोनों का हित है। यदि एक गाँव से एक वर्ष कर नहीं मिला तो राज्य की आय पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा। अगले वर्ष उससे कुछ न कुछ क्षतिपूर्ति तो होगी ही। फिर राज्य के खर्च में कुछ कटौती कर आय की कमी की पूर्ति करने का प्रयास किया जा सकता है। यदि इसी प्रकार सारे राज्य में सिंचाई की सुविधा बढ़ जावेगी तो राज्य की समृद्धि में चार चाँद लग जायेंगे। 'प्रजाजनों ! आपके मुखिया के द्वारा आपकी बात को हमने ध्यान से सुना। सुनने के पश्चात् हमने चिंतन भी किया। आपका प्रस्ताव उत्तम है। आप सब ऐसे श्रेष्ठ प्रस्ताव के लिये बधाई के पात्र हैं। हम आपको एक वर्ष के कर की छूट प्रदान करते हैं। आप सहर्ष अपने यहाँ कुएं खुदवाकर सिंचाई सुविधा का विस्तार कर लें। हम वचन तो नहीं देते हैं, किन्तु यह अवश्य कहते हैं कि यदि सम्भव हुआ तो आपको राज्य की ओर से कुछ सहायता भी देने पर विचार करेंगे।' राजा वीरधवल ने घोषणा कर दी। राजा की घोषणा के साथ ही गाँव की जनता अपने राजा की जय-जयकार कर उठी।

गाँव कोई बड़ा नहीं था, फिर भी यहाँ

के नागरिकों में अच्छा उत्साह था। गाँव वाले प्रतिवर्ष कुछ न कुछ नया काम करते रहते थे। गाँव में एकता भी अच्छी थी। साम्प्रदायिक सौहार्द्र तो ऐसा था कि सभी जाति व धर्म के लोग प्रत्येक धर्म का त्यौहार सामूहिक रूप से मनाया करते थे। ऐसा प्रतीत होता मानों इस गाँव में एक ही जाति और एक ही धर्म के लोग निवास करते हैं। राजा वीरधवल को इस बात की जानकारी थी और इसीलिये वह इस गाँव को अधिक महत्व भी देता था। इस गाँव में लोक कलाकारों की एक मंडली भी थी। यह मंडली समय-समय पर जनता के मनोरंजन के लिये नृत्य व गान के कार्यक्रम आयोजित करती रहती थी। राजा वीरधवल इस घोषणा के बाद यहाँ से प्रस्थान करना चाहते थे, किन्तु गाँव वालों ने आग्रहपूर्वक रोक लिया और रात्रि में उनके सम्मान में नृत्य-गान का कार्यक्रम भी रख दिया।

नृत्य-गान का कार्यक्रम गाँव के स्तर से भी ऊँचा था। नृत्यांगना एक युवती थी। उसका सौंदर्य अद्वितीय था। उसकी संगत करने वाले गायक का कंठ अत्यंत मधुर था। कार्यक्रम के अन्त में इस नृत्यांगना ने मयूर नृत्य किया। इस नृत्य को देखकर राजा वीरधवल मंत्रमुग्ध हो गया। वह वाह-वाह कर उठा और अपने गले का हार पुरस्कार स्वरूप उस नृत्यांगना की ओर उछाल फेंका। यद्यपि राजा का ऐसा करना उचित नहीं था, किन्तु किसी ने भी इस बात का बुरा नहीं माना। राजा को यदि नृत्यांगना को पुरस्कृत करना ही था तो नृत्य की समाप्ति के पश्चात् रंगमंच पर जाकर कलाकारों को आशीर्वाद प्रदान कर उन्हें पुरस्कृत कर सकता था। किन्तु प्रसन्नता के अतिरेक में वह ऐसा कर बैठा। खैर ! कार्यक्रम समाप्त हुआ और अंत में राजा ने कलाकारों को आशीर्वाद दिया तथा इन्हें आर्थिक सहायता प्रदान करने की दृष्टि से एक निश्चित धनराशि प्रति वर्ष देने की घोषणा भी की। इस अनापेक्षित सहायता से सभी कलाकार प्रसन्न हो गये। वे अपने अभाव की पूर्ति इस धनराशि से कर अपनी कला का और भी अच्छी प्रकार प्रदर्शन कर सकेंगे।

जब सभी कलाकार एक-एक राजा को प्रणाम कर जाने लगे तो राजा की दृष्टि नृत्यांगना पर अटक गई। यद्यपि इस बात पर किसी का ध्यान नहीं गया तथापि राजा के मुंह लगे एक अधिकारी ने राजा की इस दृष्टि को भांप लिया।

(क्रमशः)

◆◆◆

मानसिक तनाव से मुक्ति

आजकल मनुष्य का मन बहुत ही शंकालु और कमजोर होता जा रहा है। सहनशक्ति का अभाव होने से मानसिक आघात नहीं झेल पाता। इससे उसके ज्ञान-तंतुओं के मर्म व्यूहपर बुरा प्रभाव पड़ता है जिसके कारण मेरूदंड में विकार उत्पन्न होकर बुद्धि शून्य हो जाती है और मन असंतुलित होकर विचार शक्ति कमजोर हो जाती है, जिससे मनुष्य का 'आत्मविश्वास' डगमगा उठता है और धीरे-धीरे वह निराश और कायर बनता जाता है।

अत्याधिक श्रम, व्यापार-धंधे में आर्थिक नुकसान, प्रियजनों का वियोग, दुख में डूबे रहना, प्रतिकूल परिस्थितियों, विपत्तियों का भार, विचारों को अंदर ही अंदर दबाना जैसे कारणों से मनुष्य में उदासीनता, खिन्नता और चिड़चिड़ापन आ जाता है। कभी -कभी जब परेशानियां बहुत बढ़ जाती हैं, तब मनुष्य एकांत में आत्म-हत्या का विचार करने लगता है। उसके लिए जीवन एक भार, निराश और नीरस रूप में सामने खड़ा दिखाई देता है।

अधिकतर यह भी देखने में आता है कि मनुष्य व्यर्थ और फिजूल की बातों पर चिंतन अधिक करता है, जिसकी न तो कोई प्रतिक्रिया ही होती है और न ही कोई परिणाम निकलता है। कई ऐसे व्यक्ति मिलते हैं जो दूसरों की चिंता करते-करते ही क्रोधित हो जाते हैं। बहुत से चिढ़े हुए होने के कारण मन ही मन किसी न किसी पर दोष लगाकर एकांत में भला-बुरा कुछ भी बड़बड़ाते रहते हैं। अधिकांश व्यक्ति काल्पनिक शत्रु से भयभीत रहते हैं। वे सोचते हैं कि वह व्यक्ति हमारे धंधे में शत्रु है। 'मन' के बाणों से उस पर प्रहार करते रहते हैं। इस प्रकार जीवन का बहुमूल्य समय फालतू विचारों में बर्बाद हो जाता है।

मनुष्य दुःखी क्यों है? दुख का कारण क्या है? दुःख कैसे उत्पन्न होता है? यह सब प्रश्न अलग-अलग ढंग से हम सब के साथ जुड़े हुए हैं। दुःख दो प्रकार का बतलाया गया है। शारीरिक और मानसिक। शारीरिक दुःखों को तो भौतिक उपचार द्वारा चिकित्सा करके ठीक किया जा सकता है परन्तु मानसिक दुःख के लिए मन चिकित्सा और आध्यात्म की आवश्यकता होती है।

इसकी सत्यता को पाश्चात्य देशों ने भी माना है। आधुनिक विज्ञान भी आजकल 80 प्रतिशत शारीरिक बीमारियों में मानसिक विकारों को मूल उत्पत्ति

का कारण मानता है। इसलिए इन रोगों की चिकित्सा के लिए विदेशों में मनोविश्लेषक एवं सायकेट्रिस्ट का चलन अधिक है। जुग, एलर, फ्रायड आदि मानसशास्त्रियों ने इस विषय पर बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं जो अनुभवपूर्ण और उपयोगी हैं।

मानसिक विकारों से छुटकारा पाने के लिए योग सूत्र में चार प्रकार की वृत्तियों का उल्लेख किया है- मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा।

मैत्रीभावना भय का विनाश करती है और जहां भय नहीं रहता वहां जीवन में निराशा और कायरता भला कैसे आ सकती है ? मनुष्य को सबके प्रति सद्भाव रखना और उसका अभ्यास करना ही 'मैत्री' का स्वरूप है। दुःखी मनुष्य के दुःख में सहानुभूति का प्रदर्शन करना 'करुणा' का स्वरूप है। सुखी के सुख में सुख की भावना रखना 'मुदिता' और अपने से प्रतिकूल विचारवालों के झंझट में नहीं पड़ना 'उपेक्षा' है। इन चारों में उपयोगी 'मैत्री भावना' है। जीवन में इसका उपयोग कैसे करना चाहिये। इसका वर्णन विभिन्न धर्मों में अलग-अलग रूप से किया गया है।

मैत्री भावना के अभ्यास से मनुष्य सुख की गहरी नींद सोता है। भयानक स्वप्न उसे परेशान नहीं करते। जागृत अवस्था में जो व्यक्ति दूसरों की बुराई सोचता है स्वप्नावस्था में उन्हीं लोगों द्वारा वह दुःखी होता है। उसका मन दुःखी संसार का निर्माण स्वयं करता है। जब हम दूसरों की बुराई चाहते हैं तो वह हमें शत्रु के रूप में दिखाई पड़ते हैं जिसके कारण हमारे मन में भय उत्पन्न हो जाता है।

इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह सदा अपने मित्र और शत्रु दोनों के लिए सद्भावना मन में लाए। कितने ही व्यक्ति आगे होने वाली घटनाओं के चक्र में चिंतित रहते हैं जो वास्तव में घटित होती ही नहीं। इसलिए मनुष्य अगर 'मैत्री भावना'का अभ्यास करे तो उसके मन में अकारण बुरे विचार उठते ही नहीं। उसका चेहरा प्रसन्नचित और वह सबका प्रिय होता है।

जिसका अंतःकरण स्वस्थ होगा, उसका शरीर निश्चित ही स्वस्थ होगा। मन तो बीज है और बीज के अनुरूप ही वृक्ष और फल होता है। इसलिए शारीरिक स्वास्थ्य की उत्तमता के लिए मानसिक स्वास्थ्य की उत्कृष्टता का होना अनिवार्य है।

◆◆◆

प्रतिक्रमण याद करने के लाभ

(डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई)

जो व्यक्ति प्रतिक्रमण कण्ठस्थ कर लेता है , वह जाने-अनजाने अनेक उपयोगी ज्ञानवर्द्धक आगमिक बातों का जानकार हो जाता है। प्रतिक्रमण मूलतः प्राकृत में हैं। प्राकृत संस्कृत दिव्य भाषाएँ मानी जाती हैं। उनका उच्चारण मंगलकारी माना जाता है। जहाँ नियमित सामायिक प्रतिक्रमण की आराधना होती है, वहाँ अनेक अशुभ टल जाते हैं। केवल प्रथम सामायिक आवश्यक को ही द्वादशांगी का सार और चौदह पूर्व का अर्थपिण्ड कहा गया है तो छह आवश्यक सहित सम्पूर्ण प्रतिक्रमण का महत्व निःसंदेह बहुत अधिक है।

जिसे प्रतिक्रमण याद है- (1) वह सगर्व यह कह सकता है कि उसे एक आगम कण्ठस्थ है। (3) वह पंच परमेष्ठी के स्वरूप और उनके गुणों का जानकार हो जाता है। (3) वह छह आवश्यकों का जानकार हो जाता है। (4) वह यह जान जाता है कि अठारह पाप कौन से होते हैं। (5) उसे कई स्तुतियाँ, स्तवन याद हो जाता हैं। (6) उसे प्रत्याख्यान का पाठ याद हो जाते है, जिससे वह किसी को भी प्रत्याख्यान करवा सकता है अथवा स्वयं भी प्रत्याख्यान पूर्वक कोई नियम ले सकता है। (7) वह श्रावक के बारह व्रतों (3 गुणव्रत व 4 शिक्षा व्रत सहित) का जानकार हो जाता है। (8) वह बारह व्रतों का स्वरूप और उनके दोषों (अतिचारों) का जानकार हो जाता है। (9) वह रत्नत्रय (सम्यग्ज्ञान्, सम्यग्दर्शन व सम्यक्चारित्र) के स्वरूप को समझ सकता है। प्रतिक्रमण के सूत्रों व पाठों में ज्ञान, ध्यान, विनय, अनुशासन, नैतिकता और प्राणीमात्र से मैत्री के संदेशों की अनुगूंज है। प्रतिक्रमण में अनेक विषय समाविष्ट हैं। प्रतिक्रमण जानने वाला कहीं भी विचार व्यक्त करना चाहे तो वह प्रतिक्रमण में से कई तथ्य उद्धृत कर सकता है और उसकी अभिव्यक्ति को प्रभावशाली व प्रामाणिक बना सकता है। अर्थ को समझते हुए प्रतिक्रमण याद किया जाए और उसकी सही रूप से आराधना की जाए तो जीवन में नई रोशनी पैदा होती है। माता-पिता को चाहिये कि वे अपनी सन्तान को अन्य चीजों के अलावा प्रतिक्रमण भी कण्ठस्थ कराएँ। बाल किशोर वय में याद किया गया प्रतिक्रमण जीवन भर की पूंजी बन जायेगा। ◆◆◆

स्वतंत्रता संग्राम में जैन समाज के अमर शहीद

(संशोधक– मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.)

भारत की स्वतंत्रता के लिये प्रथम संग्राम सन् 1857 की क्रांति था, हालांकि अंग्रेजों ने इसे गदर या बगावत का नाम देकर बदनाम किया तथा नृशंस अत्याचारों के द्वारा हजारों लोगों की बलि देने तक में संकोच नहीं किया। देश की स्वतंत्रता के इस संघर्ष में जैन समाज का भी महत्व पूर्ण भूमिका रही। शूर जैनवीरों ने तोपों के सन्मुख खड़े होकर भारत माँ की बेदी पर शहादत देने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। इनमें तत्कालीन ग्वालियर राज्य के कोषाध्यक्ष श्री अमरचंद बांठिया का नाम प्रमुखता से लिया जाना चाहिए जिनने महारानी लक्ष्मीबाई की सेवा को पाँच माह के वेतन का भुगतान करने के लिए अपनी जान की परवाह नहीं करते हुए ग्वालियर राज्य के गंगाजली कोष में जमा राशि की चाबियाँ चुपचाप क्रांतिकारी सेना को दे दी। उस समय ग्वालियर राज परिवार ने अंग्रेजों का साथ दिया था। सन् 1857 की क्रांति के विफल हो जाने पर अंग्रेज शासकों ने श्री अमरचंद बांठिया को गिरफ्तार कर लिया व जेल में डाल दिया। यहाँ उन्हें बहुत यातनाएँ दी गईं। उनके अण्डकोष पर पत्थर बांध कर दौड़ाया गया। जब अमरंचदजी ने माफी मांगने से इंकार कर दिया तो उनके आठ वर्षीय पुत्र को तोप के मुँह पर बांध कर उड़ा दिया गया। सेठश्री बिलकुल विचलित नहीं हुए। इस पर उन्हें ग्वालियर स्थित सर्राफा बाजार के पेड़ पर बांध दिया गया। उनसे अंतिम इच्छा पूछी गई, उनने एक सामायिक कर 84 लाख जीव योनियों के प्राणियों से क्षमा याचना करने के लिए कहा। इसकी उन्हें इजाजत मिली। चमत्कार भी ऐसा हुआ कि फांसी पर चढ़ाने पर पहले रस्सी टूट गई तथा दूसरी बार पेड़ की डाली टूट गई। तीसरी बार नीम के पेड़ से उन्हें मजबूती से बांधा गया। दि. 22 जून 1858 को उन्हें फांसी चढ़ा दिया गया। इस नीम के पेड़ के पास आज भी सेठजी की एक छोटी प्रतिमा स्थापित है। जैन संस्कृति भारतीय स्वतंत्रता के लिये शहीद हुए ऐसे सपूत का नाम गौरव के साथ लेती है।

◆◆◆

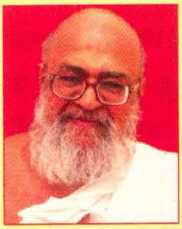

स्व. श्रीमद् विजय
जयन्तसेनसूरीश्वरजी
महाराज

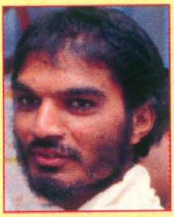

मुनि श्री प्रशमसेन
विजयजी महाराज

'मधुकर' सार्थक नाम

(मुनि श्री प्रशमसेनविजयजी महाराज)

'मधुकर' उपनाम खूब प्रचलित है। एक शब्द जैन शास्त्रों में साधु जीवन के उल्लेख के संदर्भ में प्रयुक्त होता रहता है 'मधुकरी भिक्षा'। मधुकर याने भौंरा, जैसे भौंरा पुष्प पटल पर प्रसरित पराग को थोड़ा-थोड़ा ग्रहण करता है तथा तृप्त होता है। उसकी तृप्ति में कभी भी किसी पुष्प का सम्पूर्ण संचय समाप्त नहीं होता, पुष्प को ज्ञात ही नहीं होता कि उसके पराग कणों का लेन हुआ है। उसी प्रकार साधु कई परिवारों में जाकर अल्पमात्रा में भिक्षा ग्रहण करते हुए अपनी पूर्ति करता है। इसलिये उसकी भिक्षा को मधुकरी भिक्षा कहा गया। जैनाचार्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय नामांकन जसन्तसेन सूरीश्वरजी महाराज के मुनिराज श्री जयंतविजयजी महाराज के साथ भी उपनाम के रूप में सदैव 'मधुकर' जुड़ा रहता रहा। मुनि के साथ 'मधुकर' शब्द मधुकरी भिक्षा की ओर ही संकेत करता है लेकिन मुनिराजश्री जयंतविजयजी महाराज को यह उपनाम इंदौर के सुविख्यात् पं.करमलकर शास्त्री ने मुनिराजश्री की ज्ञान-श्लाघा करते हुए दिया। मुनिराजश्री जयन्तविजयजी का संस्कृत का अध्ययन इन पंडितजी की निश्रा में चल रहा था। मुनिराजश्री को जो श्लोक अच्छे लगते थे, उन्हें वे कंठस्थ कर लेते थे। इस पर पण्डितजी खुश हो गये। उन्होंने श्लोक चयन पर कहा- 'जैसे भंवर, पुष्प से रस ही लेता है, वैसे ही आप मधुर श्लोक चुन लेते हैं।'

इसलिये उन्होंने मुनिराजश्री जयन्त विजयजी महाराज को 'मधुकर' नाम दे दिया। साथ ही एक अन्तरलापिक बनाई 'कुसुमज मधु पातुम् कर्मवीरः क्षमः कः।' मुनिराजश्री के नाम के साथ 'मधुकर' उपनाम हर कहीं शोभित हुआ। कविताओं, कहानियों, लेखों आदि रचनाओं के प्रकाशन में यह उपनाम उनके नाम के साथ ही रहा। इनकी लाखों प्रतियों में यह सदैव जगमगाया।

यों राष्ट्रसंत जैनाचार्यश्री प्रखर कवि हैं। इनने कई आध्यात्मिक कविताएं रची हैं, जिनका प्रकाशन हुआ है। गुरुदेव के जीवन पर महाकाव्य भी प्रकाशित हुआ है। आपने सतसई की रचना भी की है। कोई इक्कीस सौ दोहों ने प्रकाशन प्राप्त किया है।

आपके जीवन में जितने भी महत्वपूर्ण प्रसंग आये, आपने उन पर तत्काल कविताएं तैयार की तथा समारोह में उनका सस्वर पाठ किया। पूजाएं, स्तवन, चैत्य-वन्दन आदि तो आध्यात्मिक कविता की विधाएं हैं हीं, इनको अगणित पंक्तियां आपकी काव्य शैली से प्राप्त हुई है।

भारत में कवि संसार में उपनाम रखने की परम्परा शताब्दियों से चली आ रही है। आपके उपनाम 'मधुकर' ने आपके सफल कवि होने के व्यक्तित्व को उजागर किया। पूज्यश्री न केवल कविताओं का सृजन करते थे, बल्कि रसान्वित श्रोताओं के उपलब्ध होने पर उन्हें सुनाते भी थे। विशेषतः आपके दर्शनार्थ कवियों का समूह एकत्र होने पर आप उनमें कवि ही बन जाते थे। उनकी कविताओं का श्रवण करने के साथ-साथ अपनी डायरी भी खोलकर कविताओं की रसधारा प्रवाहित करने लगते थे।

सन् 1956 का वर्षावास खाचरौद, सन् 1957 का वर्षावास रानापुर जिला झाबुआ, सन् 1958 का वर्षावास जावरा में हमारे राष्ट्रसंत ने अपने गुरुदेव के सान्निध्य में किये और अपने ज्ञानाभ्यास का क्रम जारी रखा। सन् 1959 एवं 1960, ये दोनों वर्षावास गुरुदेव के सान्निध्य में राजगढ़ (धार) में किये। उल्लेखनीय तथ्य यह रहा है कि गुरुदेव के उपदेशों तथा हमारे परम पूज्य राष्ट्रसंत के प्रयासों से अखिल मालव मेवाड़ प्रांतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की स्थापना गुरुदेव पीताम्बर विजेता आचार्य श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के हाथों से हुई।

वैराग्य कैसे हुआ ?

दशरथ राजा- वृद्धावस्था देखकर, हनुमानजी - संध्या के बादल देखकर, दशार्णभद्र- इन्द्र के सामेले की ऋद्धि देखकर, मृगापुत्र- साधु को देखकर, अषाढाचार्य- शराब पीये हुए पत्नी को देखकर, आर्यरक्षित - सामेले में माँ की गैरहाजरी देखकर, धन्नाजी- स्नानागार में पत्नी के कटुवचन सुनकर, शालीभद्र- क्या मेरे ऊपर भी नाथ (श्रेणिक को देखकर), स्थुलभद्र- पिता की मृत्यु से प्राप्त मन्त्रि मुद्रिका के चिन्तन से, बाहुबली- उठाये हुए हाथ का क्या ? अभयकुमार- जा अपना मुँह कालाकर (पिता के वचन) खंधकसूरी के साले खून से सनी मुहपत्ती देखकर।

जिनशासन की वर्णमाला

(साध्वीश्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

म-मनः- बहुत कीमती चीज है 84 लाख योनि में 58 लाख योनी में मन नहीं मिलता है। सिर्फ 26 लाख योनी में ही मन मिलता है । मन मिलना बहुत दुर्लभ है। मन तारक भी है और मारक भी है। मन चंचल मेघ के समान है। कभी क्या विचार करता है कभी क्या वास्तव में व्यक्ति को कोई भी सुखी-दुःखी नहीं कर सकता है। वह मन से ही सुखी-दुःखी होता है। सारी परिस्थिति मन के ऊपर Depend है। अगर हम मन से दृढ़ संकल्प कर लेते है कि मुझे यह कार्य करना ही है तो किसी भी प्रकार से कर ही लेता है। कोई सोच ले कि मुझे कैसा भी निमित्त मिले मुझे तो दुखी नहीं होना है तो वह नहीं होता है। मन हार जाता है तो कुछ भी नहीं कर सकते हैं।

If mind is upset then everthing is upset & if mind is ok then everything is ok.

मन बड़ा भयंकर है तंदुलमतस्य काया से तो कुछ भी पाप नहीं किया लेकिन मन से तीव्र कोटि का अशुभ विचार किया है तो मरकर सातवीं नरक में गया। इसलिए हे जीव। मन से किसी भी प्रकार की पाप प्रवृत्ति तेरे से न हो इस प्रकार तूँ उपयोगवंत रहना।

य-यति - यानि साधु- जो साधना करे वह साधु ।

मोक्षमार्ग में ले जाने वाले 10 प्रकार के श्रमणधर्म होते हैं। जिसकी साधना साधु करता है। **(1) खंति-क्षमा =** क्रोध नहीं करना **(2) मृदुता-** अभिमान का त्याग **(3) आर्जव- सरलता-** माया का त्याग **(4) निर्लोभता-** लोभ का त्याग **(5) तप-** 12 प्रकार का **(6) संयम-** 17 प्रकार का (5 महाव्रत + 5 इन्द्रिय + 4 कषाय + 3 योग) **(7) सत्य-** सर्व प्रकार से सत्य बोलना **(8) शौच-**अदत्तग्रहण का त्याग **(9) आकिंचन -** सर्वप्रकार से परिग्रह का त्याग **(10) बंभ-** सर्व प्रकार से मैथुन का त्याग ।

र-रत्नराज :- भरतपुर के पारख परिवार में ऋषभदासजी सोना-चांद एक प्रसिद्ध व्यापारी थे। एक दिन केसरबाई ने स्वप्न में देखा कि एक तरुण व्यक्ति ने चमकतारत्न केसरबाई को दिया। स्वप्न का फल एक अनुभवी से पूछने पर बताया कि एक भाग्यशाली पुत्ररत्न की प्राप्ति होगी।

विक्रमसंवत् 1883 की पोषशुक्ला सप्तमी, गुरुवार को माता केसरबाई ने सर्वगुण सम्पन्न पुत्ररत्न को जन्म दिया। स्वप्नानुसार पुत्र का नाम रत्नराज रखा। संवत् 1904 में उदयपुर में गुरु प्रमोदसूरिजी से दीक्षा ली। दीक्षा का नाम रत्नविजयजी रखा। आहोर नगर में पूज्य रत्नविजयजी को आचार्य पद प्रदानकर उनका नाम राजेन्द्रसूरीश्वरजी रखा। संवत् 1925 में जावरा में छड़ी चामर, पालकी आदि आदेश्वर भगवान के मन्दिर में चढ़ाकर महोत्सव के

साथ क्रियोद्धार किया और साधु जीवन की शिथिलताओं को दूर किया। कई बार पूरी रात्री ध्यान में रहते थे और ध्यान में पूर्व की घटनाओं का आभास हो जाता था। कुक्षी चातुर्मास में 45 आगमों का व्याख्यान दिया, मोदरा के निकट, चामुंड़ावन में 8 अट्ठाई की और पद्मासन में प्रभु ध्यान में मग्न रहकर सवा करोड़ का जाप किया, जालोर किले के जिनालयों का जिर्णोंद्धार, मोहनखेड़ा तीर्थ, सियाणा, कड़ोद आदि गावों में प्रतिष्ठा करवाई। सियाणा नगर में राजेन्द्रकोष की रचना आरंभ की ओर सुरत में अभिधान राजेन्द्र कोष का लेखन समाप्त हुआ। गुरुदेव ने पौषसुदि तीज को पद्मासनस्थ होकर अनशन स्वीकार किया।

तीज का शेष भाग, चौथ, पाँचम, छट्ठ की रात्रि प्रारंभ हुई। समस्त संघ उपस्थित था, गुरुदेव ने क्षण मात्र के लिए आँखे खोलकर सबसे करबद्ध हो बोले 'वेरं मज्झं न केणइ, मित्ति में सव्वभूएसो' आँखे पुनः बंद की। तब उपाश्रय के समीप से झालर में से झंकार की ध्वनि आई। गुरुदेव के मुख से 'ॐ अर्हं नमः' का स्वर निकला। घड़ी में आठ बजकर आठ मिनिट हुई थी। गुरुदेव का स्वर भेद होने लगा 1963, पोष शुक्ल 6 की रात को गुरुदेव का देवलोक गमन हुआ।

ल–लक्ष्य : – किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए किया जाता है वह लक्ष्य। जैसे प्रभु पूजा का लक्ष्य चित्त की प्रसन्नता, सभी आराधना का अंतिम लक्ष्य वीतराग, मोक्ष की प्राप्ति, बिना लक्ष्य के जीना यानि दिशाहीन होना।

हमारा लक्ष्य सही होना चाहिए और उसी दिशा में सद्पुरुषार्थ करना चाहिए. जिस प्रकार आपको C.A. बनना है Engineer, Collectoar, Doctor आदि बनना है तो उसी लक्ष्य को प्राप्त करने की मेहनत करते हो, रात–दिन उसी में आपका मन लगा हुआ रहता है। सुख पुरुषार्थ करते हो उसी प्रकार अपना जीवन का जो अंतिम लक्ष्य है 'मोक्ष' उसको प्राप्त करने के लिए उस लक्ष्य से सम्यक् प्रकार से, सद्पुरुषार्थ से आराधना, साधना करना चाहिए। अपना लक्ष्य सही दिशा में चल रहा हो तो मंजिल दूर नहीं है। अतः अपना लक्ष्य शुद्ध करके सही दिशा में चलने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

व–व्रतः– 12 व्रत होते हैं। श्रावक के 12 व्रत होते हैं। बारह व्रत अर्थात् बिना खाये, बिना भोगे, बांधने वाले अनेक निरर्थक कर्मों से मुक्ति पाकर विपुल प्रमाण में पुण्य उपार्जन करने की मास्टर Key है। जो देव–गुरु–धर्म की साक्षी में 12 व्रतों को ग्रहण करते है उसे श्रावक कहते हैं। बारह व्रतों का नाम – (1) स्थूल प्राणितिपात विरमणव्रत (2) स्थूल मृषावाद विरमण व्रत (3) स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत (4) परस्त्रीगमन विरमण व्रत (5) स्थूल परिग्रह विरमण व्रत (6) दिक् परिमाण व्रत (7) भोगोपभोग विरमण व्रत (8) अनर्थदंड विरमण व्रत (9) सामायिक व्रत (10) देशावगाशिक व्रत (11) पौषधोपवास व्रत (12) अतिथि संविभाग व्रत। ◆◆◆

आत्मोद्धार है तो आनन्द है

(सुहानी आंचलिया, जावरा)

आत्मोद्धार अर्थात आत्मा का उद्धार और जहां, जिस क्षण में आत्मा का उद्धार है वहां सिर्फ आनन्द ही आनन्द समाया हुआ है। अस्थाई या बाहरी आनन्द नहीं बल्कि आत्मा से निकली ऊर्जा का आनन्द जो दिखाई नहीं देता सिर्फ महसूस किया जा सकता है।

जैसा कि हम जानते हैं धातु को तपाने से सोना बनता है। ठीक वैसे ही आत्मा को तपाने से उसका आत्मोद्धार होता है। आत्मोद्धार तभी संभव है जब हम पाप की वृत्ति को कम कर पुण्य की उपासना करे।

हर पल, हर क्षण जो भी कार्य करें चाहे वह मन से करें, वचन से करें या काया से करें। उस कार्य को करने से पहले क्षणिक भर यह जरूर सोचें कि क्या उसमें पाप का क्षय हो रहा है या पुण्य की मनोवृत्ति हो रही है। अगर अंतरात्मा से 'हाँ' का जवाब मिले तभी उस कार्य को करने में अपनी अग्रसरता दिखाएँ।

आत्मा को तपाना आसान नहीं है। अगर आत्मा को तपाना है तो अपनी इच्छाओं को कम करना होगा। मन को वश में करना होगा मन का गुलाम बनने से बचना होगा, तब जाकर आत्मा का उद्धार सम्भव है।

यह रास्ता तो मात्र पहला कदम है या कहे तो सीढ़ी का पहली पक्तियाँ। उन सभी संसारी जीव के लिए जो अपनी आत्मा का उद्धार करना चाहते हैं।

सही मायने में आत्मोद्धार की सीढ़ी है 'दीक्षा'।

दीक्षा मतलब संसार से वैराग्य, राग, द्वेष, मोह, माया से कोसों दूर। सिर्फ और सिर्फ अपनी आत्मा को तपाकर, कर्मों के निर्जरा कर उसका उद्धार करना और साथ ही गति को सुधारना।

आत्मोद्धार कहो या दीक्षा दोनों एक ही समान है।

जब कोई दीक्षा लेता है तो उनके मन में मोक्ष की चाह तो रहती है। लेकिन उससे पहले वह अपनी आत्मा का उद्धार करना चाहते है क्योंकि सिर्फ यही एक रास्ता है जो हमें मोक्ष पर ले जाता है और वह है 'आत्मोद्धार'।

इसलिए कहा जाता है कि 'आत्मोद्धार है तो आनन्द है।'

◆◆◆

ગુર્જર જૈન જ્યોત

(શાશ્વત ધર્મ ગુજરાતી આવૃત્તિ)

સંપાદક : સુરેશ સંઘવી

ફ્લેટ નં.બી-૧૦૩, બોરસલ્લી એપાર્ટમેન્ટ, ત્રીજે માળ,

ખાનપુર જી.પી.ઓ. નજીક, ખાનપુર, અમદાવાદ-૧. મો. : ૯૭૨૪૫૭૧૦૭૯

ભગવાન મહાવીરે શું કહ્યું ?

લેખક : આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિ 'મધુકર'

અભયદાન

"॥ દાણાણ સેઠ્ઠં અભયપ્પદાણં ॥"

(અભયદાન શ્રેષ્ઠ દાન છે.)

આવશ્યક્તાઓની પૂર્તિ માટે જે બીજાને આપવામાં આવે છે તે 'દાન' છે. આવશ્યક્તાઓ અનેક પ્રકારની એટલે દાન પણ અનેક પ્રકારનાં હોય છે.

અન્નદાન, જલદાન, વસ્ત્રદાન, શયનદાન, આસનદાન, આશ્રયદાન વગેરે. પ્રાચીન સમયનાં પ્રસિદ્ધ દાનો સિવાય કેટલાંક આધુનિક દાનો પણ છે : જેવાં કે શ્રમદાન, (મહાત્મા ગાંધી દ્વારા શરૂ કરાયેલ) ભૂદાન, સંપત્તિદાન (આ બે દાન વિનોબા દ્વારા શરૂ કરાયા છે.) વગેરે.

પરંતુ સૌથી વધારે આવશ્યક તત્વ માણસનું જીવન છે. પાણીમાં ડૂબતો, આગમાં સળગતો અથવા પ્રાણઘાતક પ્રહારોથી ગભરાયેલો માણસ સૌથી પહેલાં જીવિત રહેવું પસંદ કરે છે. માટે, શરણદાન કે પ્રાણદાન સૌથી શ્રેષ્ઠ છે. પાકિસ્તાનના જંગલી અત્યાચારોથી વ્યાકુળ થઈને ભાગેલા બાંગલા દેશના લગભગ એક કરોડ નિર્વાસિતોને ભારતે શરણદાન આપ્યું. શરણદાનથી શરણાર્થી નિર્ભય થઇ જાય છે. એટલા માટે તેને 'અભયદાન' પણ કહે છે.

સૂત્રકૃતાંગ સૂત્ર, ૧/૬/૨૩

પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિ શ્રી તથા પૂજ્ય આચાર્યશ્રીની પાવનકારી નિશ્રામાં સિયાણા - મેંગલવા અને પાંથેડીનગરે સંયમોત્સવ સંપન્ન

સિયાણા : પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્યદેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા પૂજ્ય આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વજી મ.સા.ની પાવનકારી નિશ્રામાં વિશાળ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની ઉપસ્થિતિમાં સિયાણા-મેંગલવા અને પાંથેડીનગરે ઉત્સાહભેર સંયમોત્સવ સંપન્ન થયો હતો.

સંવત ૨૦૭૭ના મહા સુદ ૧૦ને સોમવાર તા. ૨૨-૨-૨૦૨૧ના રોજ સિયાણાનગરે મુમુક્ષુરત્ના કોમલકુમારીને બંને આચાર્ય ભગવંતોએ વિધિવિધાન સાથે રજોહરણ પ્રદાન કર્યો હતો અને નૂતન સાધ્વીજી તરીકે સાધ્વીજી શ્રી વિધિલતાશ્રીજી મ.સા.નું નામકરણ ઘોષિત કરાયું હતું. આ સંયમોત્સવ દરમ્યાન પ્રતિદિવસ જિનાલયમાં વિવિધ પૂજાઓ, અંગરચના અને ભક્તિના કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. લાભાર્થી પરિવારોનું શ્રીસંઘ તરફથી બહુમાન કરાયું હતું. તા. ૨૧-૨-૨૦૨૧ના રોજ ભવ્ય વરસીદાનનો વરઘોડો નીકળ્યો હતો.

મેંગલવા : મુમુક્ષુરત્ના પ્રિયાકુમારીની પ્રવજ્યા નિમિત્તે શ્રી છગનલાલજી કંદનમલજી સંકલેચા પરિવાર દ્વારા તા. ૨૪ ફેબ્રુઆરીથી તા. ૨૮ ફેબ્રુઆરી ૨૦૨૧ સુધી આયોજિત પ્રવજ્યા પ્રિયોત્સવ નિમિત્તે પંચન્હિકા મહોત્સવનું આયોજન કરાયું હતું. જેમાં વિવિધ ધાર્મિક અનુષ્ઠાન સંપન્ન થયા હતા. તા. ૨૫ ફેબ્રુઆરીના રોજ બંને આચાર્ય ભગવંતો આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદનો ભવ્ય સામૈયા સાથે વાજતે-ગાજતે નાસિકના ઢોલના ધબકારે નગર પ્રવેશ કરાવાયો હતો. જ્યાં પુણ્યસમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના ૩૯માં પાટોત્સવ નિમિત્તે ગુરૂગુણાનુવાદ સભાનું આયોજન કરાયું હતું. પૂજ્યશ્રીઓએ પૂજ્ય ગુરૂદેવનું સ્મરણ કરી તેમના ગુણો પર પ્રકાશ પાડ્યો હતો. પાટોત્સવ નિમિત્તે ગૌગ્રાસ અને પાઠ્ય સામગ્રીનું વિતરણ કરાયું હતું. વિજય મુહૂર્તમાં શ્રી સુમતિનાથ જિનાલય પર વિધિવિધાન સાથે ૪૪મી વાર્ષિક તિથિએ ધ્વજારોહણ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. આ પ્રિયોત્સવના પાંચેય દિવસ દરમ્યાન પ્રતિરોજ પૂજાઓ, અંગરચના, ભક્તિભાવના, વરસીદાનનો વરઘોડો, ઘર ઘર તોરણ, હળદર(પીઠી), મહેંદી વિતરણ તેમજ મુમુક્ષુરત્નાને ઘરથી દિક્ષા અપાવવા વાજતે-ગાજતે શોભાયાત્રા વિગેરે જાજરમાન કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. તા.

૨૮-૨-૨૦૨૧ના મંગલમય દિવસે દીક્ષા મંડપમાં મુમુક્ષુરત્ના પ્રિયાકુમારી આવી પહોંચતા જય જયકારના નારાઓથી દીક્ષા મંડપ ગુંજી ઉઠ્યો હતો અને શુભ મુહૂર્તમાં વિધિવિધાન સાથે મુમુક્ષુરત્નાને બંને આચાર્ય ભગવંતોએ રજોહરણ પ્રદાન કર્યો, ત્યારે અડધો કલાક સુધી મુમુક્ષુરત્ના પ્રિયાકુમારીએ હર્ષવિભોર બની નૃત્ય કર્યું હતું. દીક્ષાવિધિ સંપન્ન થવા સાથે નૂતન સાધ્વીજીશ્રીનું નામકરણ ઘોષિત કરાયું હતું. નૂતન સાધ્વીજી શ્રીમાધુર્યલતાશ્રીજી મ.સા.નો જય જયકાર ગુંજી ઉઠ્યો હતો.

આ પ્રિયોત્સવમાં નજીકના ગામો-નગરો સિવાય ગુજરાત, મધ્યપ્રદેશ, મહારાષ્ટ્ર, કર્ણાટક, તામિલનાડુ વગેરે રાજયોમાંથી મોટી સંખ્યામાં શ્રદ્ધાવંત ભક્તો પધાર્યા હતા.

પાંથેડી : શા. ગોકુલચંદ પ્રભાજી બંદામુથા, શા કાનરાજ ફુલચંદજી બંદામુથા પરિવાર દ્વારા શ્રી ગોડીજી પાર્શ્વ-શીતલનાથ જૈન શ્વેતાંબર મંદિરમાં મુમુક્ષુરત્ના પાયલકુમારીની પ્રવજ્યા નિમિત્તે તા. ૨૭-૨-૨૦૨૧ના રોજથી તા. ૩-૩-૨૦૨૧ના રોજ સુધી દરરોજ પંચાન્હિકા મહોત્સવનું ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું. તા. ૧-૩-૨૦૨૧ના રોજ સવારે ૮ કલાકે બંને આચાર્ય ભગવંતો તથા શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદનો ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયા સાથે પ્રવેશ કરાવાયો હતો.

આ મહોત્સવ દરમ્યાન ૪૫ આગમ મહાપૂજન, શ્રી અષ્ટાદશ અભિષેક, ઋણ ઉત્સવ, શ્રી સમક્તિ અષ્ટપ્રકારી પ્રજા, દ્વાદશભાવના પૂજા, શ્રી પાર્શ્વનાથ પંચકલ્યાણક પૂજા, કેશર છાંટણા, છાબ ભરાઇ, સાંજી, મહેંદી વિતરણ, કુમારપાળ મહારાજા સ્વરૂપ આરતી, પ્રતિરોજ ભક્તિભાવના, વરસીદાનનો વરઘોડો વિગેરે ધર્મ પ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. અંતિમ દિવસે સવારે શુભવેળાએ શુભમુહૂર્તમાં બંને આચાર્ય ભગવંતો દ્વારા મુમુક્ષુરત્ના પાયલકુમારી,ને વિધિવિધાન સાથે ભાગવતી પ્રવજ્યા અંગિકાર કરાવાઇ હતી. આચાર્ય ભગંવતોએ દીક્ષા ક્રિયા કરાવ્યા બાદ મુમુક્ષુરત્ના પાયલકુમારીનું નામકરણ નૂતન સાધ્વીજીશ્રી સમત્વલતાશ્રીજીના મ.સા. તરીકે ઘોષિત કરાયું હતું. નૂતન સાધ્વીજીશ્રી સમત્વલતાશ્રીજીના જય જયકારથી મંડપ ગુંજી ઉઠ્યો હતો. દિયાવટની પુણ્યધરા પાંથેડીનગરે પ્રથમવાર દીક્ષા પ્રસંગ ઉજવાતાં વિશાળ સંખ્યામાં ગુરૂભક્તોનું આગમન થયું હતું. સાધ્વીજી શ્રી વિધિલતાશ્રીજી, સાધ્વીજી શ્રી માધુર્યલતાશ્રીજી તેમજ સાધ્વીજી શ્રી સમત્વલતાશ્રીજી મ.સા.ના ચરણોમાં સત્ સત્ વંદન.

પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિ દ્વારા મુમુક્ષુરત્ના સુહાનીકુમારીને તિલોડાનગરમાં દીક્ષા મુહુર્ત પ્રદાન

થરાદ નિવાસી સંઘવી નાગરદાસભાઇ જીવરાજભાઇ પરિવારની કુલદિપિકા મુમુક્ષુરત્ના સુહાનીકુમારી વિરેન્દ્રભાઇ સંઘવીએ શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થમાં તીર્થાધિપતિ શ્રી મહાવીર સ્વામી, દાદા ગુરૂદેવશ્રી, પુણ્ય સમ્રાટશ્રી અને યોગિન્દ્રાચાર્ય શ્રી શાંતિવિજયજી મ.સા.ની સમાધિના દર્શન-પૂજન કર્યા હતા. મુમુક્ષુરત્ના સુહાનીકુમારીએ પુણ્ય સમ્રાટની માસિક પુણ્ય સપ્તમી પર વિશેષ પુજા-આરતી કરી તીર્થ યાત્રા કરી હતી. અહીં બિરાજમાન ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક સંઘશિલ્પી આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા. અને સાધ્વીજીશ્રી અરૂણપ્રભાશ્રીજી મ.સા આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના દર્શન-વંદન કરી આશિર્વાદ પ્રાપ્ત કર્યા હતા. શ્રી ભાંડવપુર તીર્થ પેઢી દ્વારા મુમુક્ષુરત્ના સુહાનીકુમારીનું બહુમાન કરાયું હતું. સંઘવી નાગરદાસ જીવરાજભાઇ પરિવારજનો શ્રી ભાંડવપુરથી પ્રસ્થાન કરી તિલોડાનગરે બિરાજિત ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. પાસે પહોંચ્યા હતા અને જય જયકારના નારાઓ સાથે મુમુક્ષુરત્ના સુહાનીકુમારીનું દીક્ષા મુહુર્ત પ્રદાન કરવા વિનંતી કરી હતી. પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રીએ સંવત ૨૦૭૭ના ચૈત્ર સુદ ૧૩ ને રવિવાર તા. ૨૫-૪-૨૦૨૧ના રોજ શ્રી પેપરાલ તીર્થમાં આયોજિત સામુહિક દીક્ષા આત્મોદ્ધાર-૪ દીક્ષાનું શુભમુહુર્ત પ્રદાન કર્યું હતું. તિલોડા જૈન સંઘ દ્વારા મુમુક્ષુરત્ના તેમજ પરિવારના વડીલોનું બહુમાન કરાયું હતું.

પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રી દ્વારા દાધાલનગરમાં ૪ મુમુક્ષુરત્નાઓના દીક્ષા મુહુર્ત પ્રદાન

દાધાલનગરે બિરાજમાન ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના સાનિધ્યમાં તા. ૭ માર્ચ ૨૦૨૧ના રોજ ચાર મુમુક્ષુરત્નાઓ તથા તેમના પરિવારજનો દાધાલનગરે પહોંચ્યા હતા અને દીક્ષા મુહુર્ત પ્રદાન કરવા વિનંતી કરી હતી. મુમુક્ષુરત્ના તનીષાકુમારી ભરતભાઇ શેઠ (થરાદ), મુમુક્ષુરત્ના આસ્વીકુમારી સુનિલભાઇ વોહેરા (થરાદ), મુમુક્ષુરત્ના પ્રિયાંશીકુમારી અતુલકુમાર મોરખીયા (લાખણી) અને મુમુક્ષુરત્ના આન્સીકુમારી મનીષભાઇ અદાણી (થરાદ)ને સંવત ૨૦૭૭ના ચૈત્ર સુદ ૧૩ને રવિવાર તા. ૨૫-૪-૨૦૨૧ના રોજ શ્રી પેપરાલ તીર્થમાં આયોજિત સામુહિક દીક્ષા આત્મોદ્ધાર-૪ દીક્ષાના મુહુર્ત પ્રદાન કરાયા હતા. ત્યાંથી શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થે પહોંચી તીર્થને જુહારી આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના દર્શન-વંદન કરી આશીર્વાદ પ્રાપ્ત કર્યા હતા.

આત્મોદ્ધાર છે
તો આનંદ છે..

વર્તમાન ઈતિહાસ અજોડ શાસન પ્રભાવક ગુરૂ જયંતસેન જન્મ સ્થળી બનશે ઈન્દ્રપુરી !!

ગુરૂજન્મભૂમિ - અમારી તીર્થભૂમિ શ્રી પેપરાલનગરે ૧૯ મુમુક્ષુરત્નો કરશે આત્મોદ્ધાર

	નામ	ગામ	ઉ. વર્ષ
(૧)	શ્રી વિશ્વકુમાર અશ્વિનભાઈ કોરડીયા	નારોલી (થરાદ)	૧૫
(૨)	અક્ષતકુમાર સમીરભાઈ શેઠ	લુણાલ (થરાદ)	૨૦
(૩)	શ્રી અભિષેક નગીનજી હરણ	રીંગણોદ (મ.પ્ર.)	૨૮
(૪)	શ્રી અક્ષિતકુમાર રોહિતભાઈ સંઘવી	થરાદ	૧૬
(૫)	શ્રી જયંતીલાલ નાથાલા સંઘવી	થરાદ	૭૧
(૬)	શ્રી મૌનકુમાર પિન્ટુભાઈ કોરડીયા	નારોલી (થરાદ)	૧૫
(૭)	શ્રી તીર્થકુમાર અલ્પેશભાઈ મોરખીયા	લાખણી (થરાદ)	૧૩
(૮)	સ્તુતિકુમારી હસમુખભાઈ કોરડીયા	નારોલી (થરાદ)	૨૬
(૯)	માનસીકુમારી ભરતભાઈ વોહેરા	ભલાસરા (થરાદ)	૨૩
(૧૦)	વિરતીકુમારી ચંદ્રકાન્તભાઈ વોહેરા	થરાદ	૨૪
(૧૧)	આયુષિકુમારી જયેશભાઈ ધરૂ	પેપરાલ (થરાદ)	૨૪
(૧૨)	વિરતીકુમારી પ્રણેશભાઈ પરીખ	થરાદ	૧૬
(૧૩)	શ્રુતિકુમારી વિજયભાઈ શેઠ	લુણાલ (થરાદ)	૨૨
(૧૪)	હેત્વીકુમારી નિતીનભાઈ શેઠ	લુણાલ (થરાદ)	૧૬
(૧૫)	તનીષાકુમારી ભરતભાઈ શેઠ	થરાદ	૧૬
(૧૬)	સુહાનીકુમારી વિરેન્દ્રભાઈ સંઘવી	થરાદ	
(૧૭)	આશ્વીકુમારી સુનીલભાઈ વોહેરા	થરાદ	
(૧૮)	પ્રિયાંશીકુમારી અતુલભાઈ મોરખીયા	લાખણી (થરાદ)	
(૧૯)	આન્સીકુમારી મનીષભાઈ અદાણી	થરાદ	

પુણ્ય કોઈને દગો નથી આપતું.... પાપનું કોઈ સગું નથી હોતું..
જે કર્મને સમજે છે એને ધર્મ સમજવાની જરૂર નથી
ધન્ય છે ઉક્ત મુમુક્ષુરત્નોને....

થરાદ નિવાસી દેસાઈ ઉજમશીભાઈ કપુરચંદભાઈ પરિવારના જબીબેન કીર્તિલાલના પુત્રવધુ તથા સ્વર્ગસ્થ દેસાઈ રમેશભાઈના ધર્મપત્નિ મુમુક્ષુરત્ના નીમાબેન સંવત ૨૦૭૭ના વૈશાખ વદ ૫ને રવિવાર તા. ૩૦-૫-૨૦૨૧ના મંગલમય દિવસે અમદાવાદ ખાતે ભાગવતી પ્રવજ્યા અંગિકાર કરી નિર્મળ યાત્રા (સંયમયાત્રા)નો શુભારંભ કરશે.

આહોરનગરે આઠ દીક્ષા સંપન્ન

સંવત ૨૦૭૭ના મહા સુદ ૧૨ ને બુધવાર તા. ૨૪ ફેબ્રુઆરીના રોજ આહોરનગરે (રાજ.) પરમ પૂજ્ય આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયાનંદ સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના વરદ્‌હસ્તે આઠ દીક્ષા સંપન્ન થઈ હતી. જેના નૂતન સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની નામાવલી અત્રે પ્રસ્તુત છે.

	શ્રાવકનું નામ	નૂતન દિક્ષિત નામ
(૧)	શ્રી ધુડાલાલ ભુદરમલ વોરા	મુનિરાજ શ્રી ધર્મદવિજયજી મ.સા.
(૨)	શ્રી શશીકાન્ત નરપતલાલ પારેખ	મુનિરાજશ્રી શ્રમણવિજયજી મ.સા.
(૩)	શ્રી નિસર્ગ નિતીનભાઇ ભંસાલી	મુનિરાજશ્રી નિર્મલવિજયજી મ.સા.
(૪)	શ્રી શાશ્વત સંજયજી મહેતા	મુનિરાજ શ્રી વિધાનવિજયજી મ.સા.
(૫)	શ્રી ગુણીબેન વિનોદભાઇ વોહેરા	સાધ્વીજી શ્રી મુક્તિદિવ્યાશ્રીજી મ.સા.
(૬)	નેહા રવિન્દ્રજી મુથા	સાધ્વીજીશ્રી મુક્તિવીરાશ્રીજી મ.સા.
(૭)	પારીલ પરાગભાઇ (ટીકુભાઇ મોદી)	સાધ્વીજી શ્રી મુક્તિપ્રીતીશ્રીજી મ.સા.
(૮)	હેતવી મિલનભાઇ શેઠ	સાધ્વીજી શ્રી મુક્તિહીમાશ્રીજી મ.સા.

શ્રી પેપરાલ તીર્થે યોજાનાર આત્મોદ્ધાર-૪માં લાભ લેનાર લાભાર્થીપરિવારો

પત્રિકામાં જય જિનેન્દ્રનો લાભ : મુમુક્ષુરત્ન વિશ્વકુમાર અશ્વિનભાઇ કોરડીયા, મુમુક્ષુરત્ન મૌનકુમાર પિન્ટુભાઇ કોરડીયા તથા મુમુક્ષુરત્ના સ્તુતિકુમારી હસમુખભાઇ કોરડીયાના આત્મોદ્ધાર નિમિત્તે કોરડીયા બબીબેન ડાહ્યાલાલ રામચંદભાઇ પરિવાર, નારોલી-ડીસા, પ્રથમ દિવસ બપોરની સાધર્મિક ભક્તિનો લાભ : મુમુક્ષુરત્ના શ્રુતિબેન વિજયભાઇ શેઠ તથા મુમુક્ષુરત્ના હીરલબેન નિતીનભાઇ શેઠના આત્મોદ્ધાર નિમિત્તે શેઠ મોહનલાલ મનજીભાઇ પરિવાર. થરાદ - અમદાવાદ, દ્વિતીય દિવસ વર્ષીદાન શોભાયાત્રા દિવસે સવારની નવકારશીનો લાભ : મુમુક્ષુરત્ના સુહાનીબેન વિરેન્દ્રભાઇ સંઘવીના આત્મોદ્ધાર નિમિત્તે સંઘવી નાગરદાસ જીવરાજભાઇ પરિવાર, થરાદ-અમદાવાદ, બપોરની સાધર્મિક ભક્તિનો લાભ : મુમુક્ષુરત્ના આશ્વીકુમારી સુનિલભાઇ વોહેરાના આત્મોદ્ધાર નિમિત્તે વોહેરા જીવીબેન ચુનીલાલ પીતાંબરભાઇ પરિવાર, થરાદ-અમદાવાદ, આત્મોદ્ધાર તથા ચાતુર્માસ ઘોષણાદિવસ સવારની નવકારશીનો લાભ : મુમુક્ષુરત્ન અક્ષિતકુમાર રોહિતભાઇ સંઘવીના આત્મોદ્ધાર નિમિત્તે સંઘવી બબીબેન મફતલાલ ગગલદાસ પરિવાર, થરાદ-અમદાવાદ, બપોરની સાધર્મિક ભક્તિનો લાભ : મુમુક્ષુરત્ના પારીલબેન ટીકુભાઇ મોદીની ભાગવતી પ્રવ્રજ્યા નિમિત્તે દોશી, શિલ્પાબેન શશિકાન્ત રમણલાલ

પરિવાર, થરાદ-મુંબઇ.

ભવ્યાતિભવ્ય ત્રિવિભાગીય દાન શાળાનો લાભ : મુમુક્ષુરત્ના વિરતીબેન પ્રણેશભાઇ પરીખના આત્મોદ્ધાર નિમિત્તે પરીખ સેવંતીલાલ બાદરમલભાઇ પરિવાર થરાદ-મુંબઇ, (કેસર છાંટણા) મુમુક્ષુરત્નોને કેસર અર્પણ કરવાનો લાભ : મુમુક્ષુરત્ન જયંતિભાઇ નાથાલાલ સંઘવીના આત્મોદ્ધાર નિમિત્તે સંઘવી નાથાલાલ સોભાગચંદભાઇ પરિવાર, થરાદ-અમદાવાદ-મુંબઇ, પ્રથમ દિવસના સિદ્ધચક્રના મહાપૂજનનો લાભ : મુમુક્ષુરત્ના વિરતીબેન ચંદ્રકાન્તભાઇ વોહેરાના આત્મોદ્ધાર નિમિત્તે વોહેરા શાંતિલાલ ચીમનલાલ નથુચંદભાઇ પરિવાર, થરાદ-મુંબઇ, દ્વિતીય દિવસની શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિજી મ.સા. તથા શ્રી જયંતસેનસૂરિજી મ.સા.ની અષ્ટપ્રકારી પૂજાનો લાભ : મુમુક્ષુરત્ના આયુસીબેન જયેશભાઇ ધરૂના આત્મોદ્ધાર નિમિત્તે ધરૂ જયંતિલાલ ચીમનલાલ ભાયચંદભાઇ પરિવાર, પેપરાલ-મુંબઇ, તે સિવાય હીરક સ્તંભ, સ્વર્ણસ્તંભ તથા રજતસ્તંભના કેટલાય ભાગ્યશાળી પરિવારોએ લાભ લીધો છે.
અનુમોદક : શ્રી જયંતસેનસૂરિ શાસન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ - પેપરાલ તીર્થ

શ્રી જયંતસેન મ્યુઝીયમ મોહનખેડા ખાતે પુણ્ય સમ્રાટની વાર્ષિક પુણ્યતિથિએ ત્રિદિવસીય મહોત્સવનું આયોજન

પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્ર સંત સમર્થ ગચ્છાધિપતિ મ્યુઝીયમના સંસ્થાપક પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની વાર્ષિક પુણ્યતિથિ મ્યુઝીયમમાં બહુ જ ભવ્યતાની સાથે ત્રિદિવસીય મહોત્સવના રૂપમાં મનાવવામાં આવે છે. પુનિત દિવસ મહા સુદ-૧૩ પુણ્ય સમ્રાટના પાટોત્સવ નિમિત્તે શ્રી જયંતસેન મ્યુઝીયમમાં ઉપસ્થિત સમસ્ત સાધ્વીજી ભગવંતોના સાંનિધ્યમાં અને ટ્રસ્ટી મંડળની ઉપસ્થિતિમાં પુણ્ય સમ્રાટના પરમ ગુરૂભક્ત મ્યુઝીયમ પ્રત્યે વિશેષ લગાવ ધરાવતા શ્રેષ્ઠીવર્ય શ્રીમાન અમૃતલાલજી પ્યારચંદજી મોદી પરિવાર રાજગઢના શ્રી લોકેન્દ્રજી મોદીએ પરિવાર સાથે પધારી પુણ્ય સમ્રાટની વાર્ષિક પુણ્યતિતિ પર સંપન્ન થવાવાળા મોહત્સવના મુખ્ય દિવસ ચૈત્ર વદ સપ્તમીના અંતર્ગત થવાવાળા સ્વામી વાત્સલ્યના લાભ આજીવન સુધી લેવાની ભાવના વ્યક્ત કરી હતી. તેમની પ્રબલ ભાવના અને ગુરૂભક્તિને જોઇ ટ્રસ્ટ અધ્યક્ષ શ્રી મિલાપચંદજી ચૌધરીએ પાંચ વર્ષ સુધી લાભ આપવાની સહર્ષ સ્વીકૃતિ પ્રદાન કરી ભૂરી ભૂરી અનુમોદના કરી હતી. જયંતસેન મ્યુઝીયમ ટ્રસ્ટ મંડળના યુવા ટ્રસ્ટી શ્રી સંજયજી હરણ, પ્રબંધક શ્રીવિનોદજી જૈન, શ્રી રાહુલજી જૈન વિગેરે સ્ટાફ દ્વારા લાભાર્થીપરિવારનું બહુમાન કરાયું હતું. આભાર વ્યક્ત શ્રી સંજયજી હરણે કર્યો હતો.

મીઠાખળી અમદાવાદ (રાજનગર)ની ધન્યધરા પર નલીની ગુલ્મદેવ વિમાન જેવા ભવ્ય અનુપમ નૂતન જિનાલયનો ખનન ઉત્સવ સંપન્ન

મૂળનાયક શ્રી શાંતિનાથદાદા, શ્રી આદિનાથદાદાની અસીમકૃપા અને તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રચાર્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા., પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ તથા ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોના આશિર્વાદથી મીઠાખળી અમદાવાદ (રાજનગર)ની ધન્યધરા પર નલીની ગુલ્મદેવ વિમાન જેવા ભવ્ય અનુપમ શિખરબંધી નૂતન જિનાલય નિર્માણ માટે વિશાળ ભૂમિની ખરીદી કરાઈ હતી.

સંવત ૨૦૭૭ના પોષ સુદ ૧૧ ને રવિવાર તા. ૨૪-૧-૨૦૨૧ના રોજ શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતે બિરાજમાન ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. પાસે શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ ટ્રસ્ટી મંડળ ગયુ હતું અને ભૂમિપૂજન તથા શિલાન્યાસ માટે મુર્હૂત પ્રદાન કરવા વિનંતી કરી હતી. જેથી પૂજ્યશ્રીએ સંવત ૨૦૭૭ના ચૈત્ર સુદ ૧૧ ને શુક્રવાર તા. ૨૩-૪-૨૦૨૧ના રોજ ભૂમિપૂજન અને સંવત ૨૦૭૭ના ચૈત્ર વદ ૯ ને બુધવાર તા. ૫-૫-૨૦૨૧ના રોજ શિલાન્યાસ માટે મુર્હૂત પ્રદાન કર્યું હતું. જેથી સમસ્ત થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સમાજમાં આનંદોલ્લાસ પ્રવર્તીગયો હતો. અમદાવાદ સંઘ ટ્રસ્ટી મંડળના ટ્રસ્ટીશ્રીઓ મુર્હૂતનો સ્વીકાર કરી પાટણનગરે બિરાજિત મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણાના દર્શન-વંદન કરી ખુશીની યાત્રા અમદાવાદ પહોંચી પૂર્ણ કરી હતી.

નૂતન જિનાલયના પ્રાપ્ત થયેલા ભૂમિપૂજન અને શિલાન્યાસના મુહૂર્તથી જ શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદના આંગણે પ્રસન્નતાનો મહાસાગર લહેરાઈ ગયો હતો અને શાંતિ-આદિ અને ગુરૂવર્યોને નૂતન જિનાલયમાં ગાદીએ બેસાડવા સહુની આતુરતા વધી ગઈ હતી. નૂતન જિનાલયના ભૂમિપૂજન અને શિલાન્યાસના ચઢાવા અંગે મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણા તેમજમાલવમણી વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજી શ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાની નિશ્રામાં શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ આરાધના ભવન, મીઠાખળી અમદાવાદ ખાતે ખનન ઉત્સવ નામકથી ચડાવા બોલાવવા સંવત ૨૦૭૭ના મહા વદ ૭ને શુક્રવાર તા. ૫-૩-૨૦૨૧ના રોજ આયોજન કરાયું હતું. ખનનવિધિ ચડાવાની જાજમનો લાભ સંઘવી શાંતાબેન કેશવલાલ વીરચંદભાઈ પરિવારે લીધો હતો. તા. ૫-૩-૨૦૨૧ના રોજ સવારે ૮-30 કલાકે સકળ

સંઘ લાભાર્થીપરિવારના નિવાસસ્થાન રેજન્સી ફ્લેટ મીઠાખળી ખાતે પહોંચ્યા હતો અને લાભાર્થી પરિવારજનો અને સકળ સંઘ વાજતે-ગાજતે આરાધના ભવન ખાતે પહોંચ્યા હતા અને શુભ મુર્હૂતે જાજમ બિછાવવામાં આવી હતી. આ સમયે ઉપસ્થિત સહુની આંખોમાંથી હર્ષના આંસુ વહી ગયા હતા. અંતરની ઉર્મિઓ આકાશને સ્પર્શીગઇ હતી. થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદમાં અભૂતપૂર્વ ભાવોલ્લાસનું વાતાવરણ છવાઇ ગયું હતું અને દાતા પરિવારોએ ખરા અર્થમાં વિક્રમસર્જક ચડાવા બોલી તેમની લક્ષ્મીનો છૂટા હાથે સદ્‌વ્ય કર્યો હતો. આ પ્રસંગે વિવિધ ચડાવાનો લાભ લેનાર દાતા પરિવારો નામ અત્રે પ્રસ્તુત છે.

ભૂમિ પ્રવેશનો લાભ : સંઘવી શાંતાબેન કેશવલાલ વીરચંદભાઇ પરિવાર, ભૂમિગ્રહણનો લાભ : સંઘવી બબીબહેન કાળીદાસ વીરચંદભાઇ પરિવાર, ભૂમિપૂજનનો લાભ : સંઘવી ભીખીબેન ભુદરમલભાઇ કાળીદાસ (ભંડારી) પરિવાર, ભૂમિખનનનો લાભ અગ્નિખૂણા : વોહેરા ત્રિભોવનદાસ મલાચંદભાઇ પરિવાર, અખંડ દિપકનો લાભ : (ખનન ઉત્સવથી પ્રતિષ્ઠાના આગળના દિવસ સુધી) દોશી વીજુબેન બબલદાસ ઓતમચંદભાઇ પરિવાર, દશદિકપાલ પાટલા પૂજનનો લાભ : બલ્લુ ચંપાબેન જયંતિલાલ મણિલાલ પરિવાર, નવગ્રહ પાટલા પૂજનનો લાભ : વીરવાડીયા શાંતાબેન બાબુલાલ વીરચંદભાઇ પરિવાર, ખનનવિધિ વખતે ભાતીની પ્રભાવના અને આજ વિધિ નિમિત્તે ઘેર ઘેર મીઠાઇના વિતરણનો લાભ : વોરા રસીકલાલ કાળીદાસ પરિવાર (આર.કે.), શિલાન્યાસથી પ્રતિષ્ઠા દિવસ સુધી સાંકળી અઠમની આરાધના કરનાર આરાધકોનું ૧૦૦ ગ્રામ ચાંદીના સિક્કાથી બહુમાન કરવાનો લાભ : વોહેરા ત્રિભોવનદાસ મલાચંદભાઇ પરિવાર, ઉક્ત ચડાવાના લાભાર્થીપરિવારોએ સાધારણ ખાતામાં સારી એવી રકમ લખાવી હતી. જ્યારે સાધારણ ખાતામાં અદાણી છોટાલાલ વીરચંદભાઇ પરિવાર, સંઘવી નરપતલાલ વીરચંદભાઇ પરિવાર, વોરા હીરાલાલ શામજીભાઇ પરિવાર, સંઘવી ભીખાલાલ સ્વરૂપચંદભાઇ પરિવાર, માજની ભોગીલાલ સ્વરૂપચંદભાઇ પરિવાર, અદાણી નરપતલાલ માનચંદભાઇ પરિવાર, વોરા શાંતિલાલ દીપચંદભાઇ પરિવારે લાભ લીધો હતો. ચડાવાના લાભાર્થીપરિવાર સહિત આસોપાલવ પરિવારે અને છોટાલાલ વીરચંદભાઇ અદાણી પરિવારે પણ થરાદ પાંજરાપોળમાં મોટી રકમ લખાવી હતી.

પરિષદ પરિવારના આહ્‌વાન પર....

પરિષદ પરિવારના આહ્‌વાન પર આત્મોદ્ધાર-૪ની અનુમોદનાર્થે તા. ૨૧ માર્ચના રોજથી બેંગ્લોર-વિજયવાડા, મૈસૂર વિગેરે સ્થળોએ મોટી સંખ્યામાં સાંકળી આયંબિલ તપ આરાધનાનો શુભારંભ થઇ ગયો છે.

શ્રી પેપરાલ તીર્થે યોજાનાર આત્મોદ્ધાર-૪માં જોડાયેલ
મુમુક્ષુરત્નોના બહુમાનની રૂપરેખા

૭ માર્ચ : મીઠાખળી અમદાવાદ શ્રીસંઘમાં શક્રસ્તવ અભિષેક શોભાયાત્રા, બહુમાન અને વિદાય સમારોહ, સંવેદના : ઈશાનભાઈ શાહ, સ્વર દેવાંશભાઈ દોશી, કુંજ દોશી, કશીશ ધરૂ, ૨૧ માર્ચ : ડીસા સંઘમાં અનોખી બાંદોલી, બહુમાન સમારોહ અને ભાવવાહી વિદાય સમારોહ, સંવેદના : ભાવિકભાઈ મહેતા, સ્વર : દેવાંશભાઈ દોશી, જૈનભાઈ વારીયા, ૨૮ માર્ચ : વાડજ-અમદાવાદ શ્રી સંઘમાં ભવ્યાતિભવ્ય શોભાયાત્રા, બહુમાન અને ભાવવાહી વિદાય, ૪ એપ્રિલ - ભાયંદર-મુંબઈ શ્રી સંઘમાં શક્રસ્તવ અભિષેક, ભવ્યાતિભવ્ય બાંદોલી, બહુમાન અને ભાવવાહી વિદાય, ૧૧ એપ્રિલ : સુરત નગરે, ભવ્યાતિભવ્ય શોભાયાત્રા, બહુમાન અને વિશિષ્ટ વિદાય સમારોહ.

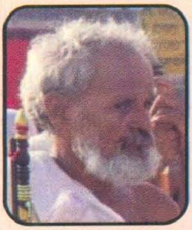

મુનિરાજ શ્રી
પુષ્પદંતવિજયજી મ.સા.

સંવત ૨૦૭૬ના મહા વદ ૫ ને ગુરુવાર તા. ૧૩-૨-૨૦૨૦ના મંગલમય દિવસે ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના વરદ્‌હસ્તે દીક્ષા અંગિકાર કરી આઝાદકુમારમાંથી મુનિરાજ શ્રી પુષ્પદંતવિજયજી મ.સા.નું નૂતન નામધારણ કરી સંયમ યાત્રાનો શુભારંભ કર્યો હતો. જેના એક વર્ષ પૂર્ણ અને બીજા વર્ષમાં પ્રવેશ પ્રસંગે સત્‌ સત્‌ વંદન.. એક સમયના મિત્ર તમો આ જ પ્રભુતાએ રઝળી રહ્યો હું માયા સંગે... હૃદયપૂર્વકના આશિર્વાદ અપેક્ષા સહ...

- સુરેશ સંઘવી (મધુકર મનીષીવાળા)

શ્રી સૌધર્મ બૃહત યોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ થરાદના નૂતન ટ્રસ્ટી મંડળની સર્વાનુમતે રચના

(૧) શ્રી નવીનભાઈ હાલચંદભાઈ દેસાઈ, (૨) શ્રી હિંમતલાલ ચીમનલાલ વોહેરા (૩) શ્રી વસંતભાઈ ગગલદાસ દોશી (૪) શ્રી જયંતિલાલ અમૃતલાલ સંઘવી (એડવોકેટ), (૫) શ્રી મુક્તિલાલ ટીલચંદભાઈ પારેખ, (૬) શ્રી વસંતભાઈ રાજમલભાઈ ધરૂ (૭) શ્રી પ્રવિણભાઈ ચીમનલાલ સંઘવી (૮) શ્રી મહાસુખલાલ હીરાલાલ સંઘવી (૯) શ્રી કાંતિલાલ કાળીદાસ વોરા (૧૦) શ્રી કીર્તીલાલ ગગલદાસ વોરા, (૧૧) શ્રી નરેશકુમાર કાન્તીલાલ ભણસાળી (૧૨) શ્રી પિન્ટુભાઈ બાબુલાલ વોરા (૧૩) શ્રી મહેન્દ્રભાઈ ચીમનલાલ વોરા (બાબાભાઈ), અમદાવાદ (૧૪) શ્રી મહેશભાઈ નરપતલાલ દેસાઈ, અમદાવાદ (૧૫) શ્રી ચંપકલાલ હીરાલાલ વોરા (સુવાસ) અમદાવાદ, (૧૬) શ્રી ચિરાગભાઈ જયંતિલાલ અદાણી, અમદાવાદ (૧૭) શ્રી હરેશભાઈ રાજમલભાઈ વોરા (લાડુ) મુંબઈ, (૧૮) શ્રી જયેશભાઈ હીરાલાલ દેસાઈ, મુંબઈ (૧૯) શ્રી સંજયભાઈ પ્રવિણચંદ્ર વોરા, મુંબઈ (૨૦) શ્રી શૈલેષભાઈ ચંદુલાલ મોદી, મુંબઈ (૨૧) શ્રી નિતીનભાઈ ચુનીલાલ અદાણી, સુરત (૨૨) શ્રી દિનેશભાઈ લહેરચંદભાઈ ભણસાળી, સુરત (૨૩) શ્રી શરદભાઈ જીતુભાઈ વોરા, સુરત (૨૪) શ્રી રમેશભાઈ બાબુલાલ વોરા, નડિયાદ (૨૫) શ્રી સેવંતીભાઈ ભુદરમલ બલ્લુ, આણંદ, (૨૬) શ્રી વિનોદભાઈ કાન્તીલાલ વોરા,

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના આહ્વાનથી ૩૬ દિવસીય સાંકળી આયંબિલ આરાધનાનું વિરાટ આયોજન

તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. - પરિષદ સ્થાપક આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. - પરિષદના પ્રાણ પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ... ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શુભ આશિર્વાદથી અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ આયોજિત આત્મોદ્ધાર-૪ અનુમોદનાર્થે સાંકળી આયંબિલ આરાધનાનું વિરાટ આયોજન કરાયેલ છે. નીચે મુજબની તારીખ અને ગામ-નગરોમાં શ્રી સંઘો અને શાખા પરિષદોમાં ક્રમવાર આયંબિલ આરાધના સંપન્ન થનાર છે.

૨૧ માર્ચ : બેંગ્લોર - કુશલગઢ - આલોટ, ૨૨ માર્ચ : થાંદલા - ખાચરોદ, વિજયવાડા, ૨૩ માર્ચ : મેઘનગર, નાગદા, મૈસુર, ૨૪ માર્ચ : જાંબુઆ, કાલુખેડા, બીજાપુર. ૨૫ માર્ચ : પારા - બડાવદા, સેલમ. ૨૬ માર્ચ : રાણાપુર, રીંગણોદ, રતલામ, કોઈમ્બતૂર, ૨૭ માર્ચ : ભાભરા, પિપલોદા, મદુરાઇ. ૨૮ માર્ચ : જોબટ, ભાટચલાના, હુબલી. ૨૯ માર્ચ : ખટાલી, દલોદા. ૩૦ માર્ચ : અલિરાજપુર, ખરસોદકલા, તેનાલી. ૩૧ માર્ચ : અંજડ - બડનગર, ચેન્નઇ. ૧ એપ્રિલ : કુક્ષી, નીમચ, નેલ્લોર. ૨ એપ્રિલ : બાગ, નિમ્હાહેડા, હૈદરાબાદ. ૩ એપ્રિલ : ટાંડા, નયાગાંવ, ગંટુર. ૪ એપ્રિલ : રિંગનોદ, મંદસોર, પુના. ૫ એપ્રિલ : રાજગઢ, જમુનિયાકલા, કરતજ. ૬ એપ્રિલ : લાબરીયા, જાવટા, લોનાવાલા. ૭ એપ્રિલ : વરમંડલ, ઉજ્જૈન નયાપુરા, દાવણગીરી. ૮ એપ્રિલ : દસઇ, ઉજ્જૈન (નમકમંડી), જાલોર. ૯ એપ્રિલ : ઝકનાવદા, ધાર, નારાયણગઢ. ૧૦ એપ્રિલ : ખવાસા, બડવાહ, રાયપુરિયા. ૧૧ એપ્રિલ : કરવડ, પેટલાવદ, મકસી. ૧૨ એપ્રિલ : ઇન્દોર, પિપલીયામંડી, જોધપુર, નવી દિલ્હી. ૧૩ એપ્રિલ : રતલામ સારંગી, ભીનમાલ. ૧૪ એપ્રિલ : મનાવર, મહિદપુરસીટી (સયાલા), ૧૫ એપ્રિલ : રંભાપુર, મહિદપુર રોડ, વાગરા. ૧૬ એપ્રિલ : બામનીયા, બદનાવર, ચિતાખેડા. ૧૭ એપ્રિલ : ડીસા, થરાદ, સાયલા. ૧૮ એપ્રિલ : અમદાવાદ, લાખણી, ચોરાઉ. ૧૯ એપ્રિલ : નડિયાદ, નારોલી, ભરતપુર. ૨૦ એપ્રિલ : આણંદ, લવાણા. ૨૧ એપિ્રલ : સુરત, નવસારી. ૨૨ એપ્રિલ : રાજકોટ, ધાનેરા. ૨૩ એપ્રિલ : મુંબઇ ખેતવાડી, નેનાવા. ૨૪ એપ્રિલ : ભાયંદર, દાહોદ. ૨૫ એપ્રિલ : પેપરાલ ગુરૂ જન્મભૂમિ.

આયંબિલ આરાધના કરવા માટે સંપર્ક કરો : શ્રી ચિરાગ ભણસાળી મો. ૯૪૨૫૧ ૦૨૨૬૯, શ્રી સુજીતજી સોલંકી મો. ૯૪૪૦૨ ૬૩૫૫૩, શ્રી ભાવિક માજની મો. ૯૩૨૮૮ ૨૬૨૨૫

આનંદો... આનંદો... ગગનભણી લહેરાશે
મારા મુનિસુવ્રતદાદાની પતાકા

શ્રી થીરપુર મંડન મહાવીર સ્વામીને નમઃ, આભુસંઘવી આભૂષણ શ્રી મુનિસુવ્રત સ્વામીને નમઃ, તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી ગુરૂભ્યોનમઃ, પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ર વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ અને ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના આશિર્વાદથી થરાદનગર સ્થિત ચકલીશેરીના નાકા પર આવેલ શ્રી મુનિસુવ્રત સ્વામી જિનાલયને તળિયાથી ઉતારી નૂતન જિનાલયના નિર્માણ કરવાનો લાભ ધર્મશ્રેષ્ઠીવર્ય દેસાઇ ઉજમચંદ મયાચંદભાઇ પરિવારે લીધો છે. જે દાદાનું ઉત્થાપન કરી શ્રી જયાદેવી માતાજી મંદિરના ઉપરના ભાગમાં દાદાને પરોણાગત તરીકે બિરાજમાન કરેલ છે, જે નૂતન જિનાલયનો ભૂમિપૂજન સંવત ૨૦૭૭ના ચૈત્ર સુદ ૧૧ ને શુક્રવાર તા. ૨૩-૪-૨૦૨૧ના રોજ સવારે ૬.૩૧ થી ૧૧.૦૫ કલાક દરમ્યાન સંપન્ન થનાર છે. જ્યારે સંવત ૨૦૭૭ના ચૈત્ર વદ ૭ ને સોમવાર તા. ૩-૫-૨૦૨૧ના રોજ શિલાન્યાસ કાર્યક્રમ સવારે ૬.૩૧ થી ૧૧.૦૦ કલાક દરમ્યાન સંપન્ન થનાર છે. જલદીમાં જલદી ગગનભણી લહેરાશે મારા દાદાની પતાકા.

શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થમાં આચાર્ય
શ્રીમદ્‌વિજય જયાનંદ સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિઠાણાની પધરામણી

સંવત ૨૦૭૭ના મહાવદ ૯ ને રવિવાર તા. ૭-૩-૨૦૨૧ના રોજ ઉત્કૃષ્ટ ક્રિયાપાલક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયાનંદ સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ ઠાણાએ શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થમાં પધરામણી કરી હતી. તીર્થના પ્રવેશદ્વાર પર ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા.ની સાથે ગુરૂભક્તોએ ભવ્ય સ્વાગત કરતાં પેઢી તરફથી આચાર્યશ્રીનો વાજતે-ગાજતે મંગલમય પ્રવેશ કરાવ્યો હતો. તીર્થાધિપતિ શ્રી મહાવીર પ્રભુ, દાદા ગુરૂદેવશ્રી, પુણ્ય સમ્રાટ અને તપસમ્રાટની સમાધિના દર્શન-વંદન કરી આચાર્યશ્રીએ તીર્થના સંપૂર્ણ વિકાસનું અવલોકન કર્યું હતું. વિશેષરૂપથી આગમ મંદિરનું અવલોકન કર્યું હતું.

અહીં બિરાજિત આચાર્યશ્રી શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સાથે ચર્ચા કરવા સાથે તીર્થના વિકાસ કાર્યોની આત્મીય અનુમોદના કરવા સાથે પ્રશંસા વ્યક્ત કરી હતી. દિવસભરની સ્થિરતા બાદ આચાર્યશ્રીએ સુરાણા તરફ વિહાર કર્યો હતો.

ગચ્છાધિપતિ શ્રીની નિશ્રામાં
શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વ - રાજરાજેન્દ્ર ધામમાં વર્ષગાંઠ તથા
ભાગવતી પ્રવજ્યા સમારોહ સંપન્ન (મીરપુર)

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની નિશ્રામાં શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વ રાજરાજેન્દ્રધામમાં તા. ૨૧-૩-૨૦૨૧ના રોજ દ્વિતીય વર્ષગાંઠ વિવિધ કાર્યક્રમો સાથે મનાવાયો હતો. સોનામાં સુહાગા સ્વરૂપ ધામન્દા (મ.પ્ર.) નિવાસી શ્રીમતી રાજકુમારી ચંડાલિયાને પૂજ્યશ્રીના વરદ્‌હસ્તે ભાગવતી પ્રવજ્યા પ્રદાન કરાઈ હતી. તે સાથે મુખ્ય આકર્ષણના અંતર્ગત માતુશ્રી વરજુબાઈ મિલાપચંદજી મધુકર જૈન ભોજનશાળા અને ગુરૂકૃપા આરાધના ભવનનો ભવ્ય ઉદ્‌ઘાટન સમારોહ સંપન્ન થયો હતો. શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વ રાજરાજેન્દ્રધામ વાલેડી નદી પાસે હાઈવે પર સિરોહી - પાવાપુરીની વચ્ચે આવેલ છે. નૂતન નામ સાધ્વીજીશ્રી કરૂણયશાશ્રીજી મ.સા.

રાજગઢ (રાજગૃહી) નગરે પુણ્ય સમ્રાટશ્રીના ૩૯માં પાટોત્સવ અને સાધ્વીજી શ્રી કલ્પલતાશ્રીજી મ.સા.ના દીક્ષાના ૫૫માં વર્ષના પ્રવેશ નિમિત્તે ઉજવણી

તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા., પુણ્યસમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ તેમજ ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આશિર્વાદથી માલવમણી વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજી શ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સરળ સ્વભાવી સાધ્વીજી શ્રી કલ્પલતાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા, સાધ્વીજીશ્રી પુણ્યદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા, સાધ્વીજીશ્રી અવિચલદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા, સાધ્વીજીશ્રી અમિતદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા, સાધ્વીજીશ્રી વિદ્‌વદગુણાશ્રીજી મ.સા., આદિઠાણા, સાધ્વીજીશ્રી દર્શિતકલાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાની પાવનકારી નિશ્રામાં સંવત ૨૦૭૭ના મહા સુદ ૧૩ ને ગુરૂવાર તા. ૨૫ ફેબ્રુઆરીના રોજ રાજગઢ (રાજગૃહી) નગરે પુણ્યસમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના ૩૯માં પાટોત્સવ અને સાધ્વીજીશ્રી કલ્પલતાશ્રીજી મ.સા.ના દીક્ષાના ૫૫માં વર્ષમાં પ્રવેશ

નિમિત્તે ઉજવણી કરાઈ હતી.

આ પ્રસંગે રાજગઢ (રાજગૃહી) નગરના સમસ્ત જિનાલયોમાં સવારે સ્નાત્ર પુજા ભણાવાઈ હતી. સવારે ૯.30 કલાકે મીઠાઈ વિતરણ તેમજ પરિષદભવન ખાતેથી સ્વધાર્મિક બંધુ પરિવારમાં સીધાસામાન સામગ્રીનું વિતરણ કરાયું હતું. આ આયોજન પરિષદ પરિવાર દ્વારા કરાયું હતું. ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અને પરિષદ પરિવાર, પુણ્ય સમ્રાટ ગ્રુપ રાજગઢના સાથીઓએ સાથે મળી પ્રસંગ દિપાવ્યો હતો.

દોશી સ્વરૂપચંદભાઈ ભવાનભાઈ પરિવાર દ્વારા આયોજિત
પદયાત્રા સંઘનું પાટણનગરમાં આગમન

થરાદ નિવાસી દોશી સ્વરૂપચંદભાઈ ભવાનભાઈ પરિવાર દ્વારા થરાદથી કુણઘેર, કુળદેવી માતાજીના દર્શન-વંદન અર્થે પદયાત્રા સંઘનું આયોજન કરાયું હતું. થરાદથી પ્રસ્થાન કરી ગામો-ગામ સ્થિરતા કરી અંદાજિત ૧૬૦ યાત્રિકો સાથે પાટણનગરના પંચાસર જિનાલય સહિત વિભિન્ન જિનાલયો અને પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્યરત્ન મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના દર્શનાર્થે તા. ૧૩.૩.૨૦૨૧ના રોજ વાજતે-ગાજતે પાટણનગરે આગમન થયું હતું. આ પ્રસંગે મુનિરાજશ્રીની નિશ્રામાં એક દિવસીય જિનેન્દ્ર ભક્તિ મહોત્સવ સંપન્ન થયો હતો. જેમાં ચૈત્ય પરિપાટી સહિત વિભિન્ન ધાર્મિક કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. વિશેષમાં સાંજે સંધ્યા ભક્તિ, પરમાત્માને અંગરચના અને ફુલો અને દિપક સહિત અલગ અલગ વસ્તુઓથી જિનાલયની સજાવટ કરાઈ હતી. પરમાત્માની ભક્તિ કેતનભાઈ દેઢીયાએ કરાવી હતી. આ પ્રસંગે દોશી પરિવાર, યાત્રિકો અને સગાંસ્નેહીઓ મોટી સંખ્યામાં ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. સમાજની કેટલીય ધાર્મિક અને સેવા સંસ્થામાં સંકળાયેલ થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના ટ્રસ્ટી અને પ્રભાવશાળી વ્યક્તિત્વ ધરાવતા શ્રી વસંતભાઈ દોશીએ અગાઉથી ઉમંગી ઉત્સાહ સાથે પાટણમાં બિરાજમાન દરેક સમુદાયના સમસ્ત શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોની વૈયાવચ્ચ ભક્તિ અને શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણના સમસ્ત સભ્યો અને ધાર્મિક પંડિતવર્યના પરિવાર સહિત બહારગામથી દર્શનાર્થે પધારતા સહુ બંધુઓ ત્રણેય ટાઈમની સાધર્મિક ભક્તિનો લાભ આપે આ પ્રસંગને દિપાવવા મોટી સંખ્યામાં સગાંસ્નેહીઓ પધાર્યા હતા. મુનિરાજશ્રીના પ્રવચનમાં શ્રી જયંતિલાલ વકીલ (એડવોકેટ) સહિત વક્તાઓએ દોશી પરિવારની ઉદારતાની અનુમોદના કરી અભિનંદન પાઠવ્યા હતા. પંડિતવર્યોનું બહુમાન કરાયું હતું. શ્રી સંઘ પાટણ દ્વારા સંઘપતિ પરિવારનું બહુમાન કરાયું હતું. દોશી પરિવારના કુળદેવી માતાજીની અસીમકૃપાથી આ પ્રસંગ દિપી ઉઠ્યો હતો.

ગિરનાર મહાતીર્થના વિવિધ શિખરોની તપસ્યા સાથે સાધ્વીજી ભગવંતોએ કરેલી યાત્રાઓની વિરલ કથા

સંવત ૧૯૩૬ના વર્ષમાં શ્રી ગિરનાર તીર્થે સંપ્રતિ મહારાજાના જિનાલયમાં શ્રી શાંતિનાથ ભગવાનની પ્રતિષ્ઠા જેમના વરદ્હસ્તે સંપન્ન કરાઈ હતી. તેવા ક્રિયોદ્ધારક તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના સમુદાયના સાધ્વીજી ભગવંતોએ કરેલ યાત્રાની વિરલ કથા છે.

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના વરદ્હસ્તે દિક્ષીત થયેલ સાધ્વીજી શ્રી અનંતદર્ષ્ટાશ્રીજી મ.સા. સાધ્વીજીશ્રી મયુરકલાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સાધ્વીજીશ્રી આજ્ઞાનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૧૨નું ચાતુર્માસ ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની આજ્ઞાથી રાજકોટનગરે સંપન્ન થયું હતું.

રાજકોટનગરનું યશસ્વી ચાતુર્માસ સંપન્ન કરી વિહાર યાત્રામાં રૈવતગીરી પધાર્યા હતા. ગિરનાર ગિરિરાજને દુરથી નીરખીને સાધ્વીજી ભગવંતોના મનના મોરલા નૃત્ય કરવા લાગ્યા હતા અને સંકલ્પ કર્યો હતો કે શક્ય એટલી વધુ યાત્રા કરી કર્મનિર્જરા કરવી. સોનામાં સુગંધરૂપ આયંબિલ તપના તપસ્વી શ્રી હેમવલ્લભ સૂરિશ્વરજી મ.સા. ગિરનાર તીર્થની પ્રતિરોજ યાત્રા કરતા હતા. તેમનું મજબુત આલંબન મળતાં શ્રી ગિરિરાજ તીર્થની નવ્વાણુ યાત્રાનો પ્રારંભ કર્યો હતો.

સાધ્વીજીશ્રી આજ્ઞાનિધિશ્રીજી, સાધ્વીજીશ્રી મૌલિનીનિધિશ્રીજી, સાધ્વીજીશ્રી સુપાર્શ્વનિધિશ્રીજી, સાધ્વીજીશ્રી મૌર્યનિધિશ્રીજી, સાધ્વીજીશ્રી મહાવીરનિધિશ્રીજી, સાધ્વીજીશ્રી આર્યનિધિશ્રીજી, સાધ્વીજીશ્રી ક્ષમાનિધિશ્રીજી, સાધ્વીજીશ્રી રૈવતનિધિશ્રીજી, સાધ્વીજીશ્રી મૃદુનિધિશ્રીજી, સાધ્વીજીશ્રી ઋષભનિધિશ્રીજી, સાધ્વીજીશ્રી પુંડરિકનિધિશ્રીજી અને સાધ્વીજીશ્રી દેવનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા૧૨એ નવ્વાણુ યાત્રા પણ કરી અને વધુમાં ૧૨૫ થી ૧૫૦ યાત્રાઓ પણ કરી.

આ યાત્રાનો આનંદ પ્રાપ્ત કરતાં કરતાં કોઈક સાધ્વીજી ભગવંતોએ છઠ્ઠ કરી સાત યાત્રા કરી તો કોઈ સાધ્વીજી ભગવંતોએ અઠ્ઠમ કરી ૧૧ જાત્રાઓ કરી. આયંબિલ કરી નવ્વાણુ યાત્રા કરી તો કોઈ સાધ્વીજી ભગવંતોએ બે વાર નવ્વાણુ યાત્રા સંપન્ન કરી આ વિરલ યાત્રા કરી. સાધ્વીજી ભગવંતો ઉનાળામાં અડવાણા પગે ચાલીને પેપરાલ તીર્થે યોજાનાર આત્મોદ્ધાર-૪માં પધારશે.

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના સમુદાયના આજ્ઞાનુવર્તીની ૪૫ કે તેથી વધુ વર્ષનો દીક્ષા પર્યાય ધરાવતા જગદંબા સ્વરૂપ શ્રમણી ભગવંતો

પરમ પૂજ્ય તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય પ્રાતઃ સ્મરણીય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીની પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી હેતશ્રીજી મ.સા.નો પરિચય કરાવી શકે તેવા ૪૫ વર્ષ કે તેથી વધુ વર્ષનો દીક્ષા પર્યાય ધરાવતા જગદંબા સ્વરૂપ શ્રમણી ભગવંતોની નામાવલી પ્રસ્તુત કરવાનો પ્રયાસ કર્યો છે, જે આજની પેઢીના શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ દાદા ગુરૂદેવ સાથે ઉક્ત સાધ્વીજી ભગવંતોનું સ્મરણ કરી શકે.

હયાત શાસનરત્નાઓ	દીક્ષા પર્યાય
પૂ. સાધ્વીજીશ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા.	૬૪
પૂ. સાધ્વીજીશ્રી પ્રિયદર્શનાશ્રીજી મ.સા.	૫૭
પૂ. સાધ્વીજીશ્રી કનકપ્રભાશ્રીજી મ.સા.	૫૫
પૂ. સાધ્વીજીશ્રી કલ્પલતાશ્રીજી મ.સા.	૫૫
પૂ. સાધ્વીજીશ્રી સૂર્યોદયાશ્રીજી મ.સા.	૫૦

સ્વર્ગસ્થ શાસનરત્નાઓ	
પૂ. સાધ્વીજીશ્રી કુસુમપ્રિયાશ્રીજી મ.સા	
પૂ. સાધ્વીજીશ્રી કુમુદપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.	
પૂ. સાધ્વીજીશ્રી મહાપ્રભાશ્રીજી મ.સા.	
પૂ. સાધ્વીજીશ્રી દમયંતીશ્રીજી મ.સા.	
પૂ. સાધ્વીજીશ્રી પ્રેમલતાશ્રીજી મ.સા.	૫૪
પૂ. સાધ્વીજીશ્રી પૂર્ણકિરણાશ્રીજી મ.સા.	૫૮
પૂ. સાધ્વીજીશ્રી મહિલાશ્રીજી મ.સા.	
પૂ. સાધ્વીજીશ્રી સુનંદાશ્રીજી મ.સા.	
પૂ. સાધ્વીજીશ્રી કોમલલતાશ્રીજી મ.સા.	
પૂ. સાધ્વીજીશ્રી સુદર્શનાશ્રીજી મ.સા.	
પૂ. સાધ્વીજીશ્રી સૂર્યકિરણાશ્રીજી મ.સા.	૫૧
પૂ. સાધ્વીજીશ્રી સ્નેહલતાશ્રીજી મ.સા.	૫૭
પૂ. સાધ્વીજીશ્રી કૈલાસશ્રીજી મ.સા.	

શ્રી શત્રુંજય ગિરિરાજ પર ડોળી દ્વારા થતી આશાતનાની જવાબદારી કોની ?

પાન-માવા-પડીકી (ગુટકા) ખાઈને શ્રી શત્રુંજય ગિરિરાજ પર સ્થિત પરમાત્માની દેરીઓ અને ચરણ પાદુકાઓ ડોળીવાળાના થુંકવાથી થઇ રહેલ આશાતનાની જવાબદારી કોની ?

જ્યારે ૧૮ દેશના રાજા તેમની વૃદ્ધાવસ્થાના કારણે કેવળ તળેટીની યાત્રા કરીને સંતોષ માનતા હતા. શું તેમની પાસે નોકરોની કમી હતી ? જે તેમને ડોળીમાં બેસાડી યાત્રા ન કરાવી શકત ? સંપૂર્ણ જૈન શ્રાવક-શ્રાવિકા-સંઘ મળીને નિર્ણય લેવો જોઈએ કે યાત્રા કરીશું તો પગે ચાલીને, ડોળીની સહાયતાથી નહીં.

सियाणा में मुमुक्षु की दीक्षा भव्य रूप से

सियाणा । गच्छाधिपति, धर्मदिवाकर श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरिश्वरजी म.सा. एवं आचार्यप्रवर श्रीमद् विजय जयरत्न सूरिश्वरजी म.सा. की शुभनिश्रा में सियाणा नगरी में मुमुक्षु कोमल कुमारी की दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई।

पट्टधरद्वय की निश्रा में मुमुक्षु बहिन का भव्य वर्षीदान वरघोड़ा निकाला गया, जिसमें अनेक नगरों से पधारे श्रद्धालुओं ने अनुमोदना करते हुए दीक्षार्थी की जय-जयकार के घोष से सम्पूर्ण वातावरण को गुँजायमान कर दिया।

दि. 22 फरवरी 2021 को शुभ मुहूर्त्त में मुमुक्षु कोमल कुमारी को रजोहरण प्रदान किया। रजोहरण प्राप्त करके प्रसन्न मुद्रा में मुमुक्षु बहिन ने दीक्षा की सम्पूर्ण विधि की। मुमुक्षु कोमल कुमारी को नूतन नाम साध्वीश्री विधिलताश्रीजी म. सा. घोषित किया गया।

इस प्रसंग पर निकटवर्ती ग्राम नगरों के अतिरिक्त देश के विभिन्न नगरों से भी श्रावक-श्राविकाओं का आगमन हुआ। दीक्षा महोत्सव में प्रतिदिन जिनालय में विविध पूजाएँ, अंगरचना एवं भक्ति की गई। लाभार्थी परिवारों का श्रीसंघ द्वारा बहुमान किया गया।

भाण्डवपुर महातीर्थ (स.सं.) । आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में डूडसी नगर में ध्वजारोहण एवं गुरु श्री गौतम स्वामीजी की पुनः प्रतिष्ठा निमित्त विविध धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न हुए।

दि. 16 फरवरी को मुनिराजश्री अशोक विजयजी म.सा. एवं मुनिराजश्री आनन्द विजयजी म.सा. आदि ठाणा का डूडसी नगर में ढोलबाजों के साथ हर्षोल्लासपूर्वक प्रवेश हुआ। प्रारम्भिक प्रवचन में मुनिराजश्री आनन्द विजयजी म.सा. ने सभी को धर्म का मर्म बताते हुए धर्म के मार्ग पर चलने का संदेश देते हुए कहा कि वीतराग प्रदत्त धर्म मार्ग ही हमारे आत्मकल्याण में सहायक है। उनके बताए मार्ग पर चलकर हम अपना मनुष्य भव एवं अगला भव भी सुधार सकते हैं।

दोपहर में श्री अमीझरा पार्श्वनाथ जिनालय में अठारह अभिषेक करवाए। सभी श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। तीनों समय भोजन, पूजन, अंगरचना एवं भक्ति आदि पूरे दिन का लाभ श्री घेवरचन्द प्रागचन्दजी गाँधी परिवार राजमहेन्द्री ने लिया।

आचार्य देवेशश्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का निश्रा प्रदान करने हेतु भव्य मंगल प्रवेश दिनांक 17 फरवरी 2021 को प्रातः 9 बजे बस स्टेण्ड पर हुआ। नगर निवासियों ने सज-धजकर एवं महिलाओं

ने सिर पर कलश धारण कर अक्षत से बधाते हुए सामैया किया।

आचार्य देवेशश्री, मुनिमंडल एवं गुरुभक्तों के साथ सामैया नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए जैन मन्दिर में दर्शन कर धर्मशाला में धर्मसभा में परिवर्तित हो गया।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आचार्यश्री ने निरन्तरता बनाए रखने पर बल दिया। श्री डूडसी जैन संघ ने आगामी चातुर्मास हेतु आग्रहपूर्ण विनंती की।

दोपहर के विजय मुहूर्त्त में गुरु श्री गौतमस्वामीजी मूर्ति की पुनः प्रतिष्ठा आचार्य देवेशश्री की निश्रा में की गई। ॐ पुण्याहं ॐ पुण्याहं। मन्त्रोच्चारण विधिविधान पूर्वक श्री मिलनभाई विधिकारक-डीसा ने करवाया। दोपहर में श्री गौतम लब्धि महापूजन संगीत की स्वरलहरियों के साथ पढ़ायी गया।

आचार्य देवेशश्री गाँव में स्थित छत्तीस कौम द्वारा संचालित गौशाला का निरीक्षण करने हेतु गाँव के अग्रणियों सहित गौशाला में पधारे। जैन संघ के अग्रणी व वर्तमान सरपंच भी साथ थे। स्थानीय गौशाला के चारों ओर पक्का परकोटा बनाने का निर्णय आचार्यश्री की प्रेरणा एवं निश्रा में लिया गया, जिसका निर्माण लाभ श्री जैन संघ-डूडसी ने लिया। गौशाला निर्माण के लिए दैनिक, मासिक एवं वार्षिक योजना बनाने की चर्चा भी की गई। साथ ही नए नूतन पोस्ट-ऑफिस बनाने की भी चर्चा की गई। दि. 18 फरवरी 2021 को शुभ मुहूर्त्त में मुनिराजश्री आनन्द विजयजी म. आदि ठाणा की निश्रा में जिनालय में अठारह अभिषेक विधिविधान व मन्त्रोच्चारण के साथ किया गया। साथ ही ध्वजारोहण विधिविधान के सात सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर निकटवर्ती ग्राम - नगरों के श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे।

बागरा। आचार्य देवश्री जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा. का दि. 22 फरवरी 2021 को बागरा आगमन पर भव्य मंगल प्रवेश बाजते-गाजते किया गया। सूरिमन्त्राराधक आचार्य देवेशश्री के सामैया का लाभ शा. पुखराजजी सौभागमलजी परिवार, बागरा-चैन्नई-बैंगलोर ने तथा गहुँली का लाभ शा. भँवरलालजी ताराचन्दजी परिवार, बागरा-काकीनाड़ा द्वारा लिया गया। श्री महावीर स्वामी मन्दिर से सामैया में श्राविकाएँ सिर पर मंगल कलश धारण कर चल रहीं थीं। आचार्य देवेशश्री ने मंगलाचरण करते हुए सारगर्भित प्रवचन प्रदान करते हुए सभी पधारे गुरुभक्तों को माँगलिक श्रवण कराया।

कोयम्बटूर। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्, शाखा - कोयम्बटूर को दादा गुरुदेवश्री एवं पुण्य -सम्राटश्री के शुभ आशीर्वाद से कोयम्बटूर रेलवे स्टेशन पर प्याऊ निर्माण की आज्ञा प्राप्त हुई है। परिषद् अति शीघ्र ही एक अत्याधुनिक भव्य प्याऊ का निर्धारित स्थान पर निर्माण कराएगा।

वासणा (स.सं.)। ऊँझा नगर में श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के गुरु

मन्दिर का प्रथम ध्वजारोहण मुनिराजश्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा. की पावन निश्रा में सम्पन्न हुआ।

इस प्रसंग पर श्री राजेन्द्रसूरि गुरु मन्दिर ट्रस्ट - ऊँझा की ओर से विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रातः ध्वजा की शोभायात्रा निकाली गई, पश्चात् गुरु मन्दिर में गुरुमूर्ति के अभिषेक और पूजन आदि धार्मिक अनुष्ठान हुए। ध्वजा के लाभार्थी भीनमाल निवासी सेठ जावन्तराज शिवराजजी परिवार की ओर से गुरु मन्दिर के शिखर पर विधिविधान के साथ ध्वजारोहण किया गया। कार्यक्रम में ऊँझा श्रीसंघ के विभिन्न समुदायों के अनेक सदस्यगण उपस्थित रहे। मुनिराजश्री के दर्शनार्थ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी की धर्मपत्नी श्रीमती जशोदाबेन पधारी एवं दर्शन-वन्दन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

मोहनखेड़ा वाले राजेन्द्र सुरीश्वरजी म.सा. की अष्टप्रकारी पूजा का आयोजन किया गया

नागपुर। स्थानीय रामदास पेठ जैन मंदिर में दि. 20 जनवरी (सातम) को मोहनखेडा वाले राजेन्द्र सुरिश्वरजी म.सा. की अष्टप्रकारी पूजा का आयोजन किया गया। पूजा कार्यक्रम में अशोक डोसी, संजय डोसी, चिराग संघवी, संभव डोसी, तपन नाहर, आर.डी. पारख, स्नेहलता डोसी, मधु डोसी, संगीता संघवी ने पढ़ाई। पूजा की क्रिया हंसा बनह पारेख, हंसा डोसी, भावना मानावत ने सम्पन्न करवाई।

सजावट गौतमजी बेद, नीतू बेद, मनीषा गांधी के निर्देशन में हुआ। गहुली एवं पुष्प सज्जा सुशिला बोथरा, शशी पटेल, मधु भाचावत ने करी। पूजा के दरमियान रूप लताजी गोलछा ने भक्ति गीत स्व. नलिनजी संघवी को समर्पित किया। उपस्थित गुरु भक्तों को लड्डू की प्रभावना श्री महादेव राजजी सिंघवी एवं मानकचंदजी सेठिया द्वारा दी गई। कार्यक्रम में निखिल कुसमगर, विनोद फतेहपुरिया, प्रफुल्ल खिवसरा, संजय पगारिया, संभव पगारिया, अभयराज कोठारी, देवेन्द्र पारेख, रेखा पीपाड़ा, दिलीप पंचोली आदि उपस्थित थे।

परिषद प्रांगण से

आत्मोद्धार अनुमोदना के लिये परिषद द्वारा आयंबिल आराधना का विराट आयोजन

पेपराल। पेपराल में दि. 25 अप्रेल चैत्र सुदी तेरस को आयोजित संयम दिवस आत्मोद्धार-4 की अनुमोदना एवं निर्विघ्न परिपूर्णता के लिए अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के आह्वान पर 36 दिवसीय सांकली आयंबिल किया जा रहा है। यह 21 मार्च से प्रारंभ हो गया है तथा 25 अप्रेल तक आराधना में रहेगा वर्तमान गच्छाधिपति श्रीमद् विझय नित्यसेन सूरिश्वरजी म.सा. तथा जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरिश्वरजी म.सा. ने आराधना कार्यक्रम को सान्निध्य प्रदान किया है।

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू, वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रकाश हीराणी तथा राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुधीर लोढ़ा ने बताया कि आराधना में देश भव के श्री संघो एवं शाखा परिषदों में क्रमवार सामूहिक आयंबिल तपस्या का आयोजन किया जा रहा है।

अधिक से अधिक आयंबिल 20 मुमुक्ष रत्नों के संयम अंगीकार संकल्प को संबल प्रदान करेंगे। इस पर जाप जीवन में चारित्र पद का पुण्य बंध करने हेतु निम्न मंत्र की 10 माला के जाप भी कर सकते हैं।

ॐ ह्रीं नमो चारितस्स

साथ ही आयंबिल तप कर जिन शासन प्रभावना का स्वर्णिम अध्याय स्थापित करें।

आत्मोद्धार हेतु सांकली आयंबिल आराधना का कार्यक्रम तप इस प्रकार प्रचारित किया गया है-

* 21 मार्च कुशगढ़ + आलोट, * 22 मार्च थांदला + खाचरौद * 23 मार्च मेघनगर+ नागदा जंक्शन * 24 मार्च झाबुआ+कालुखेड़ा * 25 मार्च पारा+

बड़ावदा * 26 मार्च राणापुर+रिंगनोद (रतलाम) * 27 मार्च भाबरा+ पिपलौदा * 28 मार्च जोबट+ भाटपचलाना * 29 मार्च खट्टाली+ दलौदा * 30 मार्च अलिराजपुर+खरसौदकला * 31 मार्च अंजड + बड़नगर * 1 अप्रेल कुक्षी+नीमच * 2 अप्रेल बाग+ निम्बाहेड़ा * 3 अप्रैल टाण्डा + नयागांव * 4 अप्रैल रिंगनोद + मन्दसौर * 5 अप्रेल राजगढ़ + जमुनियाकला * 6 अप्रैल लाबरिया + जावरा * 7 अप्रैल वरमण्डल + नयापुरा उज्जैन * 8 अप्रैल दसाई + उज्जैन नमकमण्डी * 9 अप्रैल झकनावदा + धार * 10 अप्रैल खवासा+ बडवाह * 11 अप्रैल करवड + पेटलावद * 12 अप्रैल इंदौर * 13 अप्रैल रतलाम * 14 अप्रैल रतलाम मनावर+ महिदपूर सिटी * 15 अप्रैल रम्भापुर+महिदपुर रोड़ * 16 अप्रैल बामनिया+बदनावर * 17 अप्रैल डीसा+ थराद * 18 अप्रैल अहमदाबाद + लाखणी * 19 अप्रैल नडियाद + नारोली * 20 अप्रैल आनन्द + लवणा * 21 अप्रैल सूरत+नवसारी * 22 अप्रैल राजकोट + धानेरा * 23 अप्रैल मुम्बई खेतवाडी + नैनावा * 24 अप्रैल भायन्दर+ दाहोद * 25 अप्रैल पेपराल गुरुजन्मभूमि।

आराधना हेतु सम्पर्क सूत्र चिरागजी भंसाली 9425102269, श्री सुजीतजी सोलंकी 9440263553 तथा श्री भाविकजी माजनी 9328826225 हैं।

पाटण में गुरुदेव का 38 वां पाटोत्सव मनाया

पाटण। गुजरात के पाटण नगर में मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी महाराज आदि श्रमण-श्रमणी भगवंत ठाणा-36 की पावन निश्रा में त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की ओर से युग प्रभावक पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. के आचार्य पद का 38 वां पाटोत्सव गुरुवार को भव्य रूप से मनाया गया। इस प्रसंग पर त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में ज्ञान मंडप बनाया गया एवं उसमें पाट पर

गुरुदेव श्री की प्रतिमा स्थापित कर उनके द्वारा लिखित लाहित्य को दर्शनार्थ रखा गया एवं ज्ञान मंडप की फूलों से सजावट

की गई, इस ज्ञान मंडप का लोकार्पण मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा. की पावन निश्रा में पाटण जिला कलेक्टर सुप्रीतसिंघ गुलाटी द्वारा सम्पन्न हुआ, पाटोत्सव के निमित्त ज्ञान मंडप में अनेक समुदाय के श्रमण-श्रमणी भगवंतों की पावन निश्रा में गुरु गुणानुवाद हुए जिसमें मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. ने जैन शासन में आचार्य पद के महत्व का अनेक शास्त्रों के पाठ सहित वर्णन किया, ज्ञान मंडप में साहित्य के दर्शनार्थ नगरपालिक चीफ ऑफिसर सहित जैन संघ एवं स्थानीय नागरिक बड़ी संख्या में पधारे, 38 वें पाटोत्सव के कार्यक्रम का लाभ गुजरात के नेनावां नगर निवासी दलीचंदजी नथमलजी कटारिया संघवी परिवार की ओर से लिया गया। प्रसंग को लेकर जीवदया, अनुकंपा दान, आयंबिल तप आराधना, परमात्मा की भव्य अंगरचना सहित अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए, कार्यक्रम में युग प्रभावक पुण्य सम्राट गुरुदेव की आरती का लाभ लाखणी त्रिस्तुतिक जैन संघ की ओर से लिया गया, लाभार्थी परिवार के अग्रणी एवं गुरु जन्म भूमि भरतपूर तीर्थ ट्रस्ट के उपाध्यक्ष बाबुभाई कटारिया संघवी ने पाटोत्सव निमित्त आयोजित कार्यक्रम का लाभ मिलने पर प्रसन्नता व्यक्त की।

श्रीमती किरण प्रदीपजी कटारिया का अवसान

रतलाम। परम गुरुभक्त श्रीमती किरण प्रदीपजी कटारिया (रतलाम) का अवसान विगत दिनों हो गया। श्रीमती किरण कटारिया का अवसान निश्चित रूप से संघ, समाज, परिषद व परिवार के लिए अपूर्णनीय क्षति है। आपने पुण्य सम्राट व गुरुभगवन्तों तथा साधु-साध्वीजी भगवंतों की खूब भक्तिभाव से विशेषकर चिकित्सा के क्षेत्र में वैय्यावच्च की। पुण्य सम्राट से संबंधित हर कार्यक्रम में आप पति-पत्नी अवश्य उपस्थित रहते तथा आहार पानी व्होराकर सुपात्र दान का भी खूब लाभ लेते थे। अत्यंत सरल, सहज, मिलनसार, धार्मिक, सामाजिक व पारिवारिक कार्यों में अग्रणी की भूमिका निभाने वाली किरणजी एवं परिवारजनों ने गुरुदेव के रतलाम चातुर्मास में चारों मास लगभग श्री जयंतसेन धाम चातुर्मास स्थल पर सेवा देकर गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्य गुरुदेव ने अपने अंतिम समय अहमदाबाद से भांडवपुर जाने के एक दिन पूर्व अहमदाबाद अस्पताल में प्रदीपजी व किरणजी से लगभग एक घंटे चर्चा कर खूब आशीर्वाद दिया। 59 वर्षीय किरणजी इंदौर परिषद के वरिष्ठ श्री यशवंतजी बोराना की छोटी बहन थी। 'शाश्वत धर्म' की और से सादर श्रद्धाजंली।

मोदी परिवार को म्यूजियम पर विराजित साध्वीश्री कल्पलताश्रीजी म.सा., साध्वीश्री अविचलदृष्टाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री अमितदृष्टाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विद्वतगुणाश्रीजी म.सा., साध्वीश्री दर्शितकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा ने आशीर्वचन देते हुए पुण्य सम्राट के प्रति अनन्य भक्ति को और आगे बढ़ाने हेतु प्रेरणा दी तथा बहुत-बहुत शुभकामना देते हुए अनुमोदना की। श्री जयन्तसेन म्यूजियम, ट्रस्टमंडल की ओर से लाभार्थी परिवारजन का बहुमान युवा ट्रस्टी श्री संजयजी हरण, प्रबंधक विनोद जैन, राहुल जैन आदि स्टॉफ द्वारा किया गया।

* **महिदपुर।** पुण्य सम्राट के 38 वें आचार्य पद पाटोत्सव दिवस पर श्री राजेन्द्रसूरी ज्ञान मंदिर में सुरेश छजलानी परिवार की ओर से जयन्तसेन सूरि अष्टप्रकारी पूजा श्री राजेन्द्र महिला मण्डल द्वारा पढ़ाई गई। साध्वी डॉ. अमृतरसाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 के महिदपुर चातुर्मास के उपलक्ष्य में 'वर्धमान शक्रस्तव आदि स्त्रोत' पुस्तक का प्रकाशन त्रिस्तुतिक श्रीसंघ व परिषद परिवार की ओर से साध्वीवर्या के मार्गदर्शन व प्रेरणा से किया गया। पाटोत्सव दिवस पर मंदसौर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ में साध्वीवर्या डॉ. श्री अमृतरसाश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में पुस्तक का वितरण किया गया। श्री नरेन्द्र धाड़ीवाल ने बताया कि पुस्तक के प्रकाशन पर गच्छाधिपति प.पू. नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने आशीर्वचन प्रदान करने हेतु कहाकि यह पुस्तक काफी उपयोगी है। निष्काम भाव से स्त्रोत का पाठ करें तो निश्चित ही जल्द फलदायी होगी। श्री राजेन्द्र महिला मण्डल ने गोपाल गौशाला में गायों को गुड़ व खल का आहार कराया।

* **महिदपुर।** नगर के श्री शत्रुंजय आदिनाथ तीर्थधाम किला मंदिर में वार्षिक ध्वजारोहण समारोह प.पू. साध्वीवर्या मुक्तिदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा -12 की निश्रा में सम्पन्न हुआ। मूलनायक आदिनाथ परमात्मा सहित 47 देहरियों पर ध्वजारोहण किया गया। रमेशचन्द्र वर्धमान गादिया परिवार ने मूलनायक भगवान की धर्मध्वजा फहराई व जैन श्रीसंघ के स्वामी वात्सल्य का लाभ लिया।

* **मैसूर।** परमात्मा के दीप प्रज्ज्वलन के साथ श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ परीक्षा का आयोजन हमारे मैसूर शहर में किया गया। मैसूर मूर्तिपूजक संघ के अध्यक्ष अशोकजी दातेवाडिया, परिषद सचिव शैलेशजी धाकड़, अमृतलालजी राठौड़, अशोकजी वोरा, उत्तमजी सेठिया, जोमतराज वोरा, नितेश गुरुजी, राष्ट्रीय संगठनमंत्री बबीताबेन सालेचा, दक्षिण अध्यक्ष ऊषाबेन वोरा, अध्यक्ष कंचनबेन जोटा की उपस्थिति में परीक्षा प्रश्न-पत्रों का विमोचन किया गया। मैसूर शहर के

64 परीक्षार्थियों ने अति उत्साह के साथ परीक्षा में भाग लिया।

नवयुवक एवं महिला परिषदों द्वारा परीक्षार्थियों को परीक्षा निमित्त उपहार प्रदान किया गया। – सीमा मलानी

* लोनावला (महा.)। में दादा गुरुदेव की गुरु सप्तमी धूमधामपूर्वक मनायी गई। प्रातः भक्तामर व गुरु गुण इक्कीसा का पाठ, सामूहिक सामायिक, अष्टप्रकारी पूजा तथा रात्रि महाआरती हुई। महाआरती का चढ़ावा आहोर निवासी श्री पारसमलजी बालचंदजी ओस्तवाल परिषद द्वारा लिया गया। गुरुभक्तों में उत्साह रहा।

– पारस परिषद

ओराजी का निधन

* रत्तागढ़खेड़ा (रतलाम)। पुण्य सम्राट के अनन्य भक्त एवं क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यापारी श्री पूनमचंदजी ओरा का पिछले दिनों निधन हो गया। उनकी अंतिम यात्रा में परिजनों, रिश्तेदारों सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से भारी संख्या में लोग शामिल हुए।

श्री ओरा जैन समाज के अलावा व्यापारिक, सामाजिक एवं कृषि के क्षेत्र में काफी लोकप्रिय थे। वह सादगी की अनूठी मिसाल थे। उनका जैन समाज के अलावा किसानों से काफी गहरा सामाजिक सरोकार था।

श्री ओरा ने पुण्य सम्राट की प्रेरणा से निजी रूप से गांव में श्री राज राजेन्द्र ज्ञान मन्दिर (उपाश्रय) का निर्माण करवाया। अपने परिजनों, स्वजनों एवं इष्टमित्रों को कई तीर्थ यात्राएँ करवाई। पास ही के ग्राम रूनिजा स्थित अपने पूर्वजों द्वारा निर्मित अतिप्राचीन तीर्थ श्री शांतिनाथ जिनालय में पुण्य सम्राट की प्रेरणा से ध्वजारोहण एवं उस दिन के स्वामी वात्सल्य के आजीवन लाभार्थी होने का सौभाग्य प्राप्त किया। उनके पुत्र श्री धनपाल ओरा ने उनकी स्मृति में दानराशि भेंट की।

पुण्य सम्राट का 38 वां पाटोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया

* कुक्षी। नगर में गुरुवार को विभिन्न धार्मिक आयोजनों के साथ पुण्य सम्राट का 38 वां पाटोत्सव मनाया गया। नगर में प्रातः से गुरु बिम्ब के दर्शन पूजन के लिये भक्तों की भीड़ मंदिर में लग गई। प्रातः तालनपुरजी तीर्थ में स्नात्र पूजन के पश्चात् गुरुदेव का अष्टप्रकारी पूजन हुआ पश्चात् साधार्मिक वात्सल्य का आयोजन

श्री संघ सौरभ

म्यूजियम पर पाटोत्सव तथा वार्षिक पुण्यतिथि के कार्यक्रम सफल हुए

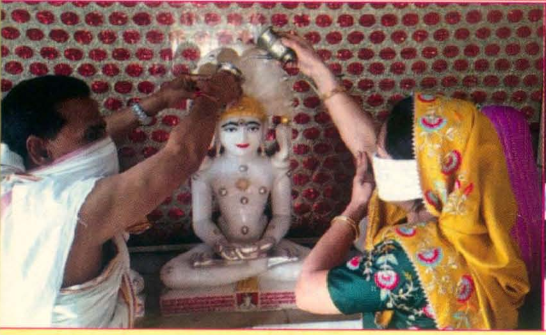

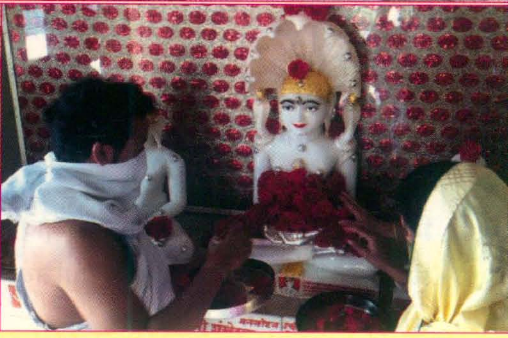

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ स्थित श्री जयन्तसेन म्यूजियम परिसर के मंदिरजी में म्यूजियम के संस्थापक आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. का 38 वाँ पाटोत्सव माघ सुदी तेरस अत्यंत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर साध्वीश्री कल्पलता श्रीजी म.सा. आदि ठाणा, साध्वीश्री पुण्यदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, साध्वीश्री अविचलदृष्टाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, साध्वीश्री अमितदृष्टाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, साध्वीश्री विद्वतगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, साध्वीश्री दर्शितकला श्रीजी

म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में श्री वर्धमान शक्रस्तव महाभिषेक एवं नवकारसी का आयोजन रखा गया। जिसमें सैंकड़ों गुरू भक्तों के द्वारा सम्मिलित होकर अभिषेक-पूजा - अर्चना-आरती-शांति कलश इत्यादि का लाभ लाभार्थियों के द्वारा लिया गया तथा श्री वर्धमान शक्रस्तव महाभिषेक का पूरा लाभ साध्वीश्री समदृष्टाश्रीजी म.सा. के सांसारिक परिवार थराद निवासी श्री चिमनलालजी नाथूलालजी परिवार द्वारा लिया गया। साध्वीश्री कल्पलताश्रीजी महाराज साहब का 55 वाँ संयम प्रवेश निमित्त विजयवाड़ा निवासी श्री रमेशजी महालक्ष्मी मेटल द्वारा साधु-साध्वी वैयावच्च फण्ड में 11000 भेंट किए गए। उपस्थित श्रद्धालुजनों को प्रभावना स्वरूप राशि 150 दी गई।

श्री जयन्तसेन म्यूजियम, ट्रस्टमंडल की ओर से युवा ट्रस्टी श्री संजयजी हरण द्वारा सभी भक्तजनों का आभार व्यक्त किया गया, साथ ही लाभार्थियों की अनुमोदना की गई।

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ म्यूजियम। राष्ट्रसंत समर्थ गच्छाधिपति म्यूजियम के संस्थापक आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरिश्वरजी महाराज साहेब की वार्षिक पुण्यतिथि म्यूजियम में बहुत ही भव्यता के साथ त्रिदिवसीय महोत्सव के रूप में मनाई जाती है।

पुनीत दिवस माघ सुदी तेरस पुण्य सम्राट के पाटोत्सव निमित्त में श्री जयंतसेन म्यूजियम में उपस्थित सभी साध्वीजी के सान्निध्य में एवं ट्रस्टमंडल की उपस्थिति में पुण्य सम्राट के परम गुरु भक्त, श्रीमान् अमृतलालजी प्यारचंदजी मोदी परिवार राजगढ़ के श्री लोकेन्द्रजी मोदी ने परिवार के साथ पधारकर पुण्य सम्राट की वार्षिक पुण्यतिथि पर होने वाले त्रिदिवसीय महोत्सव के मुख्य दिवस वैशाख वदी

सप्तमी के अंतर्गत होने वाले स्वामीवात्सल्य का लाभ आजीवन तक लेने हेतु भावना व्यक्त की। आपकी प्रबल भावना एवं गुरुभक्ति को देखकर ट्रस्ट अध्यक्ष श्री मिलापचंदजी चौधरी ने फ़िलहाल 5 वर्षों तक का लाभ देने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर बहुत-बहुत अनुमोदना व्यक्त की।

इस शुभ प्रसंग पर उपस्थित लाभार्थी

किया गया। सायंकाल में सिमंधर स्वामी मंदिर में कुक्षी तिर्थाधिपती शांतिनाथ प्रभु की गुरुवारिय महाआरती एवम् पुण्य सम्राट की सामूहिक आरती की गई।

* **राणापुर।** श्री मुनि सुव्रत स्वामी जिनालय राणापुर की चौथी वर्षगांठ के उपलक्ष्य में मंदिरजी में अठ्ठारह अभिषेक का आयोजन सम्पन्न हुआ। विभिन्न प्रकार की औषधियों के द्वारा करवाए गए इन अठ्ठारह अभिषेक में लाभार्थियों ने उत्साह के साथ विधिपूर्वक लाभ लिया। कमलेश कटारिया, पवन नाहर के स्तवनों से पूरे मन्दिर में लाभार्थियों ने नाचते-झूमते भगवान की भक्ति की।

* **राणापुर।** स्थित श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय यतीन्द्र ज्ञान मंदिर की चतुर्थ वर्षगांठ के उपलक्ष्य में रथ सहित भगवान का वरघोड़ा निकाला गया। भगवान के सन्मुख समाज के प्रत्येक घर से अक्षत तथा श्रीफल की गहुंली की गई। गरबा, जयकार आदि का प्रदर्शन हुआ। मंदिर पहुंचने पर आरती की बोलियों के बाद आरती हुई। दोपहर में पूजन तथा रात्रि में पार्श्व ग्रुप तथा परिषद परिवार ने भक्ति का आयोजन किया। अभिषेक के पश्चात् प्रभावना के लाभार्थी श्री सज्जनलालजी कटारिया परिवार श्री चंद्रसेनजी कटारिया परिवार थे।

* **राणापुर।** श्री मुनीसुव्रत स्वामी जिनालय यतीन्द्र ज्ञान मंदिर राणापुर में शनिश्चरी अमावस्या के उपलक्ष्य में विशेष आयोजन हुए। सुबह भगवान का टेसू के पुष्प के रंगों से अभिषेक किया गया। जिसके बाद केसर पूजन, मरवाह के पुष्प पूजन एवं आरती की बोलियां हुई। समाजजनों ने उत्साह के साथ लाभ लिया। कार्यक्रम के पश्चात् प्रभावना वितरित की गई।

पाटण में गुरूदेवश्री का 68 वां दीक्षा वर्ष मनाया

पाटण। गुजरात के पाटण नगर में पंचासरा जैन मंदिर के पास स्थित त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में महासुद 4 सोमवार को गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य युग प्रभावक पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का 68 वां दीक्षा वर्ष को मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणी भगवंत ठाणा 36 की पावन निश्रा में त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की ओर से मनाया गया, इस प्रसंग पर पंचासरा पार्श्वनाथ भगवान की भव्य

अंगरचना एवं उपाश्रय में गुरुदेव की प्रतिमा के सामने आकर्षक रंगोली बनाई गई, दोपहर में दिक्षा वर्ष निमित्त गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ जिसमें मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. ने गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के द्वारा सम्पन्न शासन प्रभावना के कार्य एवं उनकी साधना-आराधना का वर्णन करते हुए गुणानुवाद करे, दिक्षा वर्ष निमित्त श्रीसंघ की ओर से जीवदया आदि के कार्यक्रम किए गए।

मुमुक्षु बहन का पाटण में हुआ पदार्पण

पाटण। गुजरात के पाटण नगर में पंचासरा जैन मंदिर के पास स्थित त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में बिराजमान मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी महाराज, मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी महाराज आदि श्रमण-श्रमणी भगवंत ठाणा के दर्शनार्थ आज 24 मार्च बुधवार को गुजरात के थराद (थीरपुर तीर्थ) निवासी आस्वीकुमारी सुनील कुमार वोहेरा का पदार्पण हुआ, मुमुक्षु बहन ने पाटण में बिराजमान सभी श्रमण-श्रमणी भगवंत के दर्शन वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किए। मुमुक्षु बहन के पाटण आगमन पर त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की ओर से अलकेशभाई आदि ने उपस्थित रहकर बहुमान किया, मुमुक्षु बहन की दीक्षा पुण्य सम्राट

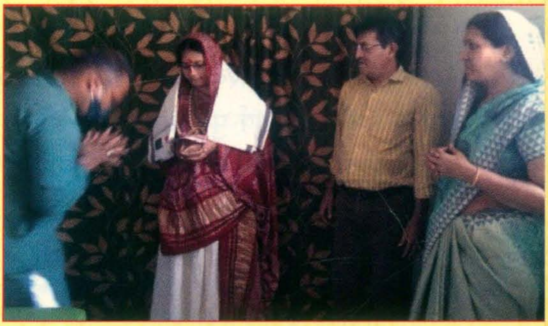

युग प्रभावक गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की जन्मभूमि पेपराल तीर्थ में गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में आयोजित आत्मोद्धार (सामुहिक दीक्षा महोत्सव) में चैत्र शुक्ल 25.4.2021 को सम्पन्न होगी।

जैन विश्व

* कर्नाटक के हासन जिले में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के होयसल काल के प्राचीन जैन मंदिर का पता लगा है।

* छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल रामपुर में आयोजित आचार्य महाश्रमण मर्यादा महोत्सव में शामिल हुए। उनने इसे राज्य का सौभाग्य बताया।

* यूपीएससी की परीक्षा 2019 में देवघर झारखण्ड के रवि जैन ने टॉप किया।

* जयपुर के घाट की गुणी इलाके में दिगम्बर जैन मंदिर पार्श्वनाथ में चोर मुख्य द्वार का पाँच सौ वर्ष पुरानी अष्टधातु की प्रतिमा तथा पाषाण से निर्मित 30 प्रतिमाएँ चुरा ले गये। साथ ही दानपेटी से 65 हजार रु. नकद व 2 किलो चांदी का सामान भी ले गये।

* आचार्य श्री पुष्पदन्तसागरजी म.सा. ने सोनकच्छ में कहा कि जो मन की मानी तो मर गये, मन को मारा तो तर गये। मन को वश में करना सीखें।

* मदुरै (तिरूनेलवेली)में आचार्य श्री कीर्तिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में मुनि श्री चैतन्यप्रभा विजयजी की बड़ी दीक्षा हुई। – दिनेश सालेचा

* राजस्थान के प्राचीन तीर्थ श्री जगजयवंत जीरावला तीर्थ में आचार्यश्री रविरत्नसूरीश्वरजी म. व आचार्य श्री जिनेशरत्नसूरीश्वरजी एवं आचार्य श्री रत्नसंजयसूरीश्वरजी म. के सान्निध्य में चतुर्थ सालगिरह पर ध्वाजारोहण कार्यक्रम हुआ। जिसमें राजस्थान के गोपालन मंत्री श्री प्रदीप भाया भी उपस्थित थे।

* कोयम्बटूर स्थित जैन इण्टरनेशनल ट्रेड आर्गेनाइजेशन (जीतो) का महिला विंग का शपथ समारोह अध्यक्ष श्री रमेश बाफणा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। – ललित जालोरी

* मदुराई जैन संघ की विनती पर आचार्यश्री कीर्तिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. तथा श्री तपप्रभविजयजी म. की निश्रा में चैत्री मास की नवपद ओली मदुराई में किये जाने की स्वीकृति दी है।

* मध्यप्रदेश जैन पत्रकार संघ में श्री दिलीप दरडा को प्रदेश सहसचिव के पद पर मनोनीत किया गया है।

●●●

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी
  भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी
  फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्मःशा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

इस वर्ष आत्मोद्धार में 20 दीक्षाएँ होना निश्चित

भव्यातिभव्य सामूहिक दीक्षा आत्मोद्धार के अंतर्गत 25 अप्रेल को निम्न दीक्षाएँ सम्पन्न होंगी। स्थान पेपराल तीर्थ।

1). थराद (नारोली) निवासी मुमुक्षु श्री विश्वकुमार अश्विनभाई कोरडीया 15 वर्ष ।
2). थराद (लुणाल),निवासी मुमुक्षु श्री अक्षतकुमार समीरभाई सेठ 20 वर्ष ।
3). रिंगणोद निवासी मुमुक्षु श्री अभिषेकभाई नगीनजी हरण 28 वर्ष ।
4). थराद निवासी मुमुक्षु श्री अक्षितकुमार रोहितभाई संघवी 16 वर्ष ।
5). थराद निवासी मुमुक्षु श्री जयन्तिभाई नाथालाल संघवी 71 वर्ष ।
6). थराद (नारोली) निवासी मुमुक्षु श्री मौनकुमार पिंटुभाई कोरडीया 15 वर्ष ।
7). थीरपुर (लाखणी) निवासी मुमुक्षु श्री तीर्थकुमार अल्पेशभाई मोरखीया ।
8). थराद (नारोली) निवासी मुमुक्षु श्री स्तुतिकुमारी हसमुखभाई कोरडीया 26 वर्ष ।
9). थराद (भलासरा) निवासी मुमुक्षु श्री मानसीकुमारी भरतभाई वोहेरा 23 वर्ष ।
10). थराद निवासी मुमुक्षु श्री विरतिकुमारी चंद्रकान्तभाई वोहेरा 24 वर्ष ।
11). थराद (पेपराल) निवासी मुमुक्षुश्री आयुषीकुमारी जयेशभाई धरू 24 वर्ष ।
12). थीरपुर (मुम्बई) निवासी विरतिकुमारी प्रणेशभाई परिख 16 वर्ष ।
13). थीरपुर (लुणाल) निवासी मुमुक्षु श्री श्रुतिकुमारी विजयजी शेठ ।
14). थीरपुर (राजनगर) निवासी मुमुक्षु श्री तनिषाकुमारी भरतजी शेठ ।
15). थीरपुर (राजनगर) निवासी मुमुक्षु श्री हीरकुमारी नीतिनजी शेठ ।
16). थीरपुर (राजनगर) निवासी मुमुक्षु श्री आश्विकुमारी सुनीलजी वोहेरा ।
17). थीरपुर (सूरत) निवासी मुमुक्षु श्री प्रियांसी कुमारी अतुलजी मोरखिया ।
18). थीरपुर (राजनगर) निवासी मुमुक्षु श्री सुहानीकुमारी विरेन्द्रजी संघवी ।
19). थीरपुर (राजनगर) निवासी मुमुक्षु श्री आंसीकुमारी मनिषजी अदाणी ।

कवर 4 का शेष

आयोजन श्री छगनलालजी कुन्दनमलजी सकलेचा परिवार की ओर से 24 फरवरी से 28 फरवरी 2021 तक पंचान्हिका महोत्सव के रूप में आयोजित हुआ। महोत्सव में विभिन्न पूजाएँ हुईं । 25 फरवरी को आचार्यद्वय तथा श्रमण-श्रमणीवृन्द का भव्य नगर प्रवेश हुआ। जुलूस पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. के 39 वें पाटोत्सव पर गुणानुवाद सभा में परिवर्तित हो गया। इसी दिन श्री सुमतिनाथ जिनालय पर 44 वां वार्षिक ध्वजारोहण समारोह भी हुआ।

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/ 2021-23
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क-400/- (वर्ष-68, अंक-4) कुल पृष्ठ कवर सहित - 80

राजकुमारी, पायल, प्रिया ने सांसारिक वेश त्याग कर संयम जीवन हेतु प्रवज्या ग्रहण की

मीरपुर। गच्छाधिपति श्री नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणी भगवंत की मंगल निश्रा में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राज राजेन्द्र धाम मिरपुर तीर्थ में मुमुक्षु राजकुमारी चंडालिया की पावन प्रवज्या सुसम्पन्न हुई. नूतन साध्वीजीश्री का नाम साध्वीजी श्री करूणयसाश्रीजी म.सा. रखा गया।

तत्पश्चात् शा. डॉ. मोहनलालजी श्रीमती कमलादेवी नागोत्रा सोलंकी परिवार द्वारा नूतन उपाश्रय भवन का और प्रहलाद प्रमीला, जयंतीलालजी नीता, महेन्द्र, विणा, गजेन्द्र ललिता नागोत्रा सोलंकी परिवार सिरोही द्वारा निर्मित श्री वरजुबाई मिलापचंद मधुकर जैन भोजनशाला का उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

विजय महुर्त्त में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय में दादा का ध्वजारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पांथेड़ी। पांथेड़ी ग्राम की मुमुक्षु पायल सुपुत्री श्री नरपतराजजी बन्दामुथा ने विगत 3 फरवरी को समारोहपूर्वक सांसारिक जीवन त्याग कर भगवती दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा की संपूर्ण विधि धर्म दिवाकर गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. तथा जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में सम्पन्न हुई। दीक्षा त्रिज्या के पश्चात् नूतन साध्वीजी का नाम श्री समललताश्रीजी म. घोषित किया गया जिनकी पण्डाल में भारी जयजयकार हुई।

इस अवसर पर पंचान्हिका महोत्सव आयोजित किया गया। महोत्सव के चतुर्थ दिवस दीक्षार्थी का भव्य वरघोड़ा निकाला गया। पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन शा. गोकुलचंद प्रभाजी बन्दामुथा, शा. कानराजजी फूलचंदजी बन्दामुथा परिवार द्वारा किया गया।

पांथेड़ी ग्राम में प्रथम बार इस दीक्षा महोत्सव का आयोजन हुआ। इसमें भाग लेने के लिए निकटवर्ती ग्रामों तथा नगरों के गुरुभक्तों का आगमन हुआ।

मेंगलवा, मीरपुर, पांथेड़ी, में दीक्षोत्सव शान से सम्पन्न

मेंगलवा। यहाँ गच्छाधिपति जैनाचार्य धर्म दिवाकर श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. तथा जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में मुमुक्षु प्रिया का दीक्षा महोत्सव भारी उत्साह तथा धार्मिक वातावरण में सम्पन्न हुआ दीक्षा महोत्सव का

दीक्षा समारोह में नूतन साध्वीजी का नाम श्री माधुर्यलताश्रीजी घोषित किया गया समारोह में गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु से गुरुभक्त भारी संख्या में उपस्थित थे।

शेष पेज, कवर 3 पर

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001